



ब्राह्मण गोत्रावली

लेखक इन्द्रमणि पाठक पटखौली दक्षिण मनियर बलिया उ० प्र०

धार्मिक, ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र, टेक्निकल व इण्डस्ट्रियल पुस्तकों के प्रकाशक

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन: (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

प्रकाशक :

डी०पी०बी० पब्लिकेशन्स .

110, चावड़ी बाजार,

चौक बड़शाहबुल्ला (दिल्ली)

दिल्ली-110006

फोन: 23273220, 23251630

9811648916-17

मूल्य : Rs. 120/-

(एक सौ बीस रुपये मात्र)

संगीत की पुस्तकें (हिन्दी व अंग्रेजी में)

(।हन्दा	त्र अग्रजा म्	
• हारमोनियम सीखें	60/-	
• केसियो सीखें	75/	
• वॉयलिन वादन कोर्स	60/-	
• तबला वादन कोर्स	60/-	
• सितार वादन कोर्स	60/-	
• बांसुरी वादन कोर्स	60/-	
• गिटार वादन कोर्स	60/-	
• हिट गानों का स्वरिलिप संग्रह	120/-	
• हिट भजनों का स्वरिलिप संग्रह	120/-	
• हिट गज़लों की स्वरलिपियां	120/-	
• Learn How to Play Violin	100/-	
• Learn How to Play Casio	100/-	
• Learn How to Play Sitar	100/-	
Guitar Chords	120/-	
• Learn How to Play		
Harmonium	100/-	8
• Learn How to Play Tabla	100/-	

हमारी टेक्नीकल, इण्डस्ट्रीयल व जनरल पुस्तकें

	• इलेक्ट्रोनिक थ्योरी व प्रेक्टिकर	न 300/-
	• स्कूटर, मोटर साइकिल	
	रिपेयर	100/-
	• रेफ्रीजिरेशन सर्विसिंग	200/-
	• एअरकंडीशन सर्विसिंग	150/-
	• बेसिक इलेक्ट्रिकल	
	इंजिनियरिंग	200/-
	• जनरेटर्स सर्विसिंग	100/-
	• इलेक्ट्रिकल पैनल बोर्ड	
4	(विद् सर्किट डायाग्राम)	240/-
ı	• इलेक्ट्रिकल मोटर वाइन्डिंग	
1	विद् वाइन्डिंग डाटा	150/-
1	• कटिंग एण्ड टेलरिंग कोर्स	
	(होम एण्ड कर्मिशयल)	150/-
l	• प्रैक्टिकल स्क्रीन प्रिंटिंग	150/-
	• हैण्ड बुक ऑन बॉयलर्स ऑपरेश	
	इंजीनियर्स (स्टीम बॉयलर)	225/-
100	• हैण्डबुक ऑन स्मॉल स्केल	220,
The second	इण्डस्ट्रीज	250/-
	• जड़ी-बूटी की खेती	350/-
	• धन्वन्तरि भारतीय जड़ी-बूटी	250/-
	• धन्वन्तरि आयुर्वेद निघण्टू	250/-
	• भृगु संहिता फलित प्रकाश	250/-
	• प्राचीन सामुद्रिक शास्त्र	2307-
	47 3131	500/-
•	• वृहद हस्तरेखा शास्त्र	
	हस्तरेखायें बोलती हैं -कीरो	120/-
	खाना बनाइए ''वेजीटेरियन''	120/-
	वच्चों के मनोहर नाम	75/-
	ऑटोमोबाइल इन्जीनियरिंग	50/-
	डीजल इंजन मेकैनिक	, 1
	जाजारा इजान मकानक	200/-

ब्राह्मण के विषय में स्मृतिकारों के विचार

ब्राह्मणस्यतुदेहोऽयं नोपभोगाय कल्पते। ब्राह्मण का शरीर भोग-विलास के लिए नहीं है।

वशिष्ठ स्मृति

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

इस देश में उत्पन्न ब्राह्मणों से पृथ्वी के सारे मनुष्य अपने-अपने आचरण की शिक्षा प्राप्त करें। मनुस्मृति

> येषां सदा वै श्रुतिपूर्ण कर्णाः। जितेन्द्रियाः प्राणिवधे निवृताः॥ प्रतिग्रहे संकुचिता गृहस्था--स्ते ब्राह्मणा स्तारियतुं समर्थाः॥

भगवान् कृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं कि हे राजा इन्द्रियजीत! अहिंसक तथा विद्वान् ब्राह्मण गृहस्थ होते हुए भी दूसरों को तारने में समर्थ होते हैं।

ब्राह्मण की पहचान

ब्राह्मण सो जो ब्रह्म पिछाने, बाहर जाता भीतर आनै। पांचों बस करि झूठ न भाखै, आतम विद्या पढ़े पढ़ावे॥ परमातम में ध्यान लगावै, काम, क्रोध, मद, लोभ न होई चरणदास कहै बाभन सोई॥

(2)

ब्राह्मणः साधवो शान्ता निस्संगा भूत वत्सलाः। एकान्ताः भक्ता अस्मासु निरवैरः समदर्शिनः॥

भगवान् शिव मार्कण्डेयजी से कहते हैं कि ब्राह्मण स्वभाव से ही शान्तचित्त, परोपकारी और अनाशक्त होते हैं। वे समदर्शी होते हैं, दुखी व्यक्तियों को सुखी बनाने के लिए सतत्, प्रयत्नशील रहते हैं तथा हमारे अनन्य भक्त होते हैं।

ब्राह्मण के 15 लक्षण

विभिन्न शास्त्रों में ब्राह्मण के 15 लक्षण उल्लिखित हैं-

- 1. मन से पाप (बुरे कर्मों) का चिन्तन न करना।
- 2. इन्द्रियों को बुरे आचरण से दूर रखना।
- 3. जितेन्द्रिय रहकर धर्मानुष्ठान करना।
- 4. सुख, दु:ख, निन्दा, स्तुति आदि द्वन्द्वों से तटस्थ रहना।

- 5. कोमल स्वभाव
- 6. निरिभमानता
- 7. सरलता
- 8. ईश्वर बोध
- 9. धर्म बोध
- 10. विद्या
- 11. पुनर्जन्म का सिद्धान्त मानना
- 12. तप
- 13. अपने से बड़ों का सम्मान तथा अपने से छोटे के प्रति प्यार
- 14. सेवा धर्म में तत्पर रहना
- 15. समता (सभी मनुष्यों को अपने जैसा समझना)

गोस्वामी तुलसीदासजी कृत श्री रामचरितमानस

रामायण

सम्पूर्ण आठों काण्ड भाषा टीका सहित

सम्पूर्ण आठ काण्डों का वर्णन बहुत सरल एवं शुद्ध भाषा में इस महान् ग्रन्थ में किया गया है। जिसको पढ़कर पाठकगण लाभ प्राप्त कर सकते हैं तथा इस पवित्र ग्रन्थ को अपने घर में रखकर अपने घर को पवित्र बना सकते हैं।

Rs. 280/-

प्रकाशक

डी.पी.बी. पब्लिकशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन: (ऑ.) 23251630, (दु.) 23273220, (नि.) 23847320, (मो.) 9811648916 हमारे देश के पढ़े-लिखे ब्राह्मण युवकों को भी अपने गोत्र, वेद, उपवेद, शाखा-सूत्र आदि की

परी जानकारी नहीं है।

कुछ अति प्रगतिशील ब्राह्मण युवक तो नहीं, किन्तु अधिकांश ब्राह्मण युवकों में यह जिज्ञासा है कि गोत्र, प्रवर, शाखा, सूत्र क्या हैं ? इसकी परम्परा क्यों और कैसे पड़ी ? हमारे पूर्वज पहले कहां रहते थे ? या हम किस स्थान के मूलवासी हैं ? इत्यादि बातें जानने की कभी-कभी इच्छा उत्पन्न हो जाती है। उन जिज्ञासु ब्राह्मण युवकों की जिज्ञासा को तृप्त करने के लिए डी०पी०बी० पब्लिकेशन्स के प्रकाशक श्री अमित अग्रवालजी ने, ''ब्राह्मण गोत्रावली'' नाम से एक छोटी पुस्तक सरल एवं बोधगम्य भाषा में लिखने के लिए निवेदन किया।

पुराणकर्ताओं ने भारतवर्षीय ब्राह्मणों को विंध्योत्तरवासी और विंध्व दक्षिणवासी कहकर दो भागों में विभाजित कर दिया और उनका नाम गौड़ तथा द्रविड़ रखा। विंध्योत्तरवासी गौड़ और विंध्य दक्षिणवासी द्रविण। विभिन्न क्षेत्र विशेष में रहने के कारण दोनों के 5-5 भाग हो गये, जैसे-गौड़ ब्राह्मणों में —सरस्वती नदी के आसपास रहने वाले ब्राह्मण सारस्वत:, कन्नौज के आसपास के क्षेत्र में रहने वालों को कान्यकुब्ज, मिथिला में रहने वालों को मैथिल, अयोध्या के उत्तर सरयू नदी से पार रहने वाले सरयू पारीण, उड़ीसा में रहने वाले उत्कल तथा शेष भाग में रहने वाले गौड़ कहलाये।

इसी प्रकार द्रविण ब्राह्मणों को क्षेत्रीय आधार पर 5 भागों में विभक्त किया गया है, जैसे-कर्नाटक में रहने वाले कर्नाटक ब्राह्मण, आंध्रा में रहने वाले 'तैलंग ब्राह्मण', महाराष्ट्र में मराठी, गुजरात में रहने

वाले गुर्जर ब्राह्मण तथा शेष भाग में रहने वाले द्रविण कहलाते हैं।

इस लघु पुस्तिका में केवल विंध्योत्तर वासी ब्राह्मणों, जैसे-गौड़, सारस्वत, मैथिल, कान्यकुब्ज, सरयू पारीण तथा उत्कल ब्राह्मणों के गोत्र, प्रवर, शाखा, सूत्र, शिखा, छन्द, उपवेद, आस्पद (उपाधियां) तथा मूल गांवों का संक्षेप में वर्णन किया गया है।

आशा है, जिज्ञासु ब्राह्मण युवकों की जिज्ञासा कुछ हद तक शान्त होगी, किन्तु ब्राह्मणों का ऋषि गोत्र एक सागर के समान है। उसमें से कुछ मोती ही चुनकर इस पुस्तक में रखने का प्रयास किया गया

है।

कृपाल् पाठकों से निवेदन है कि यदि किसी कुल के गोत्र प्रवर आदि के निर्णय में विसंगतियां दिखायी दें, जो उनकी परम्पराओं के विरुद्ध हों, तो कृपया हमें सूचित करें, जिससे अगले संस्करण में सुधार किया जा सके। भवनिष्ठ

इन्द्रमणि पाठक ग्रा० पटखौली दक्षिण मनियर-बलिया उ० प्र०

अनुक्रम

1.	ॐ मंगल मूर्तेये नमः	7
2.	ब्राह्मण कर्म से होता है या जन्म सें	7
3.	ब्राह्मण और उनके भेद	11
4.	गौड़ ब्राह्मणों के क्षेत्र	13
5.	आदि-गौड़ की शाखाएं	14
6.	गौड़ ब्राह्मणों के गोत्र-उपगोत्र	15
7.	ऋषि गोत्रीय गांव	18
8.	सारस्वत ब्राह्मण	31
	सारस्वत कुलों की उपाधि आदि का वर्णन	32
9.	सारस्वत ब्राह्मणों के भेद	35
10.	सनाढ्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति	40
11.	मैथिल ब्राह्मणोत्पत्ति	45
12.	मैथिल ब्राह्मणों का व्रज में आगमन	50
13.	कान्यकुब्ज ब्राह्मणोत्पत्ति	79
14.	सरयू पारीण ब्राह्मणोत्पत्ति	99
1	सरयू पारीण ब्राह्मणों के भेद	99
	विभिन्न उपाधियों से सम्बोधित होने वाले गांव	100
	सरयू पारीण ब्राह्मणों के गोत्र प्रवरादि	101
	सरयू पारीण ब्राह्मणों की कुछ विशेषताएं	109
15.	शकद्वीपीय ब्राह्मण या शाकलद्वीपीय ब्राह्मण	111
	जांगिड़ और पंचाल ब्राह्मण	112

++

ॐ मंगल मूर्त्तेये नमः

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंधयते गिरिम्। यच्च कृपा तमऽहं वन्दे परमानन्द माधवम्॥

मनुस्मृति में मानव के लक्षण दिये हैं।

धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रिय निग्रहः। धी विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥

जिस व्यक्ति में धैर्य, क्षमा, इन्द्रियों का निग्रह करने की क्षमता, चोरी न करने की प्रेरणा, पवित्रता, काम, क्रोधादि षडिरपुओं का दमन करने की शक्ति, विद्या, सत्य भाषण और अक्रोध (क्रोध पर नियन्त्रण हो) वह मनुष्य है; और इन लक्षणों से युक्त मनुष्य जिस व्यक्ति को अपना गुरु मान ले, वह 'ब्राह्मण' है।

ब्राह्मण कर्म से होता है या जन्म से

प्राचीनकाल से यह विवादास्पद रहा है कि ब्राह्मण जन्म से होता है या कर्म से। जो लोग ब्राह्मण को कर्म से होना मानते हैं, उनके पक्ष में पुराणों का प्रबल प्रमाण है, जैसे—
तपस्या से ब्रह्मर्षि होने वाले ऋषियों की सूची

- 1. शृंगी ऋषि हिरनी के गर्भ से पैदा हुए थे।
- 2. कौशीक ऋषि कुश के गुच्छे से।
- 3. महर्षि वशिष्ठ वेश्या से।
- 4. गौतम ऋषि शशकी से।
- 5. वेदव्यासजी कुंवारी कन्या से।
- 6. पाराशरजी चाण्डाली से।
- 7. विश्वामित्र क्षत्राणी से।
- 8. नारदजी दासी से।
- 9. मातंग ऋषि हथिनी से पैदा हुए थे।

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्त्तण्ड)

ये ऋषिगण ब्राह्मण और ब्राह्मणी के रज वीर्य से नहीं पैदा हुए थे, किन्तु अपनी तपस्या से लोक में ब्रह्मर्षि कहलाये।

किन्तु विद्वानों का एक प्रबल पक्ष ऐसा भी है, जो ब्राह्मण होने के लिए ब्राह्मण कुल में जन्म को अनिवार्य मानता है। हमारे देश के ब्राह्मण परिवार और पूरा देश भी इस द्वितीय पक्ष को ही मान्यता देता है, जबिक उपरोक्त अधिकांश ऋषियों के गोत्र आज भी प्रचलित हैं, जिनकी कुलीनता पर किसी

की अंगुली नहीं उठ सकती। इन ऋषियों को भी जन्मना ब्राह्मण होना ही समाज ने मान लिया है। हमारा लक्ष्य भी निरर्थक उपरोक्त विवाद में जाने का नहीं है। वर्तमान में जो गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, सूत्र आदि प्रचलित हैं, उसे ही आम ब्राह्मण समुदाय की सेवा में प्रस्तुत करना है।

ब्राह्मण समाज का हर व्यक्ति किसी-न-किसी गोत्र से सम्बन्धित है। तो आइये, इन गोत्र, शाखा,

सूत्र आदि पर विचार करें।

गोत्र

किसी वंश के मूल व्यक्ति की वंश परम्परा जहां से प्रारम्भ होती है, उस वंश का गोत्र उसी के नाम से प्रचलित हो जाता है। सारा ब्राह्मण समाज किसी-न-किसी ऋषि की ही औलाद है। इस प्रकार जो समाज जिस ऋषि से प्रारम्भ हुआ है, वह ऋषि उस समाज का गोत्र कहलाता है।

जैसे महर्षि वशिष्ठ से जो वंश परम्परा चली, वे अपना गोत्र वशिष्ठ बतलाते हैं।

(2)

गोत्र का एक दूसरा भी अर्थ होता है—गो कहते हैं गाय को; 'त्र' कहते हैं, रक्षा करने को। पहले ऋषियों के आश्रमों में गायें होती थीं। उनकी रक्षा का पूरा भार उस आश्रम में रहने वाले विद्यार्थियों पर होता था। वे विद्यार्थी जहां कहीं जाते थे, वहां अपने को अपने गुरु या उस आश्रम के प्रमुख ऋषि के गोत्र का बतलाते थे। बाद में उनके वंशधरों में अपने को उसी गोत्र का बताने की परम्परा पड़ गयी।

यह विचारधारा संस्कृत के प्रख्यात विदेशी विद्वान् मैक्समूलर की है।

गोत्रों की उत्पत्ति सर्वप्रथम ब्राह्मण वर्ग में हुई। जब इस वर्ग का विस्तार हुआ, तो अपनी पहचान बनाने के लिए उन्होंने अपने आदि पुरुष के नाम पर गोत्र धारण कर लिये।

डॉ॰ पुरुषोत्तम लाल भार्गव का मत है कि आज के ब्राह्मणों का गोत्र वैदिककाल के सप्तर्षियों के वंशों या मूल गोत्रों से सम्बन्धित है। ये वंश थे—

आंगिरस, भार्गव, आत्रेय, काश्यप, विशष्ठ, अगस्त्य तथा कौशिक। इन गोत्रों के मूल ऋषि हैं—

अंगिरा, भृगु, अत्रि, कश्यप, वशिष्ठ, आगस्त्य और कुशिक।

प्रवर

गोत्रों का प्रवर से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए गोत्रों का प्रचलन होने के साथ-ही-साथ उनका प्रवर सम्बन्ध जोड़ दिया गया।

प्रवर का अर्थ होता है—''श्रेष्ठ''। प्रवर उन ऋषियों को कहते हैं, जो गोत्रकारों के पूर्वज और महान् थे।

गोत्र और प्रवर का अन्तर बताते हुए श्री पाण्डुरंग वामन शास्त्री कहते हैं कि गोत्र उन आर्वाचीन ऋषियों के नाम से हैं, जो परम्परा द्वारा किसी व्यक्ति या वंश के पूर्वज माने जाते हैं।

किन्तु डॉ॰ राजबली पाण्डेय का कथन है कि ''प्रवर शब्द उतना पुराना नहीं है, जितना गोत्र।'' यह कथन पुराणों और स्मृतियों से भी सिद्ध होता है, जैसे—असित देवल आदि कश्यप ऋषि के वंशज भी हैं और कश्यप गोत्र के प्रवर भी हैं। ब्राह्मण गोत्रावली

9

इस प्रकार गोत्र प्रवर्तक मूल ऋषि के बाद में होने वाले व्यक्तियों में जो महान् हो गये, वे उस गोत्र के 'प्रवर' कहे जाते हैं।

गण

जिन ऋषि परिवारों को विवाह के सन्दर्भ में एक इकाई मान लिया गया है, जिसमें वे विवाह नहीं कर सकते, वे सब एक गण माने जाते हैं। एक गण का व्यक्ति दूसरे गण में ही विवाह करेगा।

पक्ष

गण का ही विकसित रूप पक्ष है। इसके विस्तार से शाखाएं निर्मित होती हैं।

वेद

वेद अपौरुषेय है। ईश्वर की कृपा से ऋषियों के अन्त:करण में इसकी रचनाएं प्रकट हुई थीं। इनकी संख्या चार है। हर व्यक्ति के लिए चारों वेदों—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद—का सांगोपांग अध्ययन करना कठिन हो गया, तो गोत्र विशेष के ऋषियों ने किसी एक वेद के अध्ययन की परम्परा डाली; क्योंकि उस समय लेखन कला का आविष्कार नहीं हुआ था। इसलिए 'वेद' मन्त्रों को सुनकर ही पढ़ा या याद रखा जा सकता था।

उपवेद

प्रत्येक वेद का एक-एक उपवेद भी होता है। ये उपवेद व्यवहारिक हैं। इनसे मानव की सेवा करने का अवसर मिलता है। ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद, यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद, सामवेद का उपवेद गान्धर्व वेद और अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्य वेद है।

ये उपवेद जीविकोपार्जन में सहायक होते हैं।

शाखा

जब किसी एक गोत्र का व्यक्ति उस गोत्र के लिए निर्धारित 'वेद' का पूर्णरूपेण अध्ययन करने में असमर्थ होने लगा, तो ऋषियों ने वैदिक परम्परा को जीवित रखने के लिए शाखाओं का निर्माण किया। इस प्रकार प्रत्येक गोत्र के लिए अपने वेद की किसी शाखा विशेष का अध्ययन अनिवार्य कर दिया गया।

सूत्र

सूत्र शाखाओं से भी सूक्ष्म होते हैं। जब गोत्रानुयायियों के लिए शाखाएं भी भारी पड़ने लगीं, तो परवर्ती ऋषियों ने उन शाखाओं के भाव को सूत्र रूप में परिणित कर दिया। इस प्रकार प्रत्येक गोत्रावलम्बी को अपने सूत्र की जानकारी परमावश्यक है।

शिखा

अपनी पहचान बनाये रखने के लिए शिखा (चोटी) बायें और दायें से घुमाकर बांधने की परम्परा डाली गयी। किसी के गोत्र में दाहिने से गांठ लगाई जाती है और किसी में बायें से।

पाद

यह भी अपनी परम्परा की पहचान बनाये रखने वाली एक विधि है। किसी गोत्र वाले पहले दाहिना पांव धोते हैं, तो किसी गोत्र की परम्परा है, बायां पांव धोने की।

देवता

प्रत्येक वेद या शाखा का पठन-पाठन करने वाले किसी खास देवता की आराधना करते हैं। वहीं उनका कुल देवता है।

छन्द

जिस गोत्र के लिए जो वेद पढ़ना अनिवार्य है, वह वेद जिस छन्द में गाया जाता है, वही उस गोत्र का छन्द होता है।

मूल स्थान

गोत्रकारों ने जिस मूल स्थान पर रहकर अपना वंश चलाया, वह उनका आदि स्थान या शासन कहलाता है।

दिशा या द्वार

यज्ञ मण्डप में अध्वर्यु जिस दिशा से प्रवेश करता है या जिस दिशा में बैठता है, वही उस गोत्र वाले की दिशा या द्वार होता है।

आस्पद

जिन नामों या स्थान के नाम से जिन वंशों की प्रसिद्धि होती है, उसे आस्पद कहा जाता है; जैसे— मामखोर के शुक्ल आदि।

ओ३म्

अथ सत्यार्थप्रकाशः

वेदादिविंविधसच्छास्त्रप्रमाणैः समन्वितः

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य-महर्षिदयानन्दसरस्वतीस्वामिविरचितः

(सर्वथा राजनियमे नियोजितः)

सजिल्द संस्करण Rs. 200/-

प्रकाशक

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑ.) 23251630, (द्.) 23273220, (नि.) 23847320, (मो.) 9811648916

बाह्मण और उनके भेद

शास्त्रों के अनुसार ब्रह्माजी ने एक मनुष्य की रचना की। उसको अपने मुख से उन्होंने 'ब्राह्मण' कहा। तब से यह मान लिया गया कि ब्राह्मण, ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुआ है।

उक्त ब्रह्मिष के दो पुत्र हुए। एक का नाम 'गौड़' और दूसरे का नाम 'द्रविण' रखा गया। गौड़ को विंध्य पर्वत के उत्तर का भू-भाग और द्रविड़ को विंध्याचल के दक्षिण का भू-भाग दिया गया। बाद में द्रविड़ के भी पांच पुत्र हुए और गौड़ के भी पांच पुत्र हुए। इस प्रकार इनकी संख्या दस हो गयी।

द्रविड़ के पुत्रों के नाम तैलंग, महाराष्ट्र, गुर्जर, द्राविड़ और कर्नाटिका रखे गये।

गौड़ के पुत्रों के नाम—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल रखे गये। आगे चलकर इनकी संख्या चौरासी हुई। इस समय एक सौ पन्द्रह है। यह संख्या इनके कुलों की है।

देवगुरु बृहस्पति विंध्योत्तर भाग में और दैत्य गुरु शुक्राचार्य विंध्य दक्षिण भाग, यानी द्रविड् क्षेत्र में रहने लगे।

उत्तर भारतीय ब्राह्मणों की विभिन्न उपाधियां

गुजरात में सरस्वती नदी के तट पर एक पाटल नामक नगर था। उसके राजा का नाम 'मूल' था। अपने राज्य के सिद्धिपुर क्षेत्र में उन्होंने एक यज्ञ का आयोजन किया। उनके गुरु ने उत्तर भारतीय विद्वान् ब्राह्मणों को देवता तुल्य बताकर उन्हें यज्ञ में आमन्त्रित करने की सलाह दी।

विंध्योत्तर भाग के ब्राह्मण आमन्त्रित हुए। वे अपने शिष्यों के साथ चल दिये, जिनकी संख्या

11011	
क्षेत्र	ब्राह्मणों की संख्या
प्रयाग क्षेत्र के च्यवन	
ऋषि आश्रम से	105
सरयू नदी किनारे से	100
कान्यकुब्ज देश से	200
काशी से	100
कुरुक्षेत्र से	179
तिरहुत से	132
नैमिसारण्य से	200
अन्य क्षेत्र से	78
	योग <u>1096</u>
×	

इस प्रकार यज्ञ में कुल एक हज़ार छियानवे ब्राह्मण पहुंचे।

राजा ने इनका बड़ा सम्मान किया और धन, रत्न, गाय, हाथी, घोड़े आदि देने चाहे, किन्तु ब्राह्मणों ने कहा, ''राजन्! हम तुम्हारे यज्ञ में शामिल होने के लिए तो आये ही थे, किन्तु हमारा मुख्य उद्देश्य सिद्धिपुर तीर्थ देखने का था। हमें हाथी व घोड़े से कोई प्रयोजन नहीं है। तुम इनसे प्रजा का पालन करो।''राजा बहुत प्रसन्न हुआ और वस्त्रादि से उनका सम्मान कर, उन्हें निम्नलिखित उपाधियां प्रदान कीं।

कर्म के अनुसार ब्राह्मणों की उपाधियां

कम के अनुसार ब्राह्मणा का उपाविषा					
	कार्य क्षेत्र	उपाधियां			
	जो अध्यापन का कार्य करते थे	उपाध्याय			
	जो ज्योतिषं का कार्य करते थे	जोशी			
	जो यज्ञ कराते थे	याज्ञिक			
	शासन में भागीदारी रखने वाले को	ठाकुर			
	तीनों वेदों का अध्ययन करने वाले को	त्रिवेदी			
	तीनों समय वेद पढ़ने वाले को	त्रिपाठी			
	दीक्षा देने वाले को	दीक्षित			
	शास्त्र पढ़ाने वाले को	पाण्डेय			
	सरकारी काम करने वाले की	महन्त :			
	उपजीविका करने वाले को	शुक्ल			
	दो वेदों का पाठ करने वाले को	द्विवेदी			
	चारों वेदों का पाठ करने वाले को	चतुर्वेदी			
	हवन करने वाले को	अग्निहोत्री			
	कई विषयों के ज्ञाता को	मिश्र-			
	स्वाध्यायी को	पाठक			

गौड़ ब्राह्मणों के क्षेत्र

गौड़ ब्राह्मण

गौड़ ब्राह्मण जिस भूखण्ड में रहते हैं, उसको गौड़ देश कहा जाता है। उसमें निम्नलिखित आते हैं— 1—दिल्ली, 2—सोनीपत, 3—करनाल, 4—कुरुक्षेत्र, 5—कैथल, 6—यमुनातट के क्षेत्र, 7—हस्तिनापुर, 8—मारवाड़, 9—झूनझूनू, 10—पुष्कर, 11—शेखावटी, 12—फतेहपुर, 13—मत्स्य, 14—विराट, 15—भिवानी आदि।

उपरोक्त स्थानों में गौड़ ब्राह्मणों के निवास के सन्दर्भ में ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड में एक कथा लिखी

हुई है-

हस्तिनापुर में महाराजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय राज्य करते थे। उन्होंने एक महायज्ञ किया। उसमें

1444 ऋषि-मृनि अपने शिष्यों के साथ सम्मिलित हुए थे।

अवभृथ स्नान के बाद राजा जनमेजय महर्षि वटेश्वर को बुलाकर दक्षिणा देने लगे। महर्षि ने राजा का प्रतिग्रह स्वीकार नहीं किया और उन्हें आशीर्वाद देकर जाने लगे। तब राजा ने पान के बीड़े में एक-एक ग्राम का दान पत्र लिखकर महर्षि के शिष्यों को दे दिया। शिष्यगण ने प्रसन्न होकर बीड़ा स्वीकार कर लिया। उन ऋषि-मुनियों को पानी पर स्थल-जैसे खड़ाऊं पहनकर चलने की सिद्धि थी।

उन लोगों ने जब नदी पार करने के लिए नदी में प्रवेश किया, तो उनके पांव डूबने लगे। तब उन्होंने विचार किया कि हमारी सिद्धि नष्ट कैसे हो गयी? वे अपने-अपने पान के बीड़े खोलकर देखने लगे, तो उसमें ग्राम दान का पत्र मिला। उन्हें लगा राजा का प्रतिग्रह लेने से सिद्धि नष्ट हो गयी। वे लौटकर राजा के पास आये और कहा, ''तुमने ऐसा क्यों किया?''

राजा ने बहुत अनुनय-विनय करके अत्यन्त नम्रतापूर्वक कहा, ''बिना दक्षिणा दिये यज्ञ सफल भी तो नहीं होता है, इसीलिए मैंने ऐसा किया।'' ऐसा कहकर सभी ब्राह्मणों को अपने यहां गौड़ देश

में रख लिया। तब से ये ब्राह्मण आदि-गौड़ कहलाये।

इनमें भोजन आचार की कमी है। ये बाजार तक का पक्का भोजन खा लेते हैं। छुआछूत का दोष कम मानते हैं। इनमें अधिकांश लोग शुक्ल यजुर्वेदी और माध्यन्दिन शाखा के हैं। सामवेदी भी हैं। गौड ब्राह्मणों के भेद

इस क्षेत्र में रहने वाले गौड़ ब्राह्मणों के दो भेद हैं-

1. देशवाली 2. पछादे

इनमें परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं होते। देशवासियों में मिश्र, तिवारी, पूठिया, चौमोहरिया, गौतम और दूबे आदि होते हैं।

आदि-गौड़ की शाखाएं

आदि-गौड़ ब्राह्मण वंश की 15 शाखाएं हैं।

- 1. माण्डव्य-ये माण्डव्य ऋषि के कुलोत्पन्न हैं। कहीं-कहीं इन्हें मालव्य भी कहते हैं।
- 2. लिम्भित—ये भी माण्डव्य गोत्रीय ही हैं, किन्तु लिम्भित नगर में बसने के कारण इन्हें लिम्भित कहते हैं।

3. माथुर-मथुरा में रहने वाले गौड़ माथुर कहलाते हैं।

- 4. सूर्यध्वज—सौरभेश्वर के पास सूर्य ऋषि का आश्रम था, उनके वंशजों को सूर्यध्वज कहते हैं।
 - 5. भट्टकेश्वर-भट्ट ऋषि के वंशधर भट्टकेश्वर कहलाते हैं।
 - 6. सुखसैन-हंस ऋषि के वंशधर सुखसैन कहलाते हैं।
 - 7. दालभ्य-दालभ्य ऋषि के वंशधर दालभ्य कहलाते हैं।
 - 8. सौरभ-ये सौरभ क्षेत्र में रहने से सौरभ गौड़ कहलाते हैं।
 - 9. वशिष्ठ-वशिष्ठ गोत्रीय वशिष्ठ कहलाते हैं।
- 10. नैगम—ये चित्रगुप्त के वंशज हैं। इस वंश में निगम नाम के प्रसिद्ध महात्मा हुए। इनके वंशज अपने को नैगम कहते हैं।
 - 11. गौतम-गौतम ऋषि के वंशज अपने को गौतम कहते हैं।
 - 12. हर्ष-सरयू के तट पर रहने वाले कुछ ब्राह्मण अपने को हर्ष गोत्रीय बताते हैं।
 - 13. गंगापुत्र-हर्ष गोत्रीय कुछ ब्राह्मण गंगातट वासी हो गये, ये अपने को गंगापुत्र कहने लगे।
- 14. हरियाणा गौड़—हारित ऋषि का आश्रम हरियाणा में था, उनके वंशज अपने को हरियाणा गौड़ कहते हैं।
- 15. वाल्मीकि गौड़ —आबूगढ़ के पास वाल्मीकिजी का आश्रम है। उनके मतानुयायी अपने को वाल्मीकि गौड़ कहते हैं।

गौड़ बाह्मणों के गोत्र-उपगोत्र

सम्पूर्ण गौड़ ब्राह्मण वंश के केवल 24 ऋषि गोत्र हैं। इन ऋषियों के वंश में महत्त्वपूर्ण ऋषि हुए, उनके नाम से भी गोत्र चल पड़े। उक्त ऋषि सन्तानों की संख्या, जिनके नाम से गोत्र प्रचलित हैं, 115 हैं।

ऋषि नामावली

क्र०सं	ऋषिनाम	क०मं०	ऋषिनाम
1.	अत्रि गोत्र	19.	शांकृत्य गोत्र
2.	भृगु गोत्र	20.	आप्लवान गोत्र
3.	आंगिरस गोत्र	21.	सौकालीन गोत्र
4.	मुद्गल गोत्र	22.	सोपायन गोत्र
5.	पातंजिल गोत्र	23.	गर्ग गोत्र
6.	कौशिक गोत्र	24.	सोपर्णि गोत्र
7.	मरीच गोत्र	25.	शाखा
8.	च्यवन गोत्र	26.	मैत्रेय गोत्र
9.	पुलह गोत्र	27.	पराशर गोत्र
10.	आष्टिषेण गोत्र	28.	अंगिरा गोत्र
11.	उत्पत्ति शाखा	29.	क्रतु गोत्र
12.	गौतम गोत्र	30.	अधमर्षण गोत्र
13.	वशिष्ठ और सन्तान	.31.	बुधायन गोत्र
	(क) पर वशिष्ठ गोत्र	32.	आष्टायन कौशिक गोत्र
	(ख) अपर वशिष्ठ गोत्र	33.	अग्निवेष भारद्वाज
	(ग) उत्तर विशष्ठ गोत्र	34.	कौडिन्य
	(घ) पूर्व वशिष्ठ गोत्र	35.	मित्रवरुण गोत्र
	(ङ) दिवा वशिष्ठ गोत्र	36.	कपिल गोत्र
14.	वात्स्यायन गोत्र	37.	शक्ति गोत्र
15.	बुधायन गोत्र	38.	पौलस्त्य गोत्र
16.	माध्यन्दिनी गोत्र	39.	दक्ष गोत्र
17.	अज गोत्र	40.	सांख्यायन कौशिक गोत्र
18.	वामदेव गोत्र	41.	जमदिग्न गोत्र
		15	

		क्र०सं०	ऋिवनाम
क्र०सं०	ऋषिनाम	74.	माण्डव्य गोत्र
42.	कृष्णात्रेय गोत्र	75.	अम्बरीष गोत्र
43.	भार्गव गोत्र	76.	उपलभ्य गोत्र
44.	हारीत गोत्र	77.	व्याघ्रपाद गोत्र
45.	धनंजय गोत्र	78.	जावाल गोत्र
46.	पाराशर गोत्र	79.	धौम्य गोत्र
47.	आत्रेय गोत्र	80.	यागवल्क्य गोत्र
48.	पुलस्त्य गोत्र	81.	और्व गोत्र
49.	भारद्वाज गोत्र	82.	दृढ़ गोत्र
50.	कुत्स गीत्र	83.	उद्वाह गोत्र
51.	शांडिल्य गोत्र	84.	रोहित गोत्र
52.	भरद्वाज गोत्र	85.	सुपर्ण गोत्र
53.	कौत्स गोत्र	86.	गालिब गोत्र
54.	कर्दम गोत्र	87.	वशिष्ठ गोत्र
55.	पाणिनि गोत्र	88.	मार्कण्डेय गोत्र
56.	वत्स गोत्र	89.	अनावृक गोत्र
57.	विश्वामित्र गोत्र	90.	आपस्तम्ब गोत्र
58.	अगस्त्य गोत्र	91.	उत्पत्ति शाखा
59.	कुश गोत्र	92.	यास्क गोत्र
60.	जमदिग्न कौशिक गोत्र	93.	वीतहव्य गोत्र
61.	कुशिक गोत्र	94.	वासुकि गोत्र
62.	देवराज गोत्र	95.	दालभ्य गोत्र
63.	धृत कौशिक गोत्र	96.	आयास्य गोत्र
64.	किंण्डव गोत्र	97.	लौंगाक्षि गोत्र
65.	कर्ण गोत्र	98.	चित्र गोत्र
66.	जातुकर्ण्य	99.	विष्णु गोत्र
67.	काश्यप गोत्र	100.	शौनक गोत्र
68.	गोभिल गोत्र	100.	पंचशाखा
69.	कश्यप गोत्र	101.	सावर्णि गोत्र
70.	सुनक गोत्र	103.	कात्यायन गोत्र
71.	शाखाएं	103.	कञ्चन गोत्र
72.	किल्पष गोत्र	105.	अलम्पायन गोत्र
73.	मन् गोत्र		

क्र०सं०		ऋषिनाम	क्र०सं	,	ऋषिनाम
106.	अव्यय गोत्र		111.	उपमन्यु गोत्र	
107.	विल्च गोत्र		112.	उतथ्य गोत्र	
108-	शांकल्य गोत्र		113.	आसुरि गोत्र	
109.	उद्दालक गोत्र		114.	अनूप गोत्र	
110.	जैमिनी गोत्र		115.	आश्वलायन र	गोत्र

कुल संख्या 108 है। इनकी छोटी-छोटी 7 शाखा और हुई हैं। कुल संख्या 115 है। नोट—यज्ञ में दूर-दूर से आये हुए विद्वान् ब्राह्मणों की संख्या 1444 थी। राजा जनमेजय ने सबको गांव देकर बसाया। ये गांव शासन कहे जाते हैं।

ओ३म्

ऋग्वेद

भाषा टीका

Rs. 1000/-

ओ३म्

यजुर्वेद

भाषा टीका

Rs. 350/-

ओ३म्

सामवेद

भाषा टीका

Rs. 350/-

ओ३प्

अथर्ववेद

भाषा टीका

Rs. 800/-

पूरा सैट (चारों भागों में) 2500/- रुपये मात्र

प्राप्ति स्थान

डी.पी.बी. पब्लिकशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑ.) 23251630, (तु.) 23273220, (नि.) 23847320, (मो.) 9811648916

ऋषि-गोत्रीय गांव

वशिष्ठ गोत्रीय गांव

1. गौड़पुरिया, 2. सत्य पुरिया, 3. पूजाचार्य, 4. शुक्लाचार्य, 5. वटवालिया, 6. शिरोहवाल, 7. ब्रह्मपुरिया, 8. स्यामपुरिया, 9. निर्वाणपदिया, 10. धर्मपालिया, 11. वृतपाल आचार्य, 12. झर्मरिया, 13. यज्ञपलिया, 14. वृद्धाचार्या, 15. विपुनगरिया, 16. जटिल प्रधान, 17. कमलपुरिया, 18. स्वामीपुरिया, 19. शान्तिपुरिया, 20. सत्यपालिया, 21. विश्वपालिया, 22. वेदधराव्यास, 23. धर्मोपदेशक, 24. झर्मरपुरिया, 25. वेदपुरिया, 26. कुरुक्षेत्रीया, 27. कनरवलिया, 28. गंगस्थलिया, 29. माधवप्रस्थिया, 30. विष्णुपुरिया, 31. गंगावासी, 32. पिंडारा, 33. व्याघ्रप्रस्थ्या, 34. कसूरिया, 35. उदयपुरिया, 36. विज्ञानिया, 37. चींकरा 38. हामुरिया, 39. गोरवाल, 40. बबरेवाल, 41. वसुंधरिया, 42. कांकरोलिया, 43. धरवालिया, 44. मुनिस्थलिया, 45. कस्थलिया, 46. कोषवाल, 47. झगड़ोलिया, 48. कुलतड़िया, 49. चूरवाल, 50. ज्ञानोपदेशक, 51. उद्गातास्वामी, 52. ब्रह्मक्षेत्रीया, 53. पुष्करिया, 54. हरिप्रस्थिया, 55. शिवप्रस्थिया, 56. शक्तिपुरिया, 57. प्रयागवासी, 58. दिलवालिये, 59. सफीदमियां, 60. कुशस्थलिया, 61. ईकड़ीवाल, 62. भोपवाल, 63. वगसरिया, 64. सीकरिया, 65. स्यमलपुरिया, 66. श्रीवाल, 67. बरोलिया, 68. अनवरिया, 69. तैतिल, 70. करवालिया, 71. कोटवाल डोहरवाल, 72. बुढ़ाड़िया, 73. बयालिया, 74. रोहीवाल, 75. वड़वरिया, 76. व्योमवाल, 77. अमरावितया, 78. खोलवाल, 79. श्रीवाल, 80. रातवाल, 81. श्रीनगरिया, 82. नागवाल, 83. बृद्धस्थलिया, 84. व्याघ्रस्थलिया, 85. सुरीरपुरिया, 86. घटाणिया, 87. पड़कलिया, 88. थपतड़िया, 89. काशीपुरिया, 90. कनरवलिया, 91. चन्द्रपुरिया, 92. शिलाकरा, 93. शुक्रप्रस्थिया, 94. कल्याणपुरिया, 95. मुरथिलया, 96. गणवारिया, 97. चुल्काड़िया, 98. व्यास, 99. हरवाल, 100. सारोलिया, 101. बहादुरगड़िया, 102. ब्रह्मक्षेत्री, 103. गौड़पुरिया, 104. कौख, 105. नरवाणिया, 106. राममठिया, 107. करनालिया, 108. पिड़तारिया, 109. पृथदिकया, 110. स्वर्णपाद, 111. प्रस्थिया निर्मला, 112. सातोरिया, 113. रिठालिया, 114. बल्लभगढ़िया, 115. मामडोलिया, 116. वशिष्ठ स्थलिया, 117. राईवाल, 118. प्रतापवाल, 119. करोलिया, 120. पाराशरप्रस्थिया, 121. थनेसरिया, 122. भटाणिया, 123. बुढ़ाड़िया, 124. मोल ाया, 125. हरसेलिया, 126. ऐलमवाल, 127. कुलताडिया, 128. मगरोलिया, 129. हरप्रसूथिया, 130. मुक्तपुरिया, 131. हरितवाल, 132. बंगड़हढ, 133. गिल्लाणि, 134. मिरालिया, 135. धमाणिया, 136. उग्रपुरिया, 137. कर्णपुरिया, 138. माथुरा, 139. गुलावटिया, 140: वेहरिया भट्टपुरिया, 141. मंकवाल, 142. कवाड़िया, 143. धोहरवाल, 144. अंगनिया, 145. श्रीधरा, 146. चीकर, 147. नीतिवाल, 148. पहरावरिया, 149. गन्धर्व, 150. उसरिया, 151. भसौलिया, 152. वरवालिया, 153. अरकवाल, 154. भड़कलिया, 155. दशावाल, 156. जसड़वाल रामपुरिया, 157. ज्वालापुरिया, 158. सारोलिया, 159. गंगोलिया, 160. नरपालिया, 161. नालोड़िया, 162. वारोठिया, 163. हर्ष नगरिया, 164. माधवपुरिया, 165. चूरोल्या, 166. महमिया, 167. गंगा तिटया, 169. भुटाड़िया, 169. किपस्थिलिया, 170. शुक्रस्थिलिया, 171. पाठयाण, 172. कृष्णपुरिया, 173. सोणपितया, 174. धनपितया, 175. नरेलिया, 176. परवती, 177. केड़ेलिया, 178. गौड़ग्रामिया, 179. पुष्किरिया, 180. इन्द्रपुरिया, 181. शोभाश्रमी, 182. नगरवाल, 183. चौराणिया, 184. पानीपितया, 185. केमाश्रमी, 186. गनविरया, 187. शिक्तपुरिया, 188. भोकिरिया, 189. धामाणिया, 190. शाकवान, 191. भागलपुरिया, 192. करनालिया, 193. इन्दोरिया, 194. नीदिया, 195. सिरसोलिया, 196. फटवाड़िया, 197. गौधड़िया, 198. शिवप्रस्थिया, 199. पूठिया, 200. नरहणा, 201. घमणिया, 202. ब्रह्मवेदिया, 203. धर्माश्रमी, 204. चांदीवाल, 205. चौढ़िड़िया।

शक्ति गोत्रीय गांव

1. ब्रह्माश्रमी, 2. व्यासीश्रमी, 3. वशिष्ठाश्रमी, 4. तपोलिया, 5. कपिलाश्रमी, 6. शुक्रस्थलिया, 7. शक्तिपुरिया, 8. रसाहरी, 9. दुवे, 10. गयावाल, 11. गौड्स्थली।

पाराशर गोत्रीय गांव

1. मुनिस्थिलिया, 2. इन्दोरिया, 3. बड़ोतिया, 4. पाविटया, 5. तिलपितया, 6. सिहोलिया, 7. मुशलट, 8. व्यासस्थली, 9. रघुपुरिया, 10. बुधवाल, 11. रसोदवाल, 12. नरेहड़वाल, 13. भोजपुरिया, 14. कड़ेलिया, 15. खेड़ीवाल, 16. फरीदावादिया, 17. पाराशरप्रस्थिया, 18. कुरुक्षेत्री, 19. श्यामतीर्थिया, 20. संगवाल, 21. खिरवाल, 22. दायवाल, 23. सोंतीपाड़े, 24. दुंदुवीवाल, 25. डसनिया, 26. जालोनिया।

पराशर गोत्रीय गांव

1. विष्णु स्थिलिया, 2. व्यासनगरिया, 3. उज्जैननगरिया, 4. धर्मप्रस्थिया, 5. पराशरप्रस्थिया, 6. चिरंजिया, 7. मूदइट, 8. करनालिया, 9. विशष्ठस्थिलिया, 10. श्रोत्रिय, 11. ब्रह्मनगरिया, 12. नरेशवाल, 13. हाईवाल, 14. ववणिया, 15. सोमप्रस्थिया, 16. समसेरिया, 17. होड़िलिया, 18.वयाल, 19. पंचोली, 20. शोभापुरिया, 21. बड़ोहितिया, 22. शुकपुरिया, 23. धारवाल, 24. दशालिया, 25. वेदवाल, 26. गुरुस्थली, 27. विचारप्रस्थया, 28. ववाड़िया, 29. असोधिया, 30. कटवालिया, 31. सूरजपुरिया, 32. सोमपानिया, 33. बल्लभगढ़िया।

अत्रि गोत्रीय गांव

1. अत्रिस्थिलिया, 2. गौड़पुरिया, 3. कोथिलिया, 4. दण्डपाड़ि, 5. नवलगिड़िया, 6. मोटालिया, 7. वड़ीवाल, 8. पवनाहरी, 9. ब्रह्मप्रस्थिया, 10. विश्वम्भरा, 11. धर्मपालिया, 12. मामडोलिया, 13. डिडवाडिया, 14. शुक्लप्रधान, 15. सोमपुरिया, 16. गोलवाल, 17. खेड़वाल, 18. जुलासिया, 19 सरधानिया, 20. दुर्गपाणि, 21. तपोधरा, 22. हिसारिया, 23. छपारिया, 24. परीक्षतगिड़िया, 25. करस्थिलिया, 26. धनोलिया, 27. कर्णयां, 28. कर्रडिया, 29. तुसामणिया, 30. परीक्षतगिड़िया, 31. फुलेरिया, 32. खेड़वाल, 33. ओसवाल, 34. तिवाड़िया, 35. किपस्थिलिया, 36. रामस्थिलिया,

37. कैथलिया।

आत्रेय गोत्रीय गांव

1. ऋतम्भरा, 2. आत्रस, 3. पातरस, 4. सत्यधरा, 5. अतरस, 6. भिक्षुकरा, 7. शिक्षिका, 8. उच्छला, 9. मुक्तनगरिया, 10. कंचनपुरिया, 11. अमृतपानिया।

कृष्णात्रि गोत्रीय गांव

1. खरड़वाल, 2. वड़ीवाल, 3. विप्रप्रस्थिया, 4. वसूड़वाल, 5. बबेरवाल, 6. ददरेडिया, 7. ब्रह्मवेदिया, 8. सामोदरा, 9. सिरसापत्तिनया, 10. पर्णसिया, 11. माधोपुरिया, 12. विजनोरिया, 13. रेबलिया, 14. करपालिया, 15. अतराणिया।

अंगिरा गोत्रीय गांव

1. गौड़पुरिया, 2. शिवस्थिलया, 3. धर्मपुरिया, 4. ब्रह्मस्थिलया, 5. पिन्डारिया, 6. पतिड़या, 7. चुल्हीवाल, 8. देवाचार्य, 9. देवप्रधान, 10. ऋषिस्थिलया, 11. वेदप्रधान, 12. वटुवाल, 13. मिश्रस्थिलया, 14. भद्रवाल, 15. देवगुरु, 16. वरदानिया।

आंगिरस गोत्रीय गांव

1. अंगिराश्रमी, 2. देवाश्रमी, 3. नरहारिया, 4. नेमवाल, 5. सप्तकुंभिया, 6. गुरुस्थिलिया, 7. यज्ञस्थिलिया, 8. डाभड़ा, 9. उपदेशिलया, 10. रामहूदिया, 11. हरिपुरिया, 12. सिरमेड़िया, 13. पानीपितया, 14. पिंडरा, 15. धनाडिया, 16. बृहस्पितप्रस्थिलिया, 17. थनेसिरया, 18. कल्याणनगरिया, 19. शुभ्रवाल।

कृष्णात्रेय गोत्रीय गांव

1. कैलवाल, 2. वड़वाल, 3. धरीनगरिया, 4. प्रथदिकया, 5. मोटिया, 6. कुशंधरा, 7. किठोरिया, 8. वीरपुरिया, 9. कलातिया।

भृगु गोत्रीय गांव

1. दैत्याचार्य, 2. कर्मप्रधान, 3. दीक्षित, 4. भींडा, 5. गयाथिलया, 6. वीरहठ, 7. दैत्यपाल, 8. अभिचारक, 9. नोरंडे, 10. मघपुरिया, 11. भट्टपुरिया, 12. नीतिपाल, 13. धनारिया, 14. बिबरिया, 15. ब्रह्माश्रमी।

भार्गव गोत्रीय गांव

1. भृगुस्थली, 2. च्यवनश्रमी, 3. च्यवनिया, 4. वगदोड़िया, 5. त्रवणिया, 6. बड़कलिया, 7. इन्द्रप्रस्थिया, 8. बगड़वाल, 9. कांचवाल, 10. चींकादनुगुरावा, 11. रामपुरिया।

पुलस्त्य गोत्रीय गांव 1: गोपालिया, 2. घोरतया, 3. तंतरिया, 4. तुण्डवाल, 5. महोदयपुरिया, 6. चन्दनपुरिया, 7. शिवाश्रमी, 8. मंत्रावाल, 9. लंकापुरिया, 10. सेंनिया, 11. पौलिया, 12. सांडलिया, 13. यंत्री, 14. सांवर्ण, 15. विजनोरिया।

पोलस्त्य गोत्रीय गांव

1. पर्णासिया, 2. विजयपुरिया, 3. मुनिप्रधान, 4. लंकपुरिया, 5. वारीवाल, 6. चाखल्याणि। पुलह गोत्रीय गांव

1. शंकरवाल, 2. शंकाहारी, 3. कर्मकरा, 4. सेतुवाल, 5. उच्छंधरा, 6. सिद्धिवाल, 7. पलवाल, 8. चोबेप्रधान, 9. जीवनवाल, 10. सांतिपुरिया, 11. पलवाल, 12. ब्रह्माणिया।

पुलह गोत्रीय गांव

- 1. पुलहाश्रमी, 2. चन्डीपूजक, 3. डामरिया, 4. कामरूपांडे, 5. धर्मक्षेत्री। **दक्ष गोत्रीय गांव**
- 1. दक्षपुरिया, 2. शिलहरी, 3. कनरवलिया, 4. योगस्थली, 5. जादूगरिया। मरीच गोत्रीय गांव
- मिरचू, २. शंखवाल, ३. निगमबोधिया, ४. वरोदिया, ५. अर्णपाड़िया, ६. अनूपनगरिया,
 निर्भयपादिया, ८. मरवाड़ा, ९. गरनाविटया, १०. छत्रवाल, ११. भूविलया।
 कृतु गोत्रीय गांव
- 1. ऋद्धिवाल, 2. दुर्वाहारी, 3. चुल्काड़िया, 4. मुनिपुरिया, 5. ढूसवाल, 6. कुरुक्षेत्री, 7. वत्सवाल, 8. थनेसरिया, 9. वरवाल, 10. सापुरिया, 11. ज्ञानस्थलिया।
- **भारद्वाज गोत्रीय गांव** 1. करनालिया, 2. पवांलिया, 3. प्रयागस्थलिया, 4. खेड़ीवाल, 5. नारनोलिया, 6. अड़ीचवाल,
- 7. डोहरवाल, 8. शंकरोड़िया, 9. खेलवाल, 10. सहलूदिया, 11. दुलीणहट, 12. हसनगड़िया,
- 13. मंडावरिया, 14. मैलूया, 15. बहूड़वाल, 16. कटवालिया, 17. टरवालिया, 18. कस्थलिया, 19. ललाणिया, 20. बिसरिकया, 21. गुरुलिया, 22. वरदोलिया, 23. सलमोरवरिया, 24. उपास्य,
- 25. उपरस, 26. झुंझदिया, 27. डोडरावता, 28. दांतोलिया, 29. अमटोला, 30. औदिड्या,
- 31. सांकला, 32. सांकोलिया, 33. कोटवाल, 34. गीझवाल, 35. भटाणिया, 36. ऊधराणि,
- 37. बबारिया, 38. निगमस्थिलिया, 39. खैरवाल, 40. नीदला, 41. सांणवाल, 42. अजमेरिया,
- 43. महरावणा, 44. डभोलिया, 45. वहलिया, 46. मठीरिया, 47. नवरंगिया, 48. विजोलिया,
- 49. विश्वामित्रस्थलिया, 50. खुर्जवाल, 51. स्वालकोरिया, 52. वकड्वाल, 53. दहेणिया,
- 54. विहड्वाल, 55. दीक्षितव्यास, 56. बाबिलया, 57. उटवाल, 58. सिंडोलिया, 59. न्यायतवाल,
- 60. डिगथलिया, 61. धीमरिया, 62. वोहरिया, 63. वलिमया, 64. मामडोलिया, 65. कोनोडिया,
- 66. रामपुरिया, 67. आभटोला, 68. समङ्वाल, 69. बुढ़ालिया, 70. जावाल, 71. दनकोरिया,
- 72. हरियाणिया, 73. लवानिया, 74. गढ़मुक्तेश्वरिया, 75. पल्हेड्या, 76. हस्तपुरिया, 77. सकरपुरिया,
- 78. सरधानिया, 79. बदरीपुरिया, 80. गेढ़ेलिया, 81. कायतवाल, 82. बधोतिया, 83. अधोपिया। अग्निवेष गोत्रीय गांव
- 1. दिगम्बरा, 2. मरुस्थलिया, 3. अग्निपाल, 4. लीलाणिया, 5. समाजरीतिया, 6. भिन्डोलिया, 7. अग्निवाल, 8. लढ़ोरिया, 9. गोकर्णिया, 10. वंशाविलया, 11. नोहरवाल, 12. सोंनलवाल,

13. बबेरवाल, 14. गंगोलिया, 15. धनस्थिलया, 16. धरोडिया, 17. मुराड़िया, 18. पाणानप्रस्थिया, 19. न्यायपुरिया, 20. ऋषिपुरिया, 21. मायापुरिया।

भरद्वाज गोत्रीय गांव

1. भातराणिया, 2. सोंथिया, 3. सरेया, 4. कथूरवाल, 5. वाघडालिया, 6. नाभूडिया, 7. नावालिया, 8. बगदोड़िया, 9. नरहणावाल, 10. पिल्हाट, 11. जाणोलिया, 12. अरिड्या, 13. अहमिया, 14. जारुयेवाल, 15. कंकरिया, 16. पाटडिया, 17. मुखाडिया, 18. त्रिगुणायत. 19. रोहितवावल, 20. वांवसणिया, 21. तिगड़ारिया, 22. तिवाड़िया, 23. मंड़ोलिया इन्द्रपस्थिया, 24. कोल्हूवाड़, 25. आप्टोलिया, 26. नूड़ीवाल, 27. बबेलिया, 28. नोंहरिया, 29. संभिलया, 30. इसावत, 31. गोरखवाल, 32. पावड़ा गड़ीलवाल, 33. महरावल, 34. पातडिया, 35. लाल्यारिया, 36. बबनालिया, 37. शिशानिया, 38. संमढ़वाल, 39. धरवाल, 40. शिलोठिया, 41. ग्रामड़ीवाल, 42. कोटड़िया, 43. रामगड़िया, 44. पपरोलिया, 45. निदाणिया, 46. मोईवाल, 47. कलोटिया, 48. गांणरवाल, 49. सेहीवाल, 50. ठरवाल. 51. सांकड़ोथिया, 52. अनूपवाल, 53. संगेलवाल, 54. अंगूठया, 55. सिरसापटनिया, 56. रिटोलिया, 57. कांकरोलिया, 58. चूड़ोदिया, 59. ढ़िचोलिया, 60. विरहड़वाल, 61. रणोलिया, 62. सेवालिया, 63. मुजेड़ऋवाल, 64. महरावरे, 65. वसाखिया, 66. कलातिया, 67. व्योहालिया, 68. सिन्नहितिया, 69. राजपुरिया, 70. वनप्रस्थिया, 71. मगरोलिया, 72. पशवाड़ा मोवाल, 73. लहड़रिया, 74. महरोलिया, 75. भषावाल, 76. कलोखरवाल, 77. ओलीनिया, 78. पोसरिया, 79. भवरिया, 80. शिशोलिया, 81. तिलोकडिया, 82. जैवाल्य, 83. ढ़ाचवाल, 84. सेखूपुरिया, 85. भगवानपुरिया, 86. यावड़े मुघरिया, 87. खेड़वाल, 88. पूठिया, 89. देवलिया, 90. सांतोरिया, 91. गोस्वामिया, 92. मुसकेसरिया, 93. पुरवाल, 94. पलोंडिया, 95. दोघटिया, 96. भोंडवाल, 97. वाकप्रस्थिया, 98. मोटावलीवाल, 99. चूलहटिया, 100. राईवाल, 101. शामलिया, 102. जींदराणि, 103. किलोकिडिया, 104. धरेड, 105. श्यामपुरिया, 106. खारवाल, 107. किस्तोलिया, 108. डवोधिया, 109. मरविड्या, 110. वयोरवाल, 111. हरियाणिया, 112. मेंडवाल, 113. गोधड़िया, 114. गीझवाल, 115. मल्हाणिया, 116. नीमराणिया, 117. पहाड़ीरसिया, 118. बुढ़ाड़िया, 119. पोरवाल, 120. तेहनगरिया, 121. खिड़वालिया, 122. पंडायाणि, 123. फटवाड़िया, 124. कसेरवाल, 125. चाकलाण, 126. ओवाल, 127. बांकनेरिया, 128. द्रोंणपुरिया, 129. दिलवाल, 130. वादवाल, 131. भीतेलिया, 132. दोहलिया, 133. गोरनिया, 134. लालपुरिया, 135. बटानिया, 136. बोधलिया, 137. संसारिया, 138. ढाच्योल्या, 139. अड़ीगवाल, 140. तोसावड़, 141. नीमरिया, 142. दुहे, 143. मैलूमिश्र, 144. सुजानिया, 145. हरसरणि, 146. मलकपुरिया, 147. यवलिया, 148. चौमिया, 149. भटयानिया, 150. काकनोरिया, 151. महरावरिया, 152. डोडरावत, 153. आमटोलिया, 154. बबेलिया गलीणं, 155. मवानिया, 156. उगडोलिया, 157. कोंशलिया, 158. ओदिया, 159. वामोलिया, 160. एखोंदिया, 161. नरथालिया, 162. महवने, 163. सारगपुरिया, 164. झगीरिया, 165. खैरवाल, 166. नावावाल, 167. गुलावटिया, 168. डसनवाल, 169. मोनिया. 170. कैरवाल, 171. वड़ेवाल, 172. वोहरिया, 173. सोंकरिया, 174. भटेलिया,

175. डुहरिया, 176. भैंआ, 177. कौख, 178. अमरथलिया, 179. शिरसोलिया, 180. लाढ़नू, 181. हावड़ीवाल।

कुश गोत्रीय गांव

1. महमिया, 2. चंदेलीवाल, 3. सफीदमिया, 4. परधानिया, 5. नीदिया, 6. कुशवाल, 7. टाकरिया, 8. नाथलागड़िया, 7. बीजपुरिया, 10. मेहरावल, 11. कोथिलया, 12. इन्द्रप्रस्थिया, 13. महोदिया, 14. घोलिया।

कुशिक गोत्रीय गांव

1. श्रीकरिया, 2. धरमपालिया, 3. अमरपुरिया, 4. सीकरिया, 5. फोकरिया, 6. दिवाच, 7. सत्यधरा, 8. घुड़वाल।

धृत कोशिक गोत्रीय गांव

1. ऋतुम्भरा, 2. तपोधरा, 3. सहोदरिया, 4. मिगड़ायत, 5. कामिया, 6. न्यानिया, 7. अग्नाणि, 8. हरिणांक्षिया, 9. बुढ़ानिया, 10. काशीपुरिया।

कौशिक गोत्रीय गांव

- 1. मढ़ोलिया, 2. कुरुक्षेत्री, 3. मंडोरवाल, 4. सूकरथिलया, 5. विभीषवाल, 6. फटवाड़िया, 7. मुंडेलिया, 8. विसकरिया, 9. दीयल, 10. पंचौली, 11. विजयचाणि, 12. कांकरिया, 13. नेतवाल,
- 14. भटांनिया, 15. टोकरवाल, 16. पल्लीवाल, 17. लाकड़े हरियाणिया, 18. इन्दोरिया, 19. बहरवाल,
- 20. सारल, 21. खदरिया, 22. उषराणि, 23. चन्द्रपुरिया, 24. नागलिया, 25. भटसाड़िया,
- 26. जोहणिया, 27. कंकरवाल, 28. ईगरवाल, 29. विश्वामित्रप्रस्थिया, 30. पल्हेड़िया, 31. मिरचे,
- 32. अज्ञाणिया, 33. झीमरिया, 34. बांकोिया, 35. कसूपुरिया, 36. फत्तहणिया, 37. डोहरवाल,
- 38. नेथलिया, 39. छारेया, 40. प्रतापवाल, 41. बसवाणिया, 42. जीवतवाल, 43. बड़विदिया,
- 44. रोहटवाल, 45. कविपालिया, 46. खिसणिया, 47. घसेणिया, 48. मुंडलाड़िया, 49. सिवाल,
- 50. साठिकया, 51. भोगलिया, 52. मालिचया, 53. धुलाड़िया, 54. सागवाल, 55. कुवादवाल,
- 56. भरटिया, 57. समालिया, 58. गोधड़िया, 59. कलोरिया, 60. चौणाणिया, 61. तिगरायत,
- 62. मढ़ावाल, 63. गोमितया, 64. सूर्यपुरिया, 65. हरथाणिया, 66. वामोलिया, 67. महेशराणि,
- 68. असोधिया, 69. कसेरिया, 70. हापुड़िया, 71. महरग, 72. गौड़वालिया, 73. चौराणिया,
- 74. अस्त्रेणिया, 75. विवाड़िया, 76. धरवाल, 77. मढ़ावाल, 78. भिवाड़िया, 79. प्रहरावरिया,
- 80. मैंदिया, 81. पिलखवाल, 82. डिडवाणिया, 83. कटेसरिया, 84. कड़खेरिया, 85. महरारा, 86. बेरीवाल, 87. भूमिवाल, 88. गोधड़िया, 89. मजाकवाल, 90. पिस्पोलिया, 91. मीरपुरिया,
- 92. लाटवाल, 93. लोधाड़िया, 94. पिलखवाल, 95. विजयवाड़, 96. तपस्विया, 97. कसनिया,
- 98. पटोधवाल, 99. पहरवाल, 100. बिजनोरिया, 101. लाहोरिया, 102. वरनेया, 103. झाड़ोलिया,
- 104. दिवाचिया, 105. कर्णवाल, 106. कलावड़िया निरहट।

अष्टायन कौशिक गोत्रीय गांव

1. थनेसरिया, 2. समालिया, 3. दशाहट, 4. सफीदिमया, 5. महरोलिया, 6. मंढ़ेलिया,

7. अष्टालिया, 8. वाधपतिया, 9. धमाणिया, 10. टंटपुरिया, 11. पहोवरिया, 12. जीदिया, 13. मरविड्या, 14. रुधसाङ्ग्रिया, 15. रामहदिया, 16. गढ़वालिया।

कुत्स गोत्रीय गांव

1. देवयज्ञिया, 2. कटारिया, 3. कुन्डेवाल, 4. अग्निहोत्रीया, 5. टराटिया, 6. धींगड़िया, 7. मंडारिया, 8. रगड़या।

कौत्म गोत्रीय गांव

1. अमरपुरिया, 2. भटाणिया, 3. पथरवाल, 4. सफीदिमया, 5. कंकरिया, 6. झगरहट, 7. लाटास्वामी, 8. नीदिया, 9. सकुलवाल, 10. ओडम्बरिया।

सांख्यायन गोत्रीय गांव

1. मिहरवाल, 2. कंकरवाल, 3. पुरवाल, 4. लोचवडाग, 5. मंगूरवाल, 6. मेरिटया, 7. टोहरीवाल, 8. सिरसवाल, 9. संख्यायन, 10. मुंडहालवाल, 11. त्रवड़ीवाल।

जमदग्नि गोत्रीय गांव

1. भदूरा, 2. कंकरवाल, 3. छारैया, 4. अजमेरिया, 5. सिंगवाल, 6. खंडवाल, 7. खेलनिया, 8. जोहरिया, 9. फल्गुवाल, 10. करारा, 11. महदीपुरिया।

वत्स गोत्रीय गांव

- 1. थमोड़िया, 2. झामरिया, 3. झाडोदिया, 4. कन्होरिया, 5. कांणोडिया, 6. सांडोलिया, 7. खरवाल, 8. रिटोलिया, 9. भोलाणि, 10. वेरवाल, 11. डाभड़ा, 12. कांकरिया, 13. धोलपुरिया,
- 14. कतेड़वाल, 15. जाड़ोतिया, 16. रिठालिया, 17. घाघसांणि, 18. विरेचना, 19. खेड़वाल,
- 20. खैरवाल, 21. टटोलिया, 22. सनोटिया, 23. बदलवाल, 24. निसविषय, 25. बुढ़ाड़िया,
- 26. लजवाड़िया, 27. त्रयणवाल, 28. ववेरवाल, 29. सांतोरिया, 30. किठोड़िया, 31. शिवपुरिया,
- 32. डिड़ोलिया, 33. नागरिया, 34. कड़ालिया, 35. गोरखपुरिया, 36. सूंड्याणि, 37. वगसरिया,
- 38. धड़ेल, 39. रूपवाल, 40. इन्द्रप्रस्थया, 41. समचाड़िया, 42. तिलोकड़िया, 43. हरवाणियां,
- 44. व्यासआश्रमी, 45. वदरवाल, 46. हरसवाल, 47. पतिड्या, 48. रिटोलिया, 49. कांड्रोदिया,
- 50. निमोठिया, 51. गढ़वालिया, 52. मामडोलिया, 53. ठाकराणि, 54. गरवालिया, 55. कामीवाल,
- 56. जानोलिया, 57. हरियाणिया, 58. इकनोलिया, 59. चौरवाल, 60. वारिकपुरिया, 61. त्रवड़ि या,
- 62. विजनहट, 63. मुनिस्थलिया, 64. वदरवाल भाष्यकरा, 65. पाठनिया, 66. देहरिया, 67. वहणालिया,
- 68. छपरोलिया, 69. कांणोलिया, 70. भटोलिया, 71. भटयाणिया, 72. भेंनवाल, 73. कनोखरिया,

74. नारनोलिया।

वत्सायन गोत्रीय गांव

1. व्यासाश्रमी, 2. शिवपुरिया, 3. भाष्यकरा, 4. मुनिस्थलिया, 5. मथुराणि। शाणिडल्य गोत्रीय गांव

1. ढ़ाचोला, 2. निग्रहवाल, 3. चुल्हीवाल, 4. ववरवाल, 5. शाण्डिल्य गोत्री शासन, 6. भट्टविलया, 7. हिसारिया, 8. डिडवाङ्या, 9. राजपुरिया, 10. रोहितवाल, 11. बुढ़ाङ्या, 12. पुरवाल,

- 13. रखोतिया, 14. मंगलोरिया, 15. चन्द्रपुरिया, 16. नीदवाल, 17. कारविया, 18. वाहड़े,
- 19. वाझड़े, 20. धर्मपुरिया, 21. भूमिवाल, 22. मन्त्रवाल, 23. डाभला, 24. राजवितया,
- 25. रेबलिया, 26. परतापुरिया, 27. बगड़ाट, 28. लजवाड़िया, 29. वंशवाल, 30. सहारनपुरिया, 31. खेकड़िया कलहोरिया।

मौदगल्य गोत्रीय गांव

1. कांकड़ोदिया, 2. बहादुरगड़िया, 3. मकड़ोलिया, 4. परधानिया, 5. थनेसरिया, 6. नैडाणिया, 7. पालिया, 8. सफीदिमिया, 9. गुराणिया, 10. रोहणिया, 11. हावड़िया, 12. काकराणि, 13. भूपितया, 14. विसरिवया, 15. श्यामपुरिया, 16. सिद्धिपुरिया, 17. रामपुरिया, 18. सेंनवाल, 19. दूणहट,

20. मवणिया, 21. सिखायण, 22. चरोलिया।

अगस्त्य गोत्रीय गांव

1. शुक्लपुरिया, 2. कुरुक्षेत्री, 3. म्याणिया, 4. विद्याधर, 5. तपोधरा, 6. तन्त्रवाल, 7. उंच्छला, 8. हरिभजिवाल, 9. जनपोषिया, 10. सागरवाल, 11. जोधपुरिया, 12. लंबोदरा, 13. वायुभिखया, 14. म्राजवाल, 15. सिंधुवाल।

जमदग्नि गोत्रीय गांव

- 1. जमदिग्न, 2. डाभड़ा, 3. पुरवाल, 4. जामिनिया, 5. स्थानप्रस्थिया, 6. गुसवाल, 7. रामपुरिया, 8. रतेलवाल, 9. परशुरामस्थिलया, 10. गुसवाल, 11. रामस्थिलया, 12. सनेमई, 13. अग्निपाल। अधमर्षण गोत्रीय गांव
 - शुक्लपुरिया, 2. सितावरिया, 3. धोलिया, 4. पपाध्ना, 5. अघमर्षण।
 विश्वामित्र गोत्रीय गांव

1. विश्वामित्रस्थिलया, 2. राजपुरिया, 3. भूधरा, 4. धुनुर्वाल, 5. रजोधरा, 6. शास्त्रधरा, 7. शंकरा, 8. रिसभरा, 9. तपोधरा।

हारीत गोत्रीय गांव

- 1. गरुणिया, 2. पुरवाल, 3. महमिया, 4. काणुड़िया, 5. गंगतिटता, 6. संभिलया, 7. चंभिलया, 8. चुआल, 9. व्यासस्थिलया, 10. जीदवाल, 11. चुवाल, 12. जैवाल, 13. भीमवाल, 14. दुर्बला, 15. खोलवाल, 16. चौहान, 17. वासटवाल, 18. घनोरवाल, 19. गुणगामिया, 20. रिटोलिया,
- 21. बड़ेवाल, 22. चौह्येवाल, 23. चौभाल, 24. रिमेलिया। कपिल गोत्रीय गांव

साख्यशास्त्रिया, 2. शुक्लपुरिया, 3. सढ़ोलिया, 4. किपलस्थिलिया, 5. सिंधुतिटया।
 दालभ्य गोत्रीय गांव

हरियाणिया, 2. मलापुरिया, 3. मकटवाल, 4. अरनाविलया, 5. कलापुरिया, 6. पूठिया,
 हरनवािलया, 8. गौड्स्थिलिया, 9. अमरपुरिया, 10. जलाशया, 11. अरनाविलया, 12. दिगम्बरिया।
 कश्यप गोत्रीय गांव

1. कल्याणपुरिया, 2. सत्यबोला, 3. योगपुरिया, 4. गढ़ेलिया, 5. शिलाकरिया, 6. महोधरा,

- ब्रह्मपुरिया, 8. आकरिया, 9. योगधरा, 10. अधोरिया, 11. स्वामीपुरिया, 12. डीडवाल, 13. वटाणिया, 14. ढे्रवाल, 15. बड़ोदिया, 16. घटवाल, 17. रोहितवाल, 18. लटानिया, 19. हमीरपुरिया, 20. जीवनवस, 21. इन्दोरिया, 22. अरण्डवाल, 23. प्रजावित्त, 24. उपाहणिया। सांकृत्य गोत्रीय गांव
 - 1. ब्रह्मक्षेत्रीया, 2. मथनपुरिया, 3. विदरवाल, 4. चुल्हीवाल, 5. मायापुरिया। काश्यप गोत्रीय गांव
- 1. नन्दग्रामिया, 2. धर्मक्षेत्री, 3. अघोरिया, 4. ज्वालापुरिया, 5. गुणग्रामिया, 6. हिसारिया, 7. गोंगाड़िया, 8. गिरिराजिया, 9. भरतपुरिया।

कण्डव गोत्रीय गांव

पाशोरिया, 2. धीरपुरिया, 3. तुसारिया, 4. पहासोरिया, 5. पातड़ा, 6. चुनकटिका,
 धरमपालिया, 8. यहोसोरिया, 9. भरोजेरिया, 10. लोकसरिया।

गौतम गोत्रीय गांव

- शिशुलिया, 2. सिसाड़िया, 3. बिजनोरिया, 4. नोडोलिया, 5. इन्दोरिया, 6. धनाड़िया,
 मांमडोलिया, 8. दोहलिया, 9. पटोधिया, 10. कबीरपुरिया, 11. सफीदिमया, 12. लजवाड़िया,
- 13. अग्निवाल, 14. डोहलिया, 15. बड़ोदिया, 16. बीकानेरिया, 17. गढ़ीवाल, 18. खेड़ीवाल,
- 19. वरवालिया, 20. वपनवाल, 21. तुमिरिया, 22. भोपवाल, 23. मगलोरिया, 24. सारविड्या,
- 25. भिलाड़िया, 26. बराहिया, 27. भालड़िया, 28. कुरुक्षेत्रिया, 29. नोताड़िया, 30. खड़वाल,
- 31. सुरोलिया, 32. रोहटिया, 33. चन्द्रपुरिया, 34. पत्रवाल, 35. ननेरिया, 36. दोहलिया,
- 37. मुन्डनवाल, 38. अभदवाल, 39. कलातिया, 40 नाभवाल।

मैत्रेय गोत्रीय गांव

1. मित्रवाल, 2. ब्रह्मस्थली कुठारिया, 3. वलेणिया, 4. वैरवाल, 5. किरवाल, 6. वहरवाल, 7. चहणिया, 8. मेरठिया, 9. भद्रकरा, 10. भयहरा।

गर्ग गोत्रीय गांव

1. गर्गाश्रमी, 2. विसाणिया, 3. वैद्यकिया, 4. मधुपुरिया, 5. योगवाल, 6. सांकमिया, 7. कृष्णपुरिया, 8. पालीवाल, 9. जोधपुरिया, 10. ऐवरिया, 11. ऐंचवाल, 12. वैणवाल, 13. टंडोलिया, 14. मधुपुरिया, 15. गोपिया, 16. निरालिया, 17. वसूरिमया, 18. झुपरिया।

कौडिन्य गोत्रीय गांव

1. महोदयपुरिया, 2. सूत्रधार, 3. अनन्तिनया, 4. थनेसरिया, 5. बुबाणीवाल, 6. मगलोरिया, 7. बोहणिया, 8. पेहावाल, 9. महमिया, 10. मढ़ीवाल, 11. पत्थरवाल, 12. जीदिया, 13. डाहरवाल, 14. भलोदिया, 15. सूत्रवाल, 16. पांचलीवाल, 17. डीरवाल, 18. डोरीवाल।

जैमिन गोत्रीय गांव

1. विठूरिया, 2. दृढ़वृत्तिया, 3. वसंडवाल, 4. धर्मपुरिया, 5. मीमासक।

सुवर्ण गोत्रीय गांव

- 1. गरुणस्थिलया, 2. ओचन्दवाल, 3. विष्णुस्थिलया, 4. संसारिया, 5. गढ़वाल। सौपर्ण गोत्रीय गांव
- 1. प्रभाकर, 2. नगरवाल, 3. जीदवाल, 4. गारडू 5. विषहरा। सावर्णि गोत्रीय गांव
- ज्योतिसिया, 2. पाटणिया, 3. जयपुरिया, 4. बगड्हट, 5. हरणिया, 6. जोधपुरिया।
 सुनक गोत्रीय गांव
- 1. मिश्रिकिया, 2. निभिषेक्षेत्रिया, 3. पुराणिया। . शोनक गोत्रीय गांव
- नेंमिसारिया, 2. कथकड़ा, 3. व्योहनिया, 4. टीडवाल, 5. वंशिया।
 शांकल्य गोत्रीय गांव
- 1. जनकपुरिया, 2. भंगवाल, 3. दुर्वेश, 4. गंगोलिया, 5. वंगवाल, 6. विगरवाल, 7. दुर्वेधर, 8. दुर्वला, 9. दोहटवाल, 10. दिलवाल। कात्यायन गोत्रीय गांव
- 1. मधुपुरिया, 2. मांदकोरिया, 3. कमलिया, 4. विमोलिया, 5. सोंनिया, 6. गलहलिया,
- मेरितया, 8. शिविकराणि, 9. बुढ़ाणिया, 10. ब्रिजवासिनया।
 आलम्पायन गोत्रीय गांव
 - रम्बा, २. थनेसरिया, ३. जटाधरा, ४. त्रविङ्या, ५. बुढ़ानिया, ६. कामिया, ७. पतिङ्या।
 गालिब गोत्रीय गांव
 - मूणीवाल, २. जेवनवाल, ३. काठा, ४. काछड़, ५. लोचिव, ६. वाबिलया।
 विल्च गोत्रीय गांव
 - तूधाधारी, 2. भीड़ा, 3. जीदिया, 4. व्याघ्रपदिया, 5. पर्वतिया, 6. मैढ़िया।
 विष्णु गोत्रीय गांव
 - वृद्धापन, 2. श्रीकरिया, 3. गौडवाल, 4. भेड़िया, 5. द्विजाड़िया, 6. कसेरवाल।
 उपलभ्य गोत्रीय गांव
- 1. सूत्रकारिया, 2. संखवाल, 3. उपलवाल, 4. कलाहरी, 5. भरटिया, 6. पटोलिया, 7. संडरवाल, 8. चिकित्सका।

अव्यय गोत्रीय गांव

1. चोंधराणिया, 2. सूरवाल, 3. भुवारिया, 4. जयवाल, 5. भूवाल। उपमन्यु गोत्रीय गांव

शुक्रस्थलिया, 2. किपस्थिलिया, 3. विश्वंभरा, 4. सांपला, 5. कोटिवाल, 6. जटाधिरया,
 शरिटला, 8. बुढ़ाड़िया, 9. सर्पस्थिलिया, 10. पाईवाल।

कल्पिष गोत्रीय गांव

- 1. लालपुरिया, 2. मरुस्थिलया, 3. रामगढ़िया, 4. भुजक्कड़ा, 5. चूरवाल। जावाल गोत्रीय गांव
- 1. सहारनपुरिया, 2. करवाटिया, 3. धोलिया, 4. मूसेपुरिया, 5. उठोलिया। कंचन गोत्रीय गांव
- 1. कंचनपुरिया, 2. सुनारिया, 3. सोमपुरिया, 4. कंचनगरिया, 5. गोरिखया, 6. चूरवाल, 7. श्यामपाड़िया, 8. मरुस्थिलया।

वामदेव गोत्रीय गांव

- 1. अम्बरीषस्थलिया, 2. राशिया, 3. वारिकपुरिया, 4. नायका, 5. विरजवा। अनावृक गोत्रीय गांव
- 1. पाविकया, 2. मनाणिया, 3. कराणिया, 4. चुल्काणिया, 5. शालवाल। सौपायन गोत्रीय गांव
- 1. लालसरेया, 2. कुलंधरा, 3. अजस्थिलया, 4. वोधड़ा, 5. भंगवाल। धोम्य गोत्रीय गांव
- 1. सहारनपुरिया, 2. गजपुरिया, 3. कमलगिरिया, 4. मुक्तनगरिया, 5. भीष्मस्थलिया, 6. ढ़ाड़वाल, 7. परीक्षतगड़िया।

दृढ़ गोत्रीय गांव

1. गुड़पुरिया, 2. हिसारिया, 3. धोरिजया, 4. दाढ़र्युच्यत, 5. द्रढ़ब्रतिया, 6. गुडपुरिया, 7. अर्नावटिका।

चित्र गोत्रीय गांव

- 1. चित्रमोड़ा, 2. शंकरवाल, 3. ग्रहकरा, 4. मोरवरिया, 5. चतेरिया। व्याघ्रपाद गोत्रीय गांव
- 1. वाघ्रपतिया, 2. बघेरिया, 3. अन्तरवेदिया, 4. क्सारिया, 5. जमनिया। वीतहन्ब्य गोत्रीय गांव
- 1. वंशरीवाल, 2. बीतरागिया, 3. बहुरागिया, 4. हव्यस्थलिया, 5. सत्रस्थलिया। मित्रावरूण गोत्रीय गांव
- 1. ब्रह्मपुरिया, 2. सर्पदिमया, 3. महोदिया, 4. सौतिया, 5. स्वर्गिया। अजगोत्र गोत्रीय गांव
- 1. अजमेरिया, 2. बड़ग्रामिया, 3. बगड़वाल, 4. अजमीढ़िया। अनावृक गोत्रीय गांव
- 1. बकस्थलिया, 2. शरभिया, 3. बकोदरा, 4. वीरासना, 5. शस्त्रधारिया। यज्ञवल्क्य गोत्रीय गांव
- 1. यज्ञपालस्थिया, 2. वणावाल, 3. मेहरवाल, 4. जनकस्थलिया, 5. महलवाल, 6. जीतिया, 7. निर्भया।

वासुक गोत्रीय गांव

- 1. धरवाल, 2. सर्पदमना, 3. चित्यावना, 4. बिहारिया, 5. उज्वलग्रामिया। पाणिन गोत्रीय गांव
- पाणिनप्रस्थिया, २. पाढ़िया, ३. पानीपितया, ४. सिढ़िया।
 माण्डव्य गोत्रीय गांव
- 1. पाठिकया, 2. गौधूमिया, 3. शूरपुरिया, 4. शरिटया, 5. तंडूलवाल। मार्कण्डेय गोत्रीय गांव
- 1. मार्कण्डेयस्थलिया, 2. झावड़ा, 3. तिरईया, 4. पोराणिकिया, 5. ओघड़िया। वौधायन गोत्रीय गांव
- वोधपुरिया, 2. धाविड्या, 3. महतािणया, 4. अधहरा, 5. पुष्पदन्ता।
 यास्क गोत्रीय गांव
- यशकरा, 2. पाकवाल, 3. ग्वालिया, 4. करिमया, 5. दुधवाल।
 माध्यन्दिनी गोत्रीय गांव
- मध्यान्दनी, 2. बाजसनईया, 3. शाखाधारी, 4. उज्वला, 5. घोखया।
 लौगाज्ञ गोत्रीय गांव
- 1. अन्नवाल, 2. भ्रमहरा, 3. कोटवाल, 4. कोंणापिया, 5. अक्षिपाल। कर्ण गोत्रीय गांव
- कुरुक्षेत्री, 2. कानपुरिया, 3. कलारिया, 4. करनालिया, 5. कर्णप्रस्थिया।
 कर्दम गोत्रीय गांव
- कर्दमस्थिलिया, 2. किपलाश्रमी, 3. झिंझिटिया, 4. सांख्यपाल, 5. गरपालिया।
 उतथ्य गोत्रीय गांव
- उतथ्यग्रामिया, 2. कौड़िया, 3. शकूरपुरिया, 4. विषहरिया।
 आपस्तम्ब गोत्रीय गांव
- श्रापस्थम्बिया, २. भटनिया, ३. जलतईया, ४. शिवकरा, ५. वनवासिया।
 गृत्समद गोत्रीय गांव
- 1. भिन्डपालिया, 2. करारा, 3. गमनिया, 4. मदनग्रसिया, 5. हुकारिया। आष्टिषेणा गोत्रीय गांव
- 1. अरिष्टहरा, 2. कर्णवाल, 3. धुरैया, 4. परपक्षिया। गोभिल गोत्रीय गांव
- गोभिया, 2. ओषधिवाल, 3. लाभवाल, 4. सुखकरा, 5. रोगहरा।
 अञ्चलायन गोत्रीय गांव
- 1. अश्वपुरिया, 2. शुभ्रस्थलिया, 3. घुड़सालिया, 4. कुंकड़िया।

च्यवन गोत्रीय गांव

- 1. च्यवनश्रमी, 2. कुन्डलिया, 3. कल्याणिया, 4. ढूसिया। और्व गोत्रीय गांव
- 1. लंबनिया, 2. स्वर्णप्रस्थिया, 3. मनाणिया, 4. तनमारा, 5. जंघपालिया। देवरात गोत्रीय गांव
- 1. देवपुरिया, 2. अमरिया, 3. छड़वाल, 4. सोमनगरिया, 5. दोसवाल, 6. भलवाल, 7. धूसरा, 8. कुन्डिया, 9. च्यवनिया, 10. भारगू।

धनंजय गोत्रीय गांव

- 1. धनपतिया, 2. शलाधरिया, 3. पानवाल, 4. द्रव्यवालिया, 5. व्यापारिया। **उद्दालक गोत्रीय गांव**
- 1. उदलपुरिया, 2. सुगंधिया, 3. गुणिया, 4. अष्टांगिया, 5. निरोधिया। पातंजली गोत्रीय गांव
- 1. भाष्यकरा, 2. योगधरा, 3. गुणिया, 4. अष्टांगिया, 5. निरोधिया। उद्घाह गोत्रीय गांव
- 1. गुणवाल, 2. करपाणिया, 3. पुष्यवाल, 4. घाटिया, 5. वाहकारिया। रोहित गोत्रीय गांव
- 1. धनपालिया, 2. यज्ञवाल, 3. शंखवाल, 4. गोपालिया, 5. रोहितवाल। अयास्य गोत्रीय गांव
- 1. शंखिया, 2. जूटिया, 3. अटोरिया, 4. लवणपुरिया, 5. घोरनादिया। सौ कालीन गोत्रीय गांव
- 1. अनंगपालिया, 2. न्यायवाल, 3. सकोलपुरिया, 4. अग्निहुतिया। आप्लावान गोत्रीय गांव
- 1. पापालिया, 2. शूरपुरिया, 3. आप्लश्रिषया, 4. जड़ीवाल, 5. करमेदिया। आसुरि गोत्रीय गांव
- 1. भलाणिया, 2. भलैया, 3. अभिचारिया, 4. पांचालिया। अनूप गोत्रीय गांव
- 1. अनूपनगरिया, 2. कुसुमपुरिया, 3. पारिसया, 4. गंगस्थलिया। जातूकण्यं गोत्रीय गांव
- 1. भापड़ोदिया, 2. इन्द्रप्रस्थिया, 3. कर्मपुरिया, 4. आदिनगरिया, 5. सोधिया, 6. वसोंदिया, 7. भीषमपुरिया, 8. धरनालिया, 9. सोंदिया, 10. कधरिया।

राजा जनमेजय ने जिस ऋषि को जो गांव दिया था, उस गांव में कालान्तर में उनके रिश्तेदार भी आकर बस गये, जिससे आज बहुत सारे गांव बहुगोत्रीय हो गये हैं।

सारस्वत ब्राह्मण

सारस्वत ब्राह्मणों की उत्पत्ति

विभिन्न पुराणों में सारस्वत ब्राह्मणों की उत्पत्ति की विविध कथाएं मिलती हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

(1)

महर्षि दधीचि का आश्रम सरस्वती नदी के तट पर था। उनकी पत्नी गर्भवती थी। एक दिन वह स्नान करने के लिए गयी। सरस्वती के तट पर उसे प्रसव पीड़ा हुई, वहीं पुत्र पैदा हो गया। महर्षि दधीचि ने उस बच्चे का नाम सारस्वत रखा।

(2)

महर्षि दुर्वासा ब्रह्मलोक गये थे। वहां उनके मुख से कोई अशुद्ध शब्द निकल गया। माता सरस्वती वहीं थीं। उन्हें हंसी आ गयी। महाक्रोधी दुर्वासा ने शाप दे दिया—जाओ मर्त्यलोक में मानुषी बनो। सरस्वती को जन्म लेना पड़ा और उनका विवाह महर्षि दधीचि के साथ हुआ। उनकी सन्तान सारस्वत कहलायी।

(3)

भगवान् राम लंका विजय करके लौट रहे थे। जब वे चित्रकूट के पास आये, तो हुनमानजी से कहा, ''हनुमानजी! मैंने ऐसा निश्चय किया था कि हिंगुला माता का दर्शन करके अयोध्या में पांव रखूंगा।'' हुनमानजी ने कहा, ''प्रभो! चलें, मां हिंगुला का दर्शन कर लिया जाये।'' भगवान् सदल बल चल दिये। रास्ते में एक साधु सोया हुआ मिला। हनुमानजी ने उसे जगाया। वह भगवान् राम को देखकर अति प्रसन्न हुआ, उनका स्वागत किया, दर्शन से अपने को धन्य मान लिया।

भगवान् राम ने उसका परिचय पूछा, उस सिद्ध सन्त ने भगवान् से कहा, "मैं साधु हूं, हिंगुला देवी

के आश्रम के पास हमारा भी आश्रम है। मैं बहुत दिन जगने के बाद यहां सोया था।"

भगवान् राम ने साधु से हिंगुला मां का दर्शन कराने का आग्रह किया।

साधु सभी को पहले अपने आश्रम में ले गया और भोजन के लिए निवेदन किया। भगवान् राम ने कहा, ''मैं बिना ब्राह्मणों को भोजन कराये और यथेष्ट दक्षिणा दिये भोजन नहीं करूंगा। इस गहन वन से ब्राह्मण चले गये हैं, उनका मिलना असम्भव है, इसलिए आज भोजन करूंगा ही नहीं।''

साधु ने कहा, ''प्रभो! मैं अभी ब्राह्मणों का दर्शन कराता हूं।'' इतने में भगवती सरस्वती वहां प्रकट हो गयीं। राम से कहने लगीं, ''हे राम! अपना इच्छित वर हमसे मांगो।'' राम ने कहा, ''मां! मैं ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहता हूं।'' देवी ने अपनी हथेली जमीन पर घिसी और वहां से अग्नि के समान तेजस्वी 1296 ब्राह्मण उत्पन्न हो गये।

वे ब्राह्मण सरस्वती से उत्पन्न होने के कारण सारस्वत कहलाये।

सारस्वत कुलों की उपाधि आदि का वर्णन

पंच जाति (अढ़ाई घर)

- कुमड़िये गोत्र—जमदिग्न, भार्गव, च्यवन, वत्स, आप्लवान, और्व, जामदग्न्य।
 वेद—यजुर्वेद
 उपास्यदेव—कुमार (कार्तिकेय)
- 2. झिंगड़ गोत्र—भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य, झंगड़।
- 3. जेतली-गौतम, वत्स्य, अंगिरस, ओसनस, जैत।
- तिक्खे—पराशर, विशष्ठ, शक्ति, तुत्सृ, पराशर।
- 5. मोहले-सोमस्तम्भ, काश्यप, अवत्सार, नैधुव, मुशल।

चार-घर

उपरोक्त कुमड़िये, जेतली, झिंगड़, तिक्खे और मोहले को चार घर भी कहते हैं। तीसरी श्रेणी

उपरोक्त ढाई घर या चार घर का ही नाम बदलकर तीसरी श्रेणी (उपरोक्त से कुछ न्यून कर दिया गया है) जैसे—

1. तुमड़िये (कुमड़िये)

2. पेतली (जेटली)

3. पिंगड़ (झिंगड़)

4. पिक्खे (तिक्खे)

5. वोहले (मोहले)

उपरोक्त ढाई कुल ब्राह्मणों की उत्पत्ति कुमड़िये

ये भृगुवंशीय महर्षि जमदिग्न के वंशज हैं। इनके इष्ट देवता कुमार कार्तिकेय हैं। इसलिए इनको 'कुमारोपासक' या 'कुमारीय' कहा जाने लगा। यही 'कुमारीय' शब्द विकृत होकर 'कुमिड़िये' हो गया।

इनका गोत्र-वतस्य है।

महर्षि बौधायन ने इनके 5 प्रवर लिखे हैं-

1. भार्गव 2. च्यवन 3. आप्लवान 4. और्व 5. जामदग्न्य

वेद—शुक्ल यजुर्वेद, शाखा—माध्यन्दिनी, उपवेद—धनुर्वेद और सूत्र—कात्यायन है। जेतली

महर्षि अंगिरा के 3 पुत्र हुए-1. उतथ्य, 2. बृहस्पति, 3. संवर्त।

महर्षि उतथ्य का ही नाम उशिज भी है। इनकी स्त्री का नाम ममता था। इनके पुत्र प्रसिद्ध गौतम ऋषि हुए।

ये जेतली सारस्वत, गौतम वंशीय हैं। इनकी शाखा औशनस है। इनके उपास्य देवता नहील रुद्र हैं। मथुरा के गोकर्णेश्वर मन्दिर में इनकी मूर्ति है।

गोत्र-गौतम, वतस्य

प्रवर-अंगिरस, गौतम, औशनस

वेद-शुक्ल यजुर्वेद

शाखा-माध्यन्दिनीय

सूत्र-कात्यायन

देश-मधुपुरी के पास जैतलपुर

नदी-यमुना

वृक्ष-शमी (शमी को ही जैत कहते हैं, यह इनका कुल वृक्ष है।)

जैतलियों में श्री पुण्य पाल के तीन पुत्रों-1. चांडा, 2. कुल्ला, 3. रूपा से स्तम्भ चलते हैं।

झिंगण

अंगिरा ऋषि के द्वितीय पुत्र देव गुरु बृहस्पति के औरस पुत्र भारद्वाज के कुल में उत्पन्न हुए हैं, इसलिए इनका गोत्र भारद्वाज है।

गोत्र-भारद्वाज

प्रवर-अंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज

मेदिनी कोश में ''झ'' का प्रयोग बृहस्पति के लिए हुआ है। इसलिए 'झगण' भरद्वाज कहलाये। कालान्तर में यही 'झगण', 'झंगण' हो गया फिर 'झिंगण' हो गया।

वेद-शुक्ल यजुर्वेद

शाखा-माध्यन्दिनीय, उपवेद-धनुर्वेद

सूत्र-कात्यायन

कुलदेवी-भटियानी चण्डिका भवानी

देश—सारस्वत—इसी से इनका निकास मुलतान के आगे 'सतीदी' को भी लोग कहते हैं। इन झिंगण भरद्वाजों में बाबा पैड़ा के थंभे अत् पोत्रे, नत्थु पोत्रे और गौतम पोत्रे की तीन प्रधान

शाखा है।

गुंसाई, बाबे और व्यास की उपाधि से इन्हीं के तीनों थंभे प्रसिद्ध हैं।

तिक्खे

तिक्खे सारस्वत महर्षि वशिष्ठ के वंश में हैं। ऋग्वेद में इन वशिष्ठ वंशजों को तृत्सु कहा गया है। इस तृत्सु शब्द का ही अपभ्रंश त्रिक्खा या तिक्खा है।

गोत्र-पराशर

प्रवर-विशष्ठ, शक्ति, पराशर

वेद-यजुर्वेद

शाखा-माध्यन्दिनीय, उपवेद-धनुर्वेद

सूत्र-कात्यायन

शिखा-दक्षिण

मोहले

सारस्वतों की पंच जाति से किन्हीं कारणों से पम्बुओं को निष्कासित कर दिया गया था। सारस्वतों

के पंच जाति की पंचायत यह विचार करने के लिए बैठी कि इस पंच जाति में अब किसको शामिल किया जाये। इसी बीच छत से एक चूहा (मूषक) पंचायत में गिर गया। पंचायत ने इसको दैवी संकेत समझकर मोहलों को अपनी पंचायत में सिम्मिलित कर लिया; क्योंकि पंजाबी भाषा में 'चूहे' को 'मोहला' कहते हैं।

गोत्र—सोमस्तम्भ प्रवर—काश्यप, अवत्सार, नैधुव शाखा—माध्यन्दिनीय, वेद—यजुर्वेद सूत्र—कात्यायन ये दामध्यायण हैं। यह पूर्वी के पन हैं

ये द्रामुष्यायण हैं। यह पुत्री के पुत्र हैं। इनका गोत्र स्तम्भ या स्तम्ब हैं। मोहल्ले सारस्वतों की कुल देवी चण्डिका है और इनके यजमान शैगल क्षत्रिय प्रसिद्ध हैं।

धन्वनारि कृत

भारतीय जड़ी बूटियां

भारतीय प्राप्य एवं दुष्प्राप्य वनस्पतियों के अलौकिक गुणों एवं उनके सभी गुणों सिहत उपयोग पहचान, प्राप्ति स्थान आदि का दुर्लभ विवरण, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी है।

Rs. 250/-

प्राप्ति स्थान

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑ.) 23251630, (दु.) 23273220, (ति.) 23847320, (मो.) 9811648916

सारस्वत ब्राह्मणों के भेद

ये लोग उत्तरी भारत (पंजाब) में सर्वत्र पाये जाते हैं। ये सम्पूर्ण ब्राह्मणों में प्राचीन हैं। इनके दो भेद हैं—

1. वनजाई, वावनजाई, वामनजाई, वौंजाई

2. मोहाल

वामनजाई - यह शब्द संस्कृत के ब्राह्मण जयी शब्द से बिगड़कर बना है।

इस सन्दर्भ में एक इतिहास प्रसिद्ध है—सं॰ 1348 विक्रमी में अलाउद्दीन दिल्ली का शासक था। उस समय ब्राह्मण क्षत्रीय आदि उच्च जातियों में विधवा विवाह या पुनर्भू विवाह वर्जित था।

अलाउद्दीन ने राजाज्ञा प्रसारित किया कि ''ब्राह्मण क्षत्रीय तथा दूसरे उच्च वर्ण के लोगों को विधवा

विवाह करना पड़ेगा। जो नहीं करेगा, उसे दिण्डत किया जायेगा।"

इस आज्ञा का विरोध 52 क्षत्रियों के कुलों ने किया और विजयी हुए। तब से उन क्षत्रिय वंशों की ''बावनजई'' संज्ञा हुई। इसका विकृत रूप वावनजाई या वामनजाई या वनजाई है। खत्रियों में अब तक 'वौंजाई' शब्द प्रचलित है।

जिन सारस्वत ब्राह्मणों ने अपने यजमान क्षत्रियों के साथ मिलकर उक्त धर्म विरुद्ध आदेश को

अस्वीकार किया, वे ब्राह्मण जयी या वामनजई कहलाये।

ये खित्रयों के यहां पहले भी कच्ची रसोई खाते थे, अब भी खाते हैं। अलाउद्दीन के जमाने में सब एक साथ रहते थे, इसलिए दोनों कुलों का नाम वामनजई हो गया।

किन्तु बौंजाई का शुद्ध शब्द बाहुजई है, अर्थात् वे क्षत्रिय, जिन्होंने अपने बाहुबल से अलाउद्दीन

के धर्म विरुद्ध आदेश पर विजय प्राप्त की, वे 'वौजाई' खत्री कहलाये।

(1) कांगड़ा के सारस्वत ब्राह्मण (अन्य उत्तम श्रेणी)

. ,		10 Au (=117)
1. वग्गे	10. झिब्बर	19. वैद्य (वारी)
2. प्रभाकर	11. अर्ण	20. खेतुपोतरे
3. परदूल	12. धन	21. नेवले
4. श्यामपोतरे	13. धन्नपोतरे	22. लव
5. भटूरिये	14. मालिये	23. कालिये
 नदूरिय दत्त 	15. वाली	24. सिन्धुपोतरे
7. चूर्ण	16. सरदल	25. रावड़े
 भूज भोजेपोतरे 	17. शेतपाल	26. मुह्यल
	18. कपूरिये	27. प्रभाकर
9. कालिये	10. 11. 20. 1	

28. वदेपोतरे 29. चूनीवालंम्ब 30. मोहन लखनपाल 31. द्रवड़े 32. सर्वलिये मुहयल 33. वद्रेपोतरे 34. ऐरी 35. गैधर 36. पंढ़ित

37. पण्डित 38. वखतलाड़िली 39. (1) अष्ठवंश 40. पाठक

41. मन्नन

42. थामादासी 43. (2) संद

44. ठन्डे 45. भवी

46. पुश्रत 47. (3) पाठक

48. गड्रेपत्ती 49. भारद्वाजी

50. (4) कुरल

51. ढ़ोकच

52. चित्तचोर 53. काठपाल

54. (5) भरद्वाजी

55. छकडे

56. शारद

57. घोरके

58. (6) जोशी

59. अजपोत

60. पुषणि

61. (7) शोरी 62. सन्तरेपुन्नं

63. मनोत

64. सिन्धुपाल

65: (8) तोवाड़ी वन्द्

66. (9) मरुढ़

67. न्यासी

वामनजाई 'अन्य उत्तम श्रेणी'

1. अग्निहोत्री 2. अग्रफक्क

3. आचारन

4. अल

5. अंगल

6. आरी

7. ईसर 8. ईसराज

9. ऋषि

10. ऐरे

11. ओगे

12. कपाल

13. कुन्दि

14. कलन्द 15. कुसरिति

16. कपाले

17. कुण्ड

18. कण्डचारे

19. कलि

20. काई

21. पल्हण

22. कर्दम

23. करडम

24. कुसरित

25. किरार

26. कुतवाल

27. कुरुरपाल

28. कलस

29. कुच्छी

30. केजर 31. कोटपाल

32. कारडगे

33. काठपाल

34. खटवंश

35. खती

36. खोरे

37. खिन्दडिये

38. गंगाहर

39. गांदर

40. गांधे

41. गजेस्

42. गन्दे

43. गांधी

44. गुटरे

45. घोटके

46. चनन

47. चित्तचोर

48. चुनी

Millian				
49. थकपालिये		81. तिनूनी	114.	वाहोये
50. चन्भे		82. तल्लण	115.	ब्रह्मसुकुल
51. चितचोट		83. तोले	116.	वटूरे
52. चन्दन		84. तोते	117.	विजराये
53. चूड़ामन		6 5. तिनमणी	·*118-	विवढ़े
54. जालप		86. दंगवल	119.	बन्दू
55. चूनी	1.	87. तगाले	120	भाखरखोरे
56. चूखन		88. दगाले	121	भारखारी
57. छिब्बे	A PERSONAL PROPERTY.	89. तंगणवते		. भारद्वाजी
58. जालपोत		90. धायी		. भारधे
59. जोतशी		91. पारशर		. भिन्डे
60. जल्की		92. नाद		. भूत
61. जेठके		93. नाभ		. भणोत
62. जयचन्द		94. दवेसर		. भटरे
63. जोति		95. द्रुवारे		. भाजी
64. जलप		96. धम्मी		. भम्बी
65. जसक		97. पांघे		. भोग
66. डिडूडि		98. पंजन		. भागी
67. जठरे		99. पाल		. भटेर
68. जचरे		100. पुंज		. मज्जू
69. जचरे		101. पाधि	134	। मोहन
69. झमाण		102. पलतू	135	. मकावर
70. वेले		103. पुजे		. गन्दार
71. टाढ़		104. पट्टू		7. मरुद
72. टगले		105. परींजे	138	3. मसोदरे
73. टनिक		106. पंढ़े). मन्दहर
74. तिवाड़		107. पाड़े	140). मैत्र
75. डगले		108. पिपर		। मदरखम
76. डंगवाल		109. पन्च		2. मेडू
77. उन्डे		110. पठल्ल		3. मेहद
78. तिवाड़ी		111. पठरू		4. मच्छ
79. त्रिपाणों		112. पुच्छतन		5. महे
80. तेजपाल		113. ब्रह्मी	14	6. मुसतल

147. मण्डहर	164. लाहद	181. सहजपाल
148. मधरे	165. लुघ	182. सनखोतरे
149. यम्य	166. विनायक	183. सोयरी
150. रतनपाल	167. वासदेव	184. सणावल
151. रूपाल	168. वशिष्ठ	185. सैली
152. रनदेह	169. विरद	186. संगर
153. रति	170. व्यास	187. सांग
154. रमताल	171. वटेपोतरे	188. सुन्दर
155. रतनिये	172. विरार	189. सट्टीय या सेठी
156. रुथड़े	173. श्रीखर	190. हरद
157. रांगड़े	174. श्रीडट्ठे वासदेव	191. हांसिले
158. लखनपाल	175. शेतपाल	192. सधीर
159. लालिडये	176. शालवाहन	193. हरिये
160. लक्कड़फाड़	177. सीढ़ी	194. हरी
161. लालीबचे	178. संगद	195. हंसतीर
162. लुद्र	179. संधि	
163. लट्ट	180. सूरन	
0		

नोट—हुशियारपुर जिले में एक गांव है। लगभग 400 वर्ष पहले जुए में यह गांव जीता गया था। इसलिए इसका नाम ज्वार पड़ा। इस समय उस गांव का नाम रामट्टवाली है। इस गांव के सारस्वत ब्राह्मण ज्वार शतक वंश के कहलाते हैं।

ये लोग लाहौर, अमृतसर, गुरुदासपुर, बटाला, जालन्धर, मुलतान, लुधियाना, उच्च, झंग और शाहपुर में निवास करते हैं।

दत्तापुर, हुशियारपुर के सारस्वतों की उत्तम श्रेणी

1. खजूरिये 2. दुवे 3. डोंगरे, 4. पांघे, 5. घोहसनिये 6. खिदड़िये 7. ढ़ोलवालवैये 8. पाघेददिये 9. लखनपाल 10. सरमायी।

'दूसरी श्रेणी'

1. अल 2. कमाहटिये 3. कुटल्लेडिये 4. कालिये 5. गदोत्तरे 6. चपड़ोहिये 7. चिवमे 8. चंधियल 9. चिरणोल 10. छकोत्तर 11. जलरैये 12. जुआल 13. झुम्मुटियार 14. झौल 15. स्वाहिये 16. डोसे 17. ताक 18. ताड़ी 19. थानिक 20. दगड़ 21. दल्लोहिल्लिये 22. पटडू 23. पन्याल 24. पण्डित 25. वाधले 26. भरधियाल 27. भटोल 28. भसूल 29. भदोये 30. भटोहये 31. रजोहद 32. लाहद 33. लाठ 34. लई 35. वंटडे 36. शारद 37. समनोल 38. सेल 39. संड 40. ढ़प्पे 41. भगोतरे 42. वंभवाल 43. सपोलिये पांधे 44. केसर 45. दवे 46. मोहन 47. खजूरे 48. नाध 49. लव

- 50. छिळ्वर 51. वढ़याल 52. लट 53. वैद्य 54. वालिये 55. अम्बूआल पण्डित 56. प्रोहित 57. भटर
- 58. मकड़े 59. मुचले 60. मदोदे 61. मिश्र 62. मैते 63. मिरट 64. भुकाती 65. श्रीधर।

'मध्य श्रेणी'

1. अधोत्रे 2. पाराशर 3. मिश्र 4. सपनोत्रे 5. कटोत्रे 6. वड 7. मलोत्रे 8. सुधालिये 9. कश्मीरी 10. पण्डित वनालपाधे 11. रेणो 12. सुदालिये 13. केर्णिये 14. पण्डित 15. वनगोत्रे 16. ललोत्रे

17. पन्धोत्रे 18. डगोत्रे 19. भगोत्रे 20. विल्हानोच 21. महिते 22. भरेड 23. सतोत्रे 24. पुरोच।

'तृतीय श्रेणी'

1. उपाधे 2. गराडिये 3. धरिओच 4. भरंगोल 5. उदिहल 6. घोड़े 7. धमानिये 8. भलींच 9. उत्रियाल 10. धम्मे 11. नभोत्रे 12. भैंनखरे 13. कलंपरी 14. चरगांट 15. पटल 16. भूरिये 17. किरले 18. चन्दन 19. पिन्घड 20. भूत 21. कुन्दन 22. चकोत्रे 23. पृथ्वीपाल 24. मुण्डे 25. कीड़े 26. छछियाले 27. पलाधू 28. मरोधे 29. कमनिये 30. जलोत्रे 31. पंगे 32. मगडोल 33. कम्बो 34. जखोत्रे 35. फनकड़ 36. मनसोत्रे 37. कुडिदव्य 38. जरडवगनाछाल 39. मगदियालिये 40. कर्नाठिये 41. महीजिये 42. वसमोत्रे 43. माथर 44. कठियालू 45. जड 46. वरात 47. महीजिये 48. कानूनगो 49. जम्बे 50. षडकुलिये 51. मधोत्रे 52. कालिये 53. ऊनगोत्रे 54. वाल्ली 55. मखोत्र 56. कफनखो 57. झिन्घड 58. वनोत्रे 59. मच्छर 60. खरोत्रे 61. झल 62. ब्रहमिये 63. यन्त्रधारी 64. खगोत्रे 65. झावडू 66. वरगोत्रे 67. रजूलिये 68. खिदड़िये 69. पाधेझवाडू 70. वच्छल 71. रजूनिये 72. गौड़पुरोहित 73. ठकुरेपु 74. वाटियालिये 75. रतनपाल 76. मशोच 77. डडोरिच 78. यवनोत्रे 79. विसगोत्रे 80. मुहलिये 81. तिरपद 82. वहल 83. रेडाधिये 84. गुड्डे 85. यवनोत्रे 86. विसगोत्रे 87. लाढ्श्चन 88. गोकुलिये 89. थनमथ 90. वुधार 91. लम्बनपाल 92. गल्हन 93. दळ 94. बड़दोलवादो 95. गन्दरघाल 96. दुहल 97. भूरे 98. लभोत्रे 99. शशगोत्रे 100. सागड़े 101. सशेच 102. सेनहसन 103. सूदन 104. सुनचाल 105. सरमाई सुहण्डिये 106. सुक्ले 107. सिरखडिया 108. सुथड़े 109. सोल्हे 110. संगडोल 111. सलूर्ण 112. सिघाड 113. सागुडिये 114. साणद्दोच। 'कांगड़े के पहाड़ी सारस्वतों की प्रथम श्रेणी'

1. आचारिये 2. ओषदी 3. कसटु 4. दीक्षित 5. नाग 6. पण्डित 7. कश्मीरी 8. पंचकर्ण 9. मिश्र कश्मीरी 10. मिदहारी 11. राङ्णो 12. सोत्रि 13. वेदवे, चुणामणी।

'द्वितीय श्रेणी'

1. खजूरे 2. सुरबध 3. गलबढ़ 4. गुटरे 5. चिथू 6. चिलवाले 7. छुववन 8. डुमरे 9. डींगमार 10. डेहेड़ी 11. धामुड़ 12. पनयालू 13. पम्बर 14. पोतअड टोटरोटिये 15. पाधे सरोज 16. पाधेरबजूबू 17. पाधेमहिते 18. मनवाल 19. मगरूडिये 20. मैते 21. रक्खे 22. रम्बे 23. विष्टप्रोत।

सनाद्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति

भगवान् राम लंका विजय करके जब अयोध्या लौटे, तो विचार किया कि रावण एक विद्वान् और कुलीन ब्राह्मण था। उसकी हत्या से हमारे ऊपर 'ब्रह्म हत्या' का दोष जरूर लगा होगा, इसलिए ब्रह्म हत्या दोष निवारक यज्ञ कराना चाहिए। यह सोचकर देश के मूर्धन्य विद्वानों को आमन्त्रित किया गया और एक महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञान्त में भगवान् याज्ञिक ऋषियों को दक्षिणा में गौ, रल, धन आदि देने लगे, तो ब्राह्मणों ने प्रतिग्रह लेने से इनकार कर दिया। भगवान् राम ने ब्राह्मणों से बहुत अनुनय-विनय किया, किन्तु उन्होंने उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। इस पर भगवान् राम उदास हो गये। उनको उदास देखकर कुछ विद्वानों का चित्त द्रवित हो गया और उन्होंने प्रतिग्रह लेना स्वीकार कर लिया। यज्ञ में दान स्वीकार करने वाले ब्राह्मणों की संख्या 1001 थी। इनमें 251 कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और 750 अन्य कुलों के विद्वान् ब्राह्मण थे।

भगवान् राम ने प्रसन्नतापूर्वक उक्त ब्राह्मणों को गौ, रत्न तथा धनादि देकर सम्मान किया और कहा, ''आप लोगों ने धर्म की रक्षा की है, संसार में हमारी लाज रखी है, इसलिए मैं आप लोगों को विशेष सम्मान के साथ, 'सनाढ्य ब्राह्मण' की उपाधि से अलंकृत करता हूं। सनाढ्य ब्राह्मण वंश की कीर्ति चारों दिशाओं में प्रकाशित होगी।'' यह कहकर उन्हें 750 गांवों में बसाया, जो गंगा-यमुना के मैदानी भाग में स्थित हैं। साढ़े दस गांव 251 कान्यकुब्ज ब्राह्मणों को अयोध्या के दक्षिण भाग में दिये और उन्हें कान्यकुब्ज कहकर सम्मानित किया। सनाढ्य ब्राह्मणों का शादी सम्बन्ध सनाढ्यों में होते हैं। इसी प्रकार कान्यकुब्ज का भी शादी सम्बन्ध कान्यकुब्ज में ही होता है।

'सनाट्य ब्राह्मण वंश का क्षेत्र प्रवास'

श्रीरामचन्द्र ने अपने राज्य के अन्तर्गत 750 गांव, जो सनाढ्य ब्राह्मण वंश की संज्ञा देकर दान में दिये, वे गंगा-यमुना के मध्य क्षेत्र के आठ जिलों में इस वर्तमान युग में भी मौजूद हैं। ये हैं—1. मथुरा 2. एटा 3. अलीगढ़ 4. बुलन्दशहर 5. मेरठ 6. बदांयू 7. मैनपुरी 8. आगरा जिला आदि।

सनाढ्य ब्राह्मणों के गोत्रादि

सनाढ्यों के दस ऋषि गोत्र होते हैं तथा सात शाखा कुल 17 की संख्या है।

1. विशष्ठ 2. पाराशर 3. अगस्त 4. वत्स 5. शाण्डिल्य 6. भारद्वाज 7. कृष्णात्रेय 8. च्यवन 9. काश्यप 10. उपमन्यु। अन्य 7 शाखा भेद हैं। इसी प्रकार ऋषि गोत्र संख्या 17 हैं।

सनाट्य ब्राह्मणों की उपाधियां

1. शंखधार 2. मिश्र 3. त्रिवेदी 4. जोशी 5. पचौरी 6. पंडा या पंडया 7. चौबे 8. दीक्षित 9. त्रिपाठी 10. पुरोहित 11. दुबे 12. उपाध्याय।

सनाढ्य ब्राह्मणों के गोत्रादि

सं०	गोत्र	प्रवर	वेद	उपाधि	देव	वंश
.1.	वशिष्ठ	3	शुक्लयजुर्वेदी	तिवारी	गौरी	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
2.	भारद्वाज	3	शुक्लयजुर्वेदी	पाठक	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
3.	कश्यप	3	शुक्ल यजु०	मिश्र	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
4.	कात्यायन	3	शुक्ल यजु०	दीक्षित	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
5.	गौतम	5	सामवेद	रावत	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
6.	गार्ग्य	5	सामवेद	शर्मा	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
7.	कौशिक	5	सामवेद	शर्मा	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
8.	पाराशर	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
9.	विष्णुवृद्धि	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय ·	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
10.	कौडिन्य	3	शुक्लयजुर्वेदी	तिवारी	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
11.	कृष्णात्रेय	3	शुक्लयजुर्वेदी	मिश्र	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
12.	सांकृत	3	शुक्लयजुर्वेदी	दीक्षित	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
13.	उपमन्यु	3	सामवेद	मिश्र	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
14.	धनंजय -	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
15.	कुशिक	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
16.	वत्स	5	सामवेद	पाठक	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित
17.	ब्रह्म	3	शुक्लयजुर्वेदी	उपाध्याय	शिव	चन्द्र, सूर्य मिश्रित

सनाढ्य ब्राह्मणों के मूल ग्राम एवं वंश भेद

सं०	क्रीग्राम	सं०	कुरीग्राम.	सं०	कुरीग्राम	सं०	कुरीग्राम
1.	पचोरिया	12.	कंजोलिया	23.	बुधेलिया	34.	करैया
2.	वैदले	13.	पटसारिया	24.	सरहेया	35.	कर्तिया
3.	करसोलिया	14.	परवारिया	25.	जनू	36.	लहरिया
4.	दुगरोरिया	15.	वछगैजा	26.	रेहरिया	37.	अक्खे
5.	भिरथरे	16.	मुचोतिया	27.	आस्थेलिया	38.	सावर्ण
6.	कुमार	17.	भुसोरिया	28.	जरोलिया 💮	39.	रावत
7.	गिरदोलिया	18-	नरोलिया :	29.	उदेलिया	40.	भत्सना
8.	चुरारी	19.	कांकरोलिया	30.	मेरहा	41.	ठमेले
9.	गोवरेले	20.	दुगरोलिया	31.	अण्डोलिया	42.	उपाध्याय
10.	हरेले	21.	दुगोलिया	32.	टेहगरिया	43.	टांकु
11.	ठ मोले	22.	गांगरोलिया	33.	समरिया	44.	पांडे

7.4							
45.	चन्दू	78.	दन्डोतिया	111.	समाधिया	144.	घटोलिया
46.	जगनवंशी	79.	टैया	112.	करहेरिया	145.	नैजसिया
47.	वरनारिया	80.	भगोलिया	113.	सुक्ल	146.	घरवासिया .
48.	व्यास	81.	आधुनिया	114.	कतरैनिया	147.	विपर्या
49.	अवोले	82.	भगोसा	115.	महामोजी	148.	कीरतिया
50.	दोरियाकांकर	T 83.	धुरेले	116.	करोलिया	149.	नसोंचा
51.	बबेरवाल	84.	वेदसार	117.	करसोलिया	150.	चौथरिया
52.	राजोरिया	85.	जोमसी	118.	कोवादिया	151.	नगाइचा
53.	वदोले	86.	विवरीलिया	119.	उच्छित	152.	चौरासिया
54.	त्रिगुणाई	87.	रीलोवा	120.	कुकरेलिया	153.	नैनेरिया
55.	वैशंधरे	88.	विवरैया	121.	हुच्छिता	154.	चरोलिया
56.	उदेनिया	89.	आगरोवा	122.	केलारिया	155.	नोंनहरिया
57.	मेहरे	90.	कमईया	123.	उटगारिया	156.	चौवे
58.	सेठिया	91.	कानौरिया	124.	कुम्भवारिया	157.	विदाहारिया
59.	कुसवा	92.	कुसोलिया	125.	उचेनिया	158.	चरोरिया
60.	चौवे	93.	औरईया	126.	कांकोलिया	159.	कोईकेदीक्षित
61.	कर्मस्वाहा	94.	करोर	127.	हुचवारिया	160.	चन्द्रोठिया
62.	दीक्षित	95.	सेमरिया	128.	कामकर्या	161.	कोईके उघारिया
63.	गुवरेले	96.	कांकरा	129.	कमरिया	162.	चलैया
64.	मिश्र	97.	षटनावलि	130.	अरेलिया	163.	घेरिया
65.	पायक	98.	कुलवान	131.	वरवनिया	164.	चांदसोरिया
66.	कोतवाल	99.	सोंती	132.	होविया	165.	जमोलिया
67.	वरुण	100.	कुलवानी '	133.	औदगा	166.	स्यारहिया
68.	त्रिपाठी	101.	सावर्णिमा	134.	अगनैया	167.	तुटोतिया
69.	विनतेरे	102.	कपरैला	135.	नाहिला	168.	विवनगा
70.	पुरोहित	103.	साक्रोलिया	136.	सुरोतिया	169.	मुखरैया
71.	वालकोव्यास	104.	करनियां	137.	विनहेरिया	170.	चुंगला
72.	वरूआ	105.	'साजोलिया	138.	सुरोटिया	171.	महलोनिया
73.	पटोलिया	106.	कोई	139.	विवहेरी	172.	मरयो
74.	दुर्वार	107.	कहेनिया	140.	सूरजिया	173.	वेवारबाल
75.	हरेनिया	108.	काशिप	141.	नवग्रहेया	.174.	अवरैया
76.	ओरेय	109.	सहोनिया	142.	नामनिया	175.	निर्खिया
77.	डुगरिया	110.	धापक	143.	नवासिया	176.	कोईकेमुद्गल

177.	इन्द्रा	210.	वदेनिया	243.	तैहरिया	276.	हृदेनिया
178.	कोईकु मुड़ेनिये	211.	प्रगासिया	244.	आइया	277.	भटेले
179.	झासेनिया	212.	वसेटिया	245.	त्रिशूलिया	278.	दुगोलिया
180.	मुखैया	213.	खिड़पासिया	246.	चौंधिया	279.	नदनंगिया
181.	धारिया	214.	गिलोडिया	247.	रोरिवलिया	280-	धामोंटिया
182.	मुदरैया	215.	बुधोलिया	248.	षटकर्मिया	281.	तिहोनगुरिया
183.	रावत	216.	चनगीया	249.	झुरिवया	282.	डचेलिया
184.	सिसेंदिया	217.	दुबे (कृष्णात्रेय)	250.	देखईया .	283-	सैनवैया
185.	डुगरोलिया	218.	ओरगिरिया	251.	गारिया	284.	तामोलिया
186.	सिरोतिया	219.	श्रीयाधानिया	252.	पीचुनिया	285.	अतैया
187.	उ मोले	220.	बुधकैया	253.	परसैइया	286-	तैहुरिया
188.	वारोलिया	221.	गुणोचिया	254.	वदईया	287.	तिगुनाई
189.	वरनैया	222.	अवस्थी	255.	विरहरुपिया	288-	चटसालिया
190.	वरोलिया	223.	परवैया	256.	विरहेरिया	289.	तपरैया
191.	वरनैया	224.	हाऋषिया	257.	वुटोलिया	290.	रौरहिया
192.	उड़ोचिया	225.	भामेलिया	258.	गंगालिया	291.	साजोलिया
193.	भारिया	226.	दांता	259.	सहटामिया	292.	ठोठानिया
194.	तुरोलिया	227.	भारग्रामिया	260.	द्विधागुधनिया	293.	तैहरैया
195.	ढ़कारिया	228.	हर्रवैया	261.	खोईया	294.	ढ़ाढू
196.	उभैया	229.	दुसेठिया	262.	खेमरिया	295.	डुगवारा
197.	झगरिया	230.	भचोड़िया	263.	स्वाहरैया	296.	दीधरा
198.	ठझेलिया	231.	भिरहरिया	264.	डालवाडिया	297.	साजोलिया
199.	हेरिया	232.	धर्मध्वजिया	265.	पेखड़े	298.	राजगीया
200.	चलैया	233.	तिरवंतिया	266.	सुअसिया	299.	डुगवांणा
201.	चाहिया	234.	दुरवारा	267.	पैरवड़े त्रिवंग	300-	ठु ठिया
202.	इरवरिया	235.	लवानिया	268.	चिरंजिया	301.	तोहिया
203.	पिपरोलिया	236.	सतरंगिया	269.	बुधोलिया	302.	दुन्डिया
204.	निहारिया	237.	तलैया	270.	गुलपारिया	303.	डुगवारिया
205.	सवारिया	238.	तिहोनपालिया	271.	हरसानिया	304.	अष्टक
206.	हरिया	239.	तीखे	272.	पाथानिया	305.	स्नेहिया
207.	डीलवारिया	240.	विधिभेदिया	273.	वसैया	306.	नरहेरिया
208.	पंचगैया	241.	सुफलफलिया	274.	भेलेमिनिया	307.	आरोलिया
209.	गिरसैया	242.	रैवरा	275.	धनहेरिया	308.	मीतरोलया
							N. S. Co. 1977

							4 4
309.	भाईभेड़ी	342.	वहोलपालिया	375.	पंचगद्या	408.	गैहनैया
310.	रक्षपालिया	343.	विप्रिया	376.	संत्रगिया	409.	भमरेले
311.	थपईया	344.	दारवारिया	377.	नवेदिया	410.	हरदेनिया
312.	आदिया	345.	टंकारिया	378.	रत्तंगिया	411.	रघुनाथिया
313.	सतसैया	346.	दुवारक	379.	खुजोलिया	412.	झासेनिया
314.	मसेनिया	347.	दाछरा	380.	ससष्ठिया	413.	अड्वीया
315.	हरदोनिया	348.	छलीया	381.	पूर्वनिया	414.	गुलपारिया
316-	वालोठिया	349.	सारवीसीपुरिया	382.	गीलोठिया	415.	भारिया
317.	गुननाथी	350.	खरोटिया	383.	सौरैया	416.	शांडिया
318.	सुजसीथा	351.	ललीया	384.	बुधकैया	417.	ववेसिया
319.	गुड़िवया	352.	खरेरिया	385.	विरहेरूवका	418.	चीथे
320.	वीरिहेरिया	353.	हुचुगिरिया	386.	बुठोलिया	419.	उं ठोलिया
321.	गड़ेंविया	354.	ठाकोलिया	387.	वालोठिया	420.	चांदोरिया
322.	दुर्हारिया	355.	भमालिया	388.	दुनेनिया	421.	पिपरोलिया
323.	दौसता	356.	भटवालिया	389.	त्रादीया	422.	मुखरैया
324.	वसड़ा .	357.	सीहरा	390.	बुलोठिया	423.	शांडिल
325.	लावार	358.	नन्दवैया-	391.	सीरहठिया	424.	पुरहरिया
326-	खैमईया	359.	डेहरेवारे	392.	गुलपारिया	425.	थापाकिया "
327.	अरगया ं	360.	दुहार	393.	गिलोठिया	426.	गोले
328.	खोईया	361.	वाइसा	394.	वाचेडिया	427.	हथनीया
329.	नवनीया	362.	वरेखरहरिया	395.	षंडासिया	428.	कवैया
330.	मांगोलिया	363.	मधेसिया	396.	मुधोलिया	429.	वरोरिया
331.	गौरसैया	364.	गांठोलिया	397.	दुरसारिया	430.	तैहेलना
332.	गांगोलिया	365.	कीटमाया	398.	मानिया	431.	गठवारा
333.	विरहेरियका	366.	द्रारवेनिया	399.	सानसैया	432.	वाम्बरीया
334.	डीलेवारियका		हुरगरिया	400.	चिरंजिया	433.	चादोरिया
335.	वदैया	368.	वरवरोरिया	401.	थूनिया	434.	पपरोलिया
336.	दोषपिया	369.	धानेरिया	402.	असतानिया	435.	पुरहरिया
337.	सवारिया	370.	दुवोल्या	403.	चरनावलिया	436.	डडोचिया
338.	पिपरोलिया	371.	राठौठिया	404.	वैसीडिया	437.	गोहले
339.	निखरैया	372.	गंगुप्रिय	405.	हरसानियका		
340.	ब्रह्मेमैत्रिया	373.	तामोठिया	406.	मटंले		
341.	घुसेठिया	374.	निहोनगिरिया	407.	दोजेनिया		

मैथिल ब्राह्मणोत्पत्ति

कण्डकी नदी के किनारे पूर्व चाम्पारण्य के अन्त तक विदेह भूमि कही जाती है। इसे ही तिरहुत या मिथिला कहते हैं।

इक्ष्वाकु वंशीय राजा निमि

राजा निमि नैपाल (निमिपाल) के शासक थे। ये मोक्ष प्राप्ति के निमित्त एक यज्ञ कर रहे थे। यज्ञ पूर्ण होने से पूर्व ही उनकी मृत्यु हो गयी। यज्ञ में नियुक्त विद्वान् ब्राह्मणों को बड़ी चिन्ता हुई। यज्ञ समाप्ति के पूर्व ही यजमान का अन्त हो जाना यज्ञ में भयानक विघ्न है। इसलिए उन्होंने अपनी मन्त्र शक्ति से निमि के शव का मंथन करके एक अत्यन्त तेजस्वी पुरुष उत्पन्न किया। मंथन से उसका प्राकट्य हुआ था, इसलिए उसका नाम मिथि पड़ा। यज्ञ मण्डप में उत्पन्न हुआ, इसलिए उसका नाम जनक पड़ा। यज्ञ की विधिवत् पूर्णाहुति हुई और यज्ञ सम्पन्न हुआ।

जनक उदभट्ट विद्वान् एवं ब्रह्मज्ञानी थे। वे आत्मचिन्तन करते-करते, अपने शरीर का बोध भूल जाते थे, इसलिए लोग उनको विदेह कहते थे।

एक बार महाराज जनक ने विद्वानों की एक बहुत बड़ी सभा बुलायी। 100 अच्छी नस्ल की गायों के सिंग में सोना और खुर में चांदी मढ़वाकर उन्हें सभास्थल पर उपस्थित किया। सभा मण्डप में घोषणा की कि ''देश के मूर्धन्य विद्वान् महर्षि, आप महानुभावों का स्वागत। मेरी यह कामना है कि इस सभा में उपस्थित विद्वानों में जो सर्वश्रेष्ठ हो, वह स्वर्ण एवं रजत से विभूषित एक शत घटोघ्रि गायों को ले जाये।''

महर्षियों में थोड़ी देर के लिए स्तब्धता छा गयी। कुछ देर बाद महर्षि याज्ञवल्क्यजी ने अपने शिष्यों को गायों को ले चलने के लिए आदेश दिया। सारे महर्षिगण याज्ञवल्क्यजी को शास्त्रार्थ के लिए ललकारने लगे। शास्त्रार्थ हुआ, महर्षि याज्ञवल्क्य विजयी हुए।

राजा जनक ने महर्षि याज्ञवल्क्य के शिष्यों को नाना प्रकार के रत्न और धन के साथ ग्राम दान देकर अपने राज्य में बसा लिया। जितने भूखण्ड पर जनक का राज्य था, उसे मिथिला क्षेत्र कहते हैं। इस भूखण्ड पर बसने के कारण वे ब्राह्मण मैथिल ब्राह्मण कहलाये।

सम्पूर्ण भारत वर्ष में मात्र 28 ऋषि ही मूल गोत्र कर्त्ता हैं। इनमें से 15 ऋषि मैथिल ब्राह्मणों के गोत्र कर्त्ता हैं।

शाण्डिल्य, २. वत्स, ३. कश्यप, ४. पराशर, ५. भारद्वाज, ६. कात्यायन, ७. गौतम, ८. कौशिक,
 कृष्णात्रेय, १०. गार्ग्य, ११. विष्णुवृद्धि, १२. सावर्णि, १३. विशष्ठ, १४. कौण्डिन्य, १५. मौदगल।
 समस्त मैथिल ब्राह्मण वंश के ६ कुल भेद हैं—१. श्रोत्रिय, २. जोग्य, ३. पौंज, ४. गृहस्थ, ५. वंश,
 गरीब।

मैथिल ब्राह्मण वंश के छह आस्पद हैं-

1. झा, 2. पाठक, 3. ठाकुर, 4. मिश्र, 5. सिंह, 6. चौधरी।

100		1	7 7.	1		
मेशिल	ब्राह्मणों	क	गांत्रा	क	पवर	आात
414(1	आस्मना	~.		-11	21 -11	-1114

			Miles in the man in a series	- 10
क्र.	गोत्र	प्रवर सं०	नाम प्रवर	वेद
1.	शाण्डिल्य	त्रि प्रवर	शाण्डिल्य, असित, देवल	
2.	वत्स	पंच प्रवर	और्व, च्यवन, भार्गव, जमदिग्न, आप्लवान	सामवेद
3.	काश्यप	त्रि प्रवर	काश्यप, वत्स, नैधुव	सामवेद
4.	पाराशर	त्रि प्रवर	पाराशर, शक्ति, वसिष्ठ	सामवेद
5.	भारद्वाज	त्रि प्रवर	भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद
6.	कात्यायन	त्रि प्रवर	कात्यायन, विष्णु, अंगिरस	यजुर्वेद
7.	गौतम	त्रि प्रवर	अंगिरा, वसिष्ठ, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद
8.	कृष्णात्रेय	त्रि प्रवर	• कृष्णात्रेय, आप्लवान, सारस्वत	यजुर्वेद
9.	गार्ग्य	पंच प्रवर	गार्ग्य, धृतकौशिक, मांडव्य, अथर्व, वैशम्पायन	यजुर्वेद
10.	विष्णुवृद्धि	त्रि प्रवर	विष्णुवृद्धि, च्यवन, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद
11.	सावर्णि	पंच प्रवर	और्व, च्यवन, भार्गव, जमदग्नि, आप्लवान	यजुर्वेद
12.	कौशिक	त्रि प्रवर	कौशिक, अत्रि, जमदग्नि	सामवेद
13.	वसिष्ठ	त्रि प्रवर	वसिष्ठ, अत्रि, सांकृति	यजुर्वेद
14.	कौण्डिन्य	त्रि प्रवर	कौण्डिन्य, आस्तीक, कौशिक	यजुर्वेद
15.	मौदगल	त्रि प्रवर	मौदगल, अंगरिस, वार्हस्पत्य	यजुर्वेद

मैथिल ब्राह्मणों के मूल गांव को खेड़ा कहते हैं।

क्र॰सं॰	खेड़ा	ग्राम	तहसील	जिला
1.	अरौठिया	अरौठा	सादाबाद	मथुरा
2.	अकोसिया	, अकोस	सांदाबाद	मथुरा
3.	इसोदिया	इसोंदा	सादाबाद	मथुरा
4.	आरतीवार	आरती	सादाबाद	मथुरा
5.	उघईवार	ऊघई	सादाबाद	मथुरा
6.	कचनाडय	कचनऊ	सादाबाद	मथुरा
7.	खिमनोवार	खामिनी	मथुरा .	मथुरा
8.	गुपालियावार	गुपालिया	मांट	मथुरा
9.	गुडेरावार	गुडेरा	मांट	मथुरा
10.	. जारुयेवार	जारऊ	सादाबाद	मथुरा
11.	तेहरावार	तेहरा	मथुरा	मथुरा

12.	ककरौलिया	ककरौली	सादाबाद	поп
13.	दुनैटियावार	दुनेटिया	मांट	मथुरा
14.	घनौलिया	घनैली	सादाबाद	मथुरा
15.	विसाउलीवार	विसाउली	मांट	मथुरा
16.	वरामईवार	वरामई	सादाबाद	मथुरा मथुरा
17.	वरसानिया	वरसाना	छाता	
18.	वछरौलिया	वछगांव	मथुरा	मथुरा
19.	विलरइया	वरलई	मथुरा	मथुरा
20.	वामौलिया	वामौली	मथुरा	मथुरा
21.	विरौनावार	विरोना	सादाबाद	मथुरा मथुरा
22.	वरोंदिया	वरौदा	मथुरा	मथुरा
23.	वेलवनिया	वेलवन	. मथुरा	मथुरा
24.	भालईवार	भालई	मांट	मथुरा
25.	भाडीलवरिया	भाडीलवन	मांट	मथुरा
26.	महावनिया	महावन	सादाबाद	मथुरा
27.	मांगरौलिया	मांगरौली	छाता	मथुरा
28.	मुदावलीवार	मुदावली	छाता	मथुरा
29.	मांटवार	मांट	मांट	मथुरा
30.	रसगमावार	रसगमां	सादाबाद	मथुरा
31.	लोहवार	लोहवारी	छाता	मथुरा
32.	लोहवनिया	लोहवन	मांट	मथुरा
33.	सिहोरिया	सिहोरा	मांट	मथुरा
34.	सुसानिया	सुसाइन	सादाबाद	मथुरा
35.	सेकरीवार	सकराया	मथुरा	मथुरा
36.	सैपऊवार	सैपऊ	सादाबाद	मथुरा
37.	सोंनवार	सोन	मथुरा	मथुरा
38.	सेहीवार	सेही	छाता	मथुरा
39.	सतोहेवार	सतोहा	मथुरा	मथुरा
40.	हुसैनीवार	हुसैनी	छाता	. मथुरा
41.	हिन्डोलिया	हिन्डोल	मांट	ं मथुरा
42.	असौलिया	असैला	बाह	आगरा
43.	अगवारिया ,	अगवार	एत्यादपुर	आगरा
44.	उदसेया	उदैना	खेड़ागढ़	आगरा

45.	उदावलीवार	उदयकर	वाह	आगरा
46.	उसरमूला	ऊसर	फतेहाबाद	आगरा
47.	ककथरिया	ककथरा	किरावली	आगरा
48.	जखोदिया	जखोंदा	आगरा	आगरा
49.	पोपालिया	पलिया	फतेहाबाद	आगरा
50.	वमानिया	वमान	एत्यादपुर	आगरा
51.	विलौमिया	विलोंनी	फतेहाबाद	आगरा
52.	लोधईवार	लोधई	आगरा	आगरा
53.	लुहेटावार	लुहेटा	फतेहाबाद	आगरा
54.	सदरवनिया	सदरवन	आगरा	आगरा
55.	अगरईवार	अगराना	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
56.	उसयेवार	उसयौ (सासन)	हाथरस	अलीगढ़
57.	कसेरऊवार	कसेरु	खैर	अलीगढ़
58.	किसनपुरिया <u> </u>	किसनपुर	इगलास	अलीगढ़
59.	खामईवार	खैमगढ़ी	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
60.	गुरेटावार	गुरेटा	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
61.	टिकरीवार	टिकारी	हाथरस	अलीगढ़
62.	तुर्रावार	अतुरा	इगलास	अलीगढ़
63.	तुरसैनिया	तुरसैन	हाथरस	अलीगढ़
64.	पचौरीवार	पचौरा	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
65.	वरमानिया	वरमाना	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
66.	वकैनिया	वकाइन	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
67.	वांधनूवार	वांधनू	हाथरस	अलीगढ़
68.	विसावनिया	विसावन	कोल	अलीगढ़
69.	भवनखेरिया	भवनखेड़ा	कोल	अलीगढ़
70.	भेमोलिया	भमोली	अतरौली	अलीगढ़
71.	भगोसिया	भगोसा	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
72.	भदोईवार	भदरोई	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़
73.	रहनिया	रहना	हाथरस	अलीगढ़
74.	राइटवार	रायट	खैर	अलीगढ़
75.	सुनामईवार	सुनामई	कोल	अलीगढ़
76.	सिरोईवार	सिरोई	अतरौली	अलीगढ़
77.	हसोंनावार	हसोना	सिकन्दराराऊ	अलीगढ़

78.	चुरसैनिया	चुरसैन	हाथरस	अलीगढ़
79.	• अमरोहिया	आमोरा	शिकोहाबाद	मैनपुरी
80.	अर्सोधावार	असौधा	जसराना	मैनपुरी
81.	उदेसरिया	उदेसर	जसराना	मैनपुरी
82.	कोंडरीवार	कोंडरी	जसराना	मैनपुरी
83.	घुरुघुरावर	घाघर	जसराना	मैनपुरी
84.	पेंड़तिया	पेड़त	जसराना	मैनपुरी
85.	पाढ़यवार	पाढ़या े	जसराना	मैनपुरी
86.	पिलखुआ	पिलखुआ	जसराना	मैनपुरी
87.	विधौरवार	विधरई	जसराना	मैनपुरी
88.	वैजुआवार	वैजुआ	शिकोहाबाद	मैनपुरी
89.	भांडरीवार	भांडरी	जसराना	मैनपुरी
90.	राजौरिया	राजौर	शिकोहाबाद	मैनपुरी
91.	सूरवार	सुराया	जसराना	मैनपुरी
92.	जलेसरिया	जलेसर	जलेसर	एटा
93.	पहोड़िया	पहोड़	एटा	एटा
94.	पेसईवार	पेसई	एटा	एटा
95.	विसूदरिया	वसुन्दधरा	एटा	एटा
96.	वावसेवार	वावस	एटा	एटा
97.	वादौरिया	वदरिया	कासगंज	एटा
98.	वमनोइया	वमनोई	एटा	एटा
99.	महावरिया	महावर (सेवर)	कासगंज	एटा
100.	पालीवार	पाली	छाता	मथुरा
101.	विंसाउलीवार	विलारा	सादाबाद	मथुरा
102.	वरौलिया	वरौली	छाता	मथुरा
103.	प्राइटनौरिया			
104.	मानईवार			
105.	जनकपुरिया			
106.	तिरहुतिया			
107.	सौराष्ठिया			
108.	विलौचेवार			
109.	विलगइया			
110.	वांदरेवार			

मैथिल ब्राह्मणों का व्रज में आगमन

सन् 1381/82 में बंगाल और बिहार में गयासुद्दीन का शासन था। मिथिला के राजा का नाम हिरिसिंह था। महाराज हिरिसिंह विद्वान् और धार्मिक राजा थे। वे विद्वानों का सम्मान करते थे तथा ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में लगे ब्राह्मणों की वृत्ति की व्यवस्था भी राजदरबार से ही होती थी, जिससे मिथलाञ्चल विद्वानों का क्षेत्र समझा जाता था।

मिथिला पर गयासुद्दीन का हमला हो गया और महाराजा हरिसिंहजी पराजित हो गये। इन शान्तिप्रिय, ज्ञान-विज्ञान के शोध में लगे हुए विद्वानों को लगा कि यह मुसलमान बादशाह हम लोगों की जीविका—जो राज खजाने से चलती थी—तो बन्द ही कर देगा, धर्म पर भी हमला करेगा। इस भय से 9 गोत्रों के 75 मैथिल ब्राह्मण तीर्थ का बहाना करके व्रज क्षेत्र में भागकर आ गये और मथुरा जिला में राया के पास विसौली नामक गांव में बस गये।

फिर दुबारा 1556/57 में मिथिला के विद्वान् ब्राह्मण अकबर बादशाह के सुशासन और धर्मिनरपेक्षता से प्रभावित होकर व्रज के विभिन्न नगरों में आकर बस गये। इनमें धर्मशास्त्र, नीति शास्त्र, दर्शन, न्याय, व्याकरण, ज्योतिष, तन्त्र, संगीत आदि के उद्भट्ट विद्वान् थे। अकबर बादशाह बहुत पढ़ा-लिखा तो नहीं था, परन्तु विद्वानों का बहुत सम्मान करता था। वह हिन्दू-मुसलमानों में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं रखता था। हिन्दू देवी-देवताओं के आदर के साथ-साथ हिन्दू सन्त-महात्माओं का नित्य सत्संग भी करता था। उसके दरबार के निम्नलिखित विद्वान् नवरत्न के रूप में प्रसिद्ध हैं—

1. अब्दुल फलज (फैजी), 2. टोडरमल. 3. बीरबल, 4. तानसेन, 5. रघुनन्दन झा, 6. देवी मिश्र, 7. पुरुषोत्तम झा, 8. जीवनाथ झा और 9. शिवराम झा।

कहा जाता है कि एक बार अकबर बादशाह पटना में रुके हुए थे। उन्होंने पटना में धर्म सम्मेलन कराया, जिसमें मिथिलाञ्चल के विद्वानों ने खुलकर भाग लिया। उनमें से 3 विद्वानों को बादशाह ने पुरस्कृत किया और अपने साथ आगरा लाये। वे थे—1. पण्डित रघुनन्दन झा, 2. पण्डित जीवनाथ झा और 3. पण्डित शिवराम झा।

इन सब कारणों से मैथिल ब्राह्मण व्रज क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में बिखर गये। कालान्तर में वे अपनी सारी गरिमा को धीरे-धीरे भूल भी गये।

सन् 2002 में मिथिलाञ्चल के दो विद्वार् पं॰ देवचन्द्र मिश्र और पं॰ गोविन्द मिश्र सौराठ सभा पयोखरोनी, जिला मधुबनी राज दरभंगर ने व्रज क्षेत्र में अपने भूले-भटके बन्धुओं की खोज की। इस कार्य में जगद्गुरु श्री राधेश्याम शरण देवाचार्यजी महाराज (जिनका आश्रम मिथिला कुञ्ज वृन्दावन में है) के सहयोग से निम्नलिखित जनपदों एवं गावों के मैथिल ब्राह्मणों को पंजीकृत किया गया।

व्रज में रहने वाले मैथिल ब्राह्मणों के मूल गांव, गोत्र आदि का विवरण

	शाण्डिल्य गोत्र						
		(1)	वेद	-	सामवेद		
बीजी पुरुष	-	महेश झा	देवता	_	महालक्ष्मी		
मूलग्राम		महुए संग्राम	चरण	-	वामं		
ऋषि गोत्र	-	शाण्डिल्य	शिखा	_	वाम		
प्रवर	-	3	आस्पद	_	झा		
शाखा	-	कौथुमी			(4)		
सूत्र	-	गोभिल	बीजी पुरुष	_	श्यामदत्त झा		
वेद	-	सामवेद	मूलग्राम	-	पगुल बार		
देवता	_	महालक्ष्मी	ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य		
चरण	_	वाम	प्रवर		3 शाण्डिल्य, असित, देवल		
शिखा	_	वाम	शाखा	_	कौथुमी		
आस्पद	_	झा	सूत्र	-	गोभिल		
		(2)	वेद	_	सामवेद		
बीजी पुरुष	_	कमलापति झा	देवता	_	महालक्ष्मी		
मूलग्राम	_	सोन्दर पुरिये (सुन्दर)	चरण	_	वाम		
ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य	शिखा	-	वाम		
प्रवर	_	3 असित, देवल, शाण्डिल्य	आस्पद	_	झा		
शाखा	_	कौथुमी			(5)		
सूत्र	_	गोभिल	बीजी पुरुष	-	जानकी ठाकुर		
वेद		सामवेद	मूलग्राम	_			
देवता	_	महालक्ष्मी	ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य		
चरण	_	वाम	प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल		
शिखा	_	वाम	शाखा	_	. कौथुमी		
आस्पद	_	झा	सूत्र .	-	गोभिल		
		(3)	वेद	_	सामवेद		
बीजी पुरुष			देवता	_	महालक्ष्मी		
मलग्राम	_	सोंदर पुरिये-हंसोली	चरण	_	वाम		
ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य	शिखा	_	वाम		
प्रवर		3-शाण्डिल्य, असित, देवल		-	ठाकुर		
शाखा		कौथुमी			(6)		
सूत्र		गोभिल	बीजी पुरुष	_	गोपीनाथ मिश्र		
0		THE TAIL					

ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य			(9)
प्रवर		3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	_	श्यामसुन्दर मिश्र
शाखा	_	कौथुमी	मूलग्राम		दीघवे, कुकिलवार
सूत्र		गोभिल	ऋषि गोत्र	_	
वेद		सामवेद	प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता		महालक्ष्मी	शाखा .	_	कौथुमी
चरण		वाम	सूत्र		गोभिल
शिखा		वाम	वेंद	_	सामवेद
आस्पद		मिश्र	देवता	-	महालक्ष्मी
		(7)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	_	सचिदेव झा	शिखा	-	वाम
मूलग्राम	_	अनरिये, लमुनिया	आस्पद	_	मिश्र
ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य			(10)
प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	-	सत्यदेव मिश्र
शाखा	_	कौथुमी	मूलग्राम	-	सौन्दर पुरिये, वाली
सूत्र	_	गोभिल	ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य
वेद	_	सामवेद	प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता	-	महालक्ष्मी	शाखा	_	कौथुमी .
चरण	_	वाम	सूत्र	_	गोभिल
शिखा	-	वाम	वेद	_	सामवेद
आस्पद	-	झा भाग भाग भाग भाग भाग	देवता	-	महालक्ष्मी
		(8)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष	_	गोपाल झा	शिखा	_	वाम
मूलग्राम	_	गंगुलवार, सकुरी	आस्पद	-	मिश्र
ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य			(11)
प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	_	राघवेन्द्र झा
शाखा		कौथुमी	मूलग्राम	-	परिसदे-नरोच
सूत्र	_	गोभिल	ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य
वेद	-	सामवेद	प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता	-	महालक्ष्मी	शाखा	-	कौथुमी
चरण	-	वाम	सूत्र	-	गोभिल
शिखा	-	वाम	वेद	=	सामवेद
आस्पद	-	朝	देवता	-	महालक्ष्मी

चरण	_	वाम	सूत्र	_	गोभिल
शिखा	_	वाम	वेद		सामवेद
आस्पद	-	झा	देवता		महालक्ष्मी
		(12)	चरण		वाम
बीजी पुरुष		नरदेव मिश्र	शिखा	_	वाम
मूलग्राम	-	दिघने, कुकिलवार	आस्पद	_	झा
ऋषि गोत्र	-	शाण्डिल्य			(15)
प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	_	नृपति मिश्र
शाखा		कौथुमी	मूलग्राम	-	सोदरपुरिये, दिगोन
सूत्र	-	गोभिल	ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य
वेद	-	सामवेद	प्रवर		3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता	-	महालक्ष्मी	शाखा		कौथुमी
चरण	-	वाम '	सूत्र		गोभिल
शिखा		वाम	वेद		सामवेद
आस्पद	. —	मिश्र	देवता		महालक्ष्मी
		(13)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष	_	नारायण मिश्र	शिखा		वाम
मूलग्राम	-	दिगोन	आस्पद	-	झा
ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य			(16)
प्रवर	. —	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	-	गोवर्धन झा
शाखा	_	कौथुमी	मूलग्राम	-	सिंहासव
सूत्र	_	गोभिल	ऋषि गोत्र	-	शाण्डिल्य
वेद	_	सामवेद	प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता		महालक्ष्मी	शाखा	-	कौथुमी
चरण	_	वाम	सूत्र	-	गोभिल
शिखा	-	वाम	वेद		सामवेद
आस्पद	-	मिश्र	देवता	-	महालक्ष्मी
		(14)	चरण	-	- वाम
बीजी पुरुष	_	गोविन्द झा	शिखा		वाम
मूलग्राम	_	मिलेवार-ब्रह्मपुर	आस्पद		· 朝
ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य			(17)
प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष		- गोपीनाथ मिश्र
शाखा		्कौथुमी	मूलग्राम		- तिलहनपुर—तिलहे

ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य			(20)
प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	_	जानकी झा
शाखा	_	कौथुमी	मूलग्राम	_	गगुलवार-डूमरा
सूत्र		गोभिल	ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य
वेद		सामवेद	प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता		महालक्ष्मी	शाखा	-	कौथुमी
चरण	_	वाम	सूत्र		गोभिल
शिखा	-	वाम	वेद	_	सामवेद
आस्पद	_	मिश्र	देवता	_	महालक्ष्मी
		(18)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	-	जगन्नाथ झा	शिखा	-	वाम
मूलग्राम	_	पगुलवार-भड़ियांव	आस्पद	-	झा
ऋषि गोत्र	-	शाण्डिल्य			(21)
प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष		फूलमणि ठाकुर
शाखा	_	कौथुमी	मूलग्राम		खड़ोरे गौर
सूत्र	-	गोभिल	ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य
वेद	_	सामवेद	प्रवर		3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता	_	महालक्ष्मी	शाखा		कौथुमी
चरण	-	वाम	सूत्र	-	गोभिल
शिखा	-	वाम	वेद .	_	सामवेद
आस्पद	-	झा •	देवता	_	महालक्ष्मी
		(19)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष	-	सज्जन मिश्र	शिखा	-	वाम
मूलग्राम	_	सौदर पुरिये-सिरसव	आस्पद	-	ठाकुर
ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य			(22)
प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	_	अरुणदत्त झा
शाखा	_	कौथुमी	मूलग्राम	_	ब्रह्मपुर
सूत्र	-	गोभिल	ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य
वेद	-	सामवेद	प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता	-	महालक्ष्मी	ंशाखा		कौथुमी
चरण	-	वाम	सूत्र	-	गोभिल
शिखा	-	वाम	वेद	-	सामवेद
आस्पद	-	मिश्र	देवता		महालक्ष्मी

चरण	-	वाम	सूत्र	_	गोभिल
शिखा	-	वाम	वेद		सामवेद
आस्पद	-	झा	देवता		महालक्ष्मी
		(23)	चरण		वाम
बीजी पुरुष		रमाकान्त झा	शिखा	_	वाम
मूलग्राम		भड़ियांव	आस्पद	_	झा
ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य			(26)
प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	-	महादेव झा
शाखा		कौथुमी	मूलग्राम		पगुलवार सकरी
सूत्र		गोभिल	ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य
वेद	_	सामवेद	प्रवर		3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता	-	महालक्ष्मी	शाखा		कौथुमी
चरण	_	वाम	सूत्र		गोभिल
शिखा	_	वाम	वेद		सामवेद
आस्पद	a-	झा	देवता	-	महालक्ष्मी
		(24)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष	_	धर्मदेव मिश्र	शिखा	-	वाम
मूलग्राम	_	वाली	आस्पद	-	झा
ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य			(27)
प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष		जमुनाशंकर पाठक
शाखा	_	कौथुमी	मूलग्राम	-	
सूत्र	_	गोभिल	ऋषि गोत्र	-	शाण्डिल्य
वेंद	_	सामवेद	प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता		महालक्ष्मी	शाखा	_	कौथुमी
चरण	_	वाम	सूत्र		गोभिल
शिखा	_	वाम	वेद		सामवेद
आस्पद	_	मिश्र	देवता	100	महालक्ष्मी :
		(25)	चरण	-	- वाम
बीजी पुरुष	_		शिखा	_	- वाम
मूलग्राम		पगुलवार-राजे	आस्पद	-	- पाठक
ऋषि गोत्र					(28)
		3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष		- माघवानन्द झा
शाखा	_	कौथुमी	मूलग्राम		- यजुवाड़ो उदनपुर

ऋषि गोत्र	-	शाण्डिल्य			(31)
प्रवर		3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	_	मणिजय मिश्र
शाखा		कौथुमी	मूलग्राम	_	दिगोन
		गोभिल	ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य
सूत्र वेद		सामवेद	प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता		महालक्ष्मी	शाखा	_	कौथुमी
चरण		वाम .	सूत्र		गोभिल
शिखा		वाम	वेद	_	सामवेद
आस्पद		झा	देवता	_	महालक्ष्मी
		(29)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष	_	जानकीनन्दन झा	शिखा	-	वाम
मूलग्राम		ब्रह्मपुर .	आस्पद	_	मिश्र
ऋषि गोत्र	_	शाण्डिल्य			(32)
प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष	-	रमणदेव झा
शाखा	_	कौथुमी	मूलग्राम	-	उदनपुर
सूत्र		गोभिल	ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य
वेंद	_	सामवेद	प्रवर :		3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता	_	महालक्ष्मी	शाखा		कौथुमी
चरण	_	वाम	सूत्र		गोभिल
शिखा	-	वाम	वेद	_	सामवेद
आस्पद	_	झा	देवता	_	महालक्ष्मी
		(30)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष	_	गोपाल झा	शिखा	-	वाम
मूलग्राम	-	मह्वारे—माहब	आस्पद	-	झा
	_	शाण्डिल्य			(33)
प्रवर	_	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	बीजी पुरुष		ललजी झा
शाखा		कौथुमी	मूलग्राम		हसोली
सूत्र		गोभिल	ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य
वेद	-	सामवेद	प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल
देवता	-	. महालक्ष्मी	शाखा		कौथुमी
चरण	_	वाम	सूत्र		गोभिल
शिखा	-	वाम	वेद		सामवेद
आस्पद		झा	देवता	-	महालक्ष्मी '

Miles					57
चरण	_	वाम	आस्पद	_	झा
शिखा	-	वाम			(35)
आस्पद	_	झा	बीजी पुरुष	_	श्रवण देव झा
		(34)	मूलग्राम		पचही
बीजी पुरुष	-	श्रीकान्त झा	ऋषि गोत्र		शाण्डिल्य
मूलग्राम	_	दिगोन	प्रवर		3 शाण्डिल्य, असित, देवल
ऋषि गोत्र	-	शाण्डिल्य	शाखा	_	कौथुमी
प्रवर	-	3 शाण्डिल्य, असित, देवल	सूत्र		गोभिल
शाखा	-	कौथुमी	वेद	_	सामवेद
सूत्र	-	गोभिल	देवता		महालक्ष्मी
वेद	_	सामवेद	चरण	_	वाम
देवता	-	महालक <u>्ष</u> ्मी	शिखा	-	वाम
चरण	_	वाम	आस्पद	_	झा
शिखा	_	वाम			
		वत्स	गोत्र		
		(1)			भार्गव, जमदिग्न
बीजी पुरुष	-	माघव झा	शाखा		माध्यन्दिनीय
मूलग्राम	_	तरोनी	सूत्र		कात्यायन
ऋषि गोत्र	_	वत्स	वेद	_	यजुर्वेद
प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,	देवता	-	अम्बा
		भार्गव, जमदिग्न	चरण	-	वाम
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	शिखा	-	वाम
सूत्र		कात्यायन	आस्पद	-	झा
वेंद	_	यजुर्वेद			(3)
देवता	_	अम्बा :	बीजी पुरुष	-	विद्यापति झा
चरण	_	वाम	मूलग्राम	-	तरोनी
शिखा	_	वाम	ऋषि गोत्र	_	वत्स
आस्पद	_	झा	प्रवर	-	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,
		(2)			भार्गव, जमदिग्न
बीजी पुरुष	_	चन्द्रदेव झा	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
मूलग्राम		तरोनी	सूत्र	-	कात्यायन
ऋषि गोत्र		वत्स	वेंद	-	यजुर्वेद
प्रवरं		5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,	देवता	-	अम्बा

चरण.	_	वाम	प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,
शिखा		वाम			भार्गव, जमदिग्न
आस्पद		झा	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
		(4)	सूत्र		कात्यायन
बीजी पुरुष	_	राघव झा	वेद	-:	यजुर्वेद
मूलग्राम		तरोनी	देवता	_	अम्बा
ऋषि गोत्र		वत्स	चरण	-	वाम
प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,	शिखा	_	वाम
		भार्गव, जमदिग्न	आस्पद	_	झा
शाखा	_	माध्यन्दिनीय			(7)
सूत्र .		कात्यायन	बीजी पुरुष	_	वासुदेव झा
वेद		यजुर्वेद	मूलग्राम	_	तरोनी
देवता	_	अम्बा	ऋषि गोत्र	_	वत्स
चरण	_	वाम	प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,
शिखा		वाम			भार्गव, जमदग्नि
आस्पद		झा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
		(5)	सूत्र		कात्यायन
बीजी पुरुष	_	जानकी ठाकुर	वेद	-	यजुर्वेद
मूलग्राम		जालो	देवता	_	अम्बा
ऋषि गोत्र		वत्स	चरण	-	वाम
प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,	शिखा	_	वाम
		भार्गव, जमदिग्न	आस्पद	_	झा
शाखा	_	माध्यन्दिनीय			(8)
सूत्र	_	कात्यायन	बीजी पुरुष		विद्याधर झा
वेद	_	यजुर्वेद	मूलग्राम	-	महिषी
देवता	_	अम्बा	ऋषि गोत्र	_	वत्स
चरण	_	वाम	प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,
शिखा	_	वाम		3 2	भार्गव, जमदिंगन
आस्पद	_	झा :	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
		(6)	सूत्र	-	कात्यायन
बीजी पुरुष	-	मोहन झा	वेद		यजुर्वेद
मूलग्राम		ब्रह्मपुर	देवता	-	अम्बा
ऋषि गोत्र		- वत्स	चरण	-	वाम

					59
शिखा	_	वाम			भार्गव, जमदिग्न
आस्पद	_	झा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
		(9)	सूत्र	_	कात्यायन
बीजी पुरुष	-	जगदीश झा	वेद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम	-	जरेल	देवता		अम्बा
ऋषि गोत्र	_	वत्स	चरण	_	वाम
प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,	शिखा	-	वाम
		भार्गव, जमदिग्न	आस्पद	-	झा
शाखा	-	माध्यन्दिनीय			(12)
सूत्र	-	कात्यायन	बीजी पुरुष	_	रघुदेव झा
वेद	-	यजुर्वेद	मूलग्राम	_	महिषी
देवता	_	अम्बा	ऋषि गोत्र	-	वत्स
चरण	-	वाम	प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,
शिखा	_	वाम			भार्गव, जमदिगन
आस्पद	-	झा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय .
		(10)	सूत्र	-	कात्यायन
बीजी पुरुष	_	मोहन झा	वेंद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम	_	जाले	देवता	_	अम्बा
ऋषि गोत्र	-	वत्स	चरण	_	वाम
प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,	शिखा	_	वाम
		भार्गव, जमदिगन	आस्पद	_	झा
शांखा	_	माध्यन्दिनीय			(13)
सूत्र	_	कात्यायन	बीजी पुरुष	-	महिरेव झा
वेद	_	यजुर्वेद	मूलग्राम	_	हाटी
देवता	_	अम्बा	ऋषि गोत्र	_	वत्स
चरण	_	वाम	प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,
शिखा'	_	वाम			भार्गव, जमदिग्न
आस्पद	_	झा	शाखा	-	माध्यन्दिगीय
		(11)		_	कात्यायन
बीजी पुरुष		कपिलेश्वर झा	सूत्र		यजुर्वेद
मूलग्राम		वेलेन	देवता	_	अम्बा
ऋषि गोत्र			चरण	_	वाम
प्रवर		वत्स	शिखा	_	वाम
		5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,	14131		

आस्पद	-	झा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
		(14)	सूत्र		कात्यायन
बीजी पुरुष	_	राघव झा	वेद	-	यजुर्वेद
मूलग्राम		जाले	देवता	-	अम्बा
ऋषि गोत्र		वत्स	चरण	_	वाम
प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,	शिखा	_	वाम
		भार्गव, जमदिग्न	आस्पद	-	झा
शाखा	_	माध्यन्दिनीय			(16)
सूत्र		कात्यायन	बीजी पुरुष		इन्द्रकान्त झा
वेद		यजुर्वेद	मूलग्राम	_	हरिपुर
देवता	_	अम्बा	ऋषि गोत्र	-	वत्स
चरण	_	वाम '	प्रवर	_	5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,
शिखा		वाम			भार्गव, जमदिग्न
आस्पद		झा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
		(15)	सूत्र	_	कात्यायन
बीजी पुरुष	_	कमलाकान्त झा	वेद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम		तरोनी	देवता	_	अम्बा
ऋषि गोत्र		वत्स	चरण	_	वाम
प्रवर		5 वत्स, ओर्वच्य, अप्लवान,	शिखा		वाम
		भार्गव, जमदिग्न	आस्पद		झा.
			प गोत्र		
		(1)			(2)
बीजी पुरुष		कमलपाणि मिश्र	बीजी पुरुष	_	ज्ञानदेव पाठक
मूलग्राम		सहसराम	मूलग्राम	_	
ऋषि गोत्र		कश्यप	ऋषि गोत्र		कश्यप
प्रवर		3 कश्यप, वत्सार, नैधुव	प्रवर		3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
शाखा		माध्यन्दिनीय	शाखा		माध्यन्दिनीय
		कात्यायन	सूत्र		कात्यायन
सूत्र वेद		यजुर्वेद	वेद		यजुर्वेद
देवता		उमा	देवता		उमा
चरण		वाम	चरण		वाम
शिखा		वाम	शिखा		वाम
शिखा		नाग नाग	आमान		

आस्पद

– पाठक

मिश्र

आस्पद

MISH JUNIAR					
AND H		(3)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	-	अरुणादत्त झा	शिखा		वाम
मूलग्राम	-	भिगोली	आस्पद		झा
ऋषि गोत्र	_	कश्यप			(6)
प्रवर	_	3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव	बीजी पुरुष	_	गोविन्द झा
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम		महेन्द्रो
सूत्र	_	कात्यायन	ऋषि गोत्र	_	कश्यप
वेद	4	यजुर्वेद	प्रवर		3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
देवता	_	उमा	शाखा		माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम-	सूत्र		कात्यायन
शिखा	-	वाम	वेद	_	यजुर्वेद
आस्पद	-	झा	देवता		उमा
	-	(4)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष	_	सूर्यकान्त मिश्र	शिखा	_	वाम
मूलग्राम	-	डीह	आस्पद	_	झा
ऋषि गोत्र	_	कश्यप			(7)
प्रवर	_	3 कश्यप, वत्सार, नैध्रुव	बीजी पुरुष	_	मणिकान्त मिश्र
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम	_	ब्रह्मपुर
सूत्र	_	कात्यायन ै	ऋषि गोत्र	-	कश्यप
वेद	.—	यजुर्वेद	प्रवर	_	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
देवता	_	उमा	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम	सूत्र		कात्यायन
शिखा	_	वाम	वेद	-	यजुर्वेद
आस्पद	_	मिश्र	देवता	-	उमा
10,5		(5)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	_	शिवपाणि झा	शिखा	-	वाम
मूलग्राम	_	वाड़ी	आस्पद	-	मिश्र .
ऋषि गोत्र	_	कश्यप			(8)
प्रवर	_	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव	बीजी पुरुष	-	राघवेन्द्र झा
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम		तेल
सूत्र	-	कात्यायन	ऋषि गोत्र	-	कश्यप
वेद	_	यजुर्वेद	प्रवर	-	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
देवता	_	उमा	शाखा	-	माध्यन्दिनीय

02						C. MAIQ
सूत्र		कात्यायन		प्रवर		3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
वेद	-	यजुर्वेद		शाखा	_	माध्यन्दिनीय
देवता	_	उमा		सूत्र		कात्यायन
चरण	-	वाम		वेद		यजुर्वेद
शिखा	-	वाम		देवता	-	उमा
आस्पद	-	झा		चरण	-	वाम
		(9)		शिखा	-	वाम
बीजी पुरुष	-	रघुनन्दन झा		आस्पद	-	झा
मूलग्राम	_	बल्हा				(12)
ऋषि गोत्र	-	कश्यप.		बीजी पुरुष	-	राघव झा
प्रवर	-	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव	7	मूलग्राम	-	राजनपुर
शाखा	_	माध्यन्दिनीय		ऋषि गोत्र	_	कश्यप
सूत्र	-	कात्यायन		प्रवर	_	3 कश्यप, वंत्सार, नैधुव
वेद	_	यजुर्वेद	NAT.	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
देवता	_	उमा		सूत्र	_	कात्यायन
चरण	_	वाम		वेद	-	यजुर्वेद
शिखा	_	वाम	MA NI	'देवता		उमा
आस्पद	_	झा		चरण	_	वाम
		(10)		शिखा	_	वाम
बीजी पुरुष	-	नन्दन झा	-10.0	आस्पद	-	झा
मूलग्राम	_	कटइया				(13)
ऋषि गोत्र	_	कश्यप		बीजी पुरुष	_	उमापति मिश्र
प्रवर	_	3 कश्यपं, वत्सार, नैधुव	त्र	मूलग्राम	_	नरसाम
शाखा	_	माध्यन्दिनीय		ऋषि गोत्र	_	कश्यप
सूत्र	_	कात्यायन		प्रवर	_	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
वेद	_	यजुर्वेद	STEEL STEEL	शाखा		माध्यन्दिनीय
देवता		उमा	NAME OF	सूत्र	_	कात्यायन
चरण	_	वाम		वेद	-	यजुर्वेद
शिखा	-	वाम	E.76-	देवता		उमा
आस्पद	_	झा	200	चरण	-	वाम
		(11)		शिखा	-	वाम
बीजी पुरुष	10	नरसिंह झा		आस्पद	-	मिश्र
ऋषि गोत्र	-	कश्यप				

Mileral Halla					
		(14)	चरण	-UC	aur
बीजी पुरुष	_	देवदत्त पाठक	शिखा		वाम
मूलग्राम	-		आस्पद		वाम
ऋषि गोत्र	-	कश्यप	-11/14		朝 (17)
प्रवर	-	3 कश्यप, वत्सार; नैधुव	बीजी पुरुष		(17) महीदेव ठाकुर
शाखा		माध्यन्दिनीय	मूलग्राम		नशपप ठाकुर ओदूनी
सूत्र		कात्यायन	ऋषि गोत्र		कश्यप
वेंद	_	यजुर्वेद	प्रवर		
देवता	_	उमा	शाखा		3 कश्यप, वत्सार, नैधुव माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम	सूत्र		कात्यायन
शिखा	_	वाम	वेद		यजुर्वेद
आस्पद	_	पाठक	देवता		उमा
		(15)	चरण		वाम
बीजी पुरुष	200	श्यामजी झा	शिखा		वाम
मूलग्राम	_	रामपुर	आस्पद		ठाकुर
ऋषि गोत्र	_	कश्यप	Silvaq		(18)
प्रवर .	_	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव	बीजी पुरुष	_	मण्डन झा
शाखा		माध्यन्दिनीय	मूलग्राम		राजनपुर
सूत्र		कात्यायन	ऋषि गोत्र		कश्यप
वेद		यजुर्वेद	प्रवर		3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
देवता		उमा			माध्यन्दिनीय
चरण			शाखा		कात्यायन
शिखा		वाम	सूत्र		
आस्पद		वाम	वेद		यजुर्वेद उमा .
जात्यद	-	झा	देवता		
लीजी गरफ		(16)	चरण		वाम
बीजी पुरुष		बलराम झा	शिखा		वाम
मूलग्राम		महेन्द्रो	आस्पद		झा
ऋषि गोत्र		कश्यप	22		(19)
प्रवर	-	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव	बीजी पुरुष		कमलाकान्त झा
शाखा	-	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम		धनोजी
सूत्र		कात्यायन	ऋषि गोत्र		कश्यप
वेद	-	यजुर्वेद	प्रवर		3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
देवता	-	उमा	शाखा	-	माध्यन्दिनीय

सूत्र	_	कात्यायन	ऋषि गोत्र	_	कश्यप
वेद		यजुर्वेद 💮 💮	प्रवर	-	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
देवता	_	उमा	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम	सूत्र	_	कात्यायन
शिखा	-	वाम	वेद	_	यजुर्वेद
आस्पद	_	झा	देवता	-	उमा
		(20)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	-	मदन ठाकुर	शिखा	-	वाम
मूलग्राम	_	नानपुर	आस्पद	_	झा 📈
ऋषि गोत्र	_	कश्यप			(23)
प्रवर	_	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव	बीजी पुरुष	_	शिवदत्त झा
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम	-	राजनपुर
सूत्र	_	कात्यायन	ऋषि गोत्र	-	कश्यप
वेद	-	यजुर्वेद	प्रवर	-	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
देवता	_	उमा अ	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
चरण	-	वाम	सूत्र		कात्यायन
शिखा	_	वाम 💮 💮	वेद	-	यजुर्वेद
आस्पद	_	झा	देवता		उमा :
		(21)	चरण	-	वाम .
बीजी पुरुष	_	उदयाकर झा	शिखा	-	वाम
मूलग्राम	_	राजनपुर	आस्पद	_	झा
ऋषि गोत्र	_	कश्यप			(24)
प्रवर	_	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव	बीजी पुरुष	-	गौरीशंकर झा
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम	_	ब्रह्मपुर
सूत्र		कात्यायन	ऋषि गोत्र	_	कश्यप
वेद	-	यजुर्वेद	प्रवर	-	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव
देवता	_	उमा 🕒 🔭 🔭	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम	सूत्र	-	कात्यायन
शिखा	4	वाम	वेद	-	यजुर्वेद
आस्पद	_	झा	देवता	-	उमा
		(22)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष	-	मुकुन्द मिश्र	शिखा	-	वाम
मूलग्राम	-	नुतवार	आस्पद	-	झा
The second secon					

		(0=)				
		(25)	सूत्र	_	कात्यायन	
बीजी पुरुष		केशवदत्त ठाकुर	वेद		यजुर्वेद	THE PER
मूलग्राम	-	गोर	देवता		उमा	
ऋषि गोत्र	_	कश्यप	चरण		वाम	1971
प्रवर	-	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव	शिखा		वाम	
शाखा	-	माध्यन्दिनीय	आस्पद		झा	
सूत्र		कात्यायन			(27)	
वेद	-	यजुर्वेद	बीजी पुरुष	-	श्रीकण्ठ झा	
देवता	-	उमा	मूलग्राम	_	राजनपुर	
चरण	_	वाम	ऋषि गोत्र	_	कश्यप	
शिखा	_	वाम	प्रवर	_	3 कश्यप, वत्सार,	नैध्रव
आस्पद	-	झा	शाखा		माध्यन्दिनीय	912
		(26)	सूत्र	-	कात्यायन	KIRT IS
बीजी पुरुष	-	शिवपाणि झा	वेद	-	यजुर्वेद	
मूलग्राम	_	रजोड़ा	देवता	_	उमा	
ऋषि गोत्र	_	कश्यप	चरण	_	वाम	
प्रवर	_	3 कश्यप, वत्सार, नैधुव	शिखा	-	वाम	
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	आस्पद	_	झा	3.0

सावर्ण गोत्र

		W.	1 11121		
		(1)			(2)
बीजी पुरुष	_	गोविन्द मिश्र	बीजी पुरुष	-	श्यामदत्त झा
मूलग्राम	_	ददरी	मूलग्राम		भीट्टी
ऋषि गोत्र	_	सावर्ण	ऋषि गोत्र		सावर्ण
प्रवर	_	5 सावर्ण, और्वच्य, भार्गव,	प्रवर	-	5 सावर्ण, और्वच्य, भार्गव,
		जमदाग्नि, आप्लवान			जमदाग्नि, आप्लवान
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
सूत्र	_	कात्यायन	सूत्र		कात्यायन
सूत्र वेद	_	यजुर्वेद	सूत्र वेद		यजुर्वेद
देवता		सिद्धेश्वरी	देवता	-	सिद्धेश्वरी
चरण		वाम	चरण	-	वाम
शिखा		वाम	शिखा	·	वाम
आस्पद		झा	आस्पद	-	झा

		(3)	सूत्र	_	कात्यायन
र्बाजी पुरुष	-	राधारमण पाठक	वेंद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम		झडुंआ	देवता		सिद्धेश्वरी
ऋषि गोत्र	-	सावर्ण	चरण		वाम
प्रवर	_	5 सावर्ण, और्वच्य, भार्गव,	शिखा	_	वाम
		जमदाग्नि, आप्लवान	आस्पद	_	पाठक
शाखा	-	माध्यन्दिनीय			

भारद्वाज गोत्र

		(1)			(3)
बीजी पुरुष	_	चिन्तामणि झा	बीजी पुरुष	_	अक्रूर झा
मूलग्राम		सुदई	मूलग्राम	_	रुतवार
ऋषि गोत्र	-	भारद्वाज	ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज
प्रवर	-	3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य	प्रवर	_	3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
शाखा	-	माध्यन्दिनीय	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
सूत्र	-	कात्यायन	सूत्र	_	कात्यायन
वेद	_	यजुर्वेद	वेंद	_	यजुर्वेद
देवता	-	गौरी	देवता		गौरी
चरण	-	वाम	चरण	_	वाम
शिखा	-	वाम	शिखा	_	वाम
आस्पद	_	झा	आस्पद	_	झा
			-11/14		रा।
		(2)			
बीजी पुरुष	_				(4)
बीजी पुरुष मूलग्राम		(2)	बीजी पुरुष	_	(4) देवानन्द झा
बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र	-	(2) वेदराम मिश्र			(4) देवानन्द झा रुतवार
बीजी पुरुष मूलग्राम	-	(2) वेदराम मिश्र सुदई	बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र		(4) देवानन्द झा रुतवार भारद्वाज
बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र		(2) वेदराम मिश्र सुदई भारद्वाज	बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र		(4) देवानन्द झा रुतवार
बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र		(2) वेदराम मिश्र सुदई भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय कात्यायन	बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र		(4) देवानन्द झा रुतवार भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय
बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र वेद		(2) वेदराम मिश्र सुदई भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय कात्यायन यजुर्वेद	बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र वेद		(4) देवानन्द झा रुतवार भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय कात्यायन
बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र वेद देवता		(2) वेदराम मिश्र सुदई भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय कात्यायन यजुर्वेद	बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र		(4) देवानन्द झा रुतवार भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय कात्यायन यजुर्वेद गौरी
बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र वेद देवता चरण		(2) वेदराम मिश्र सुदई भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय कात्यायन यजुर्वेद गौरी	बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र वेद		(4) देवानन्द झा रुतवार भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय कात्यायन यजुर्वेद गौरी
बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र वेद देवता		(2) वेदराम मिश्र सुदई भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय कात्यायन यजुर्वेद गौरी वाम	बीजी पुरुष मूलग्राम ऋषि गोत्र प्रवर शाखा सूत्र वेद देवता		(4) देवानन्द झा रुतवार भारद्वाज 3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य माध्यन्दिनीय कात्यायन यजुर्वेद

					67
0.0		(5)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	1.5	हरिकान्त झा	शिखा	_	वाम
मूलग्राम		सुदई	आस्पद		झा
ऋषि गोत्र	-	भारद्वाज			(8)
प्रवर	-	3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य	बीजी पुरुष	_	रघुनन्दन झा
शाखा	-	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम	_	ओझोल
सूत्र	-	कात्यायन	ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज
वेद	_	यजुर्वेद	प्रवर		3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
देवता	-	गौरी जिल्हा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
चरण	-	वाम	सूत्र	_	कात्यायन
शिखा	-	वाम	वेद		यजुर्वेद
आस्पद	_	झा	देवता	_	गौरी
	-	(6)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	_	वंशीधर झा	शिखा		वाम
मूलग्राम	_	सुदई	आस्पद	_	झा
ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज			(9)
प्रवर	_	3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य	बीजी पुरुष	_	रमाकान्त झा
शाखा	-	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम	_	ओझोल 💮
सूत्र	_	कात्यायन	ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज
वेद	_	यजुर्वेद	प्रवर	_	3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
देवता	-	गौरी	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम	सूत्र	_	कात्यायन
शिखा	_	वाम	वेंद	_	यजुर्वेद
आस्पद	_	झा	देवता	_	गौरी
		(7)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	_	मणिधर झा	शिखा		वाम
मूलग्राम	_	सुदई	आस्पद	-	झा
ऋषि गोत्र		भारद्वाज			(10)
प्रवर		3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य	बीजी पुरुष	_	रत्ती झा
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम	-	सुदई
The state of the s	-	कात्यायन	ऋषि गोत्र		भारद्वाज
सूत्र वेद		यजुर्वेद	प्रवर	-	3 भारद्वाज, अंगिरस, वहिस्पत्य
देवता		गौरी	शाखा		माध्यन्दिनीय
		H NI	10.00		

					अत्सर्ग गात्रावली
सूत्र	-	कात्यायन	ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज
वेद	-	यजुर्वेद	प्रवर	_	3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
देवता	-	गौरी	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
चरण	-	वाम	सूत्र		कात्यायन
शिखा	_	वाम	वेंद	_	यजुर्वेद
आस्पद	-	झा	देवता	_	गौरी
		(11)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	_	कमलाकान्त झा	शिखा	_	वाम
मूलग्राम	_	सुदई	आस्पद	_	झा
ऋषि गोत्र		भारद्वाज			(14)
प्रवर		3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य	बीजी परुष	_	मधुसुदन झा
शाखा		माध्यन्दिनीय	मूलग्राम	_	कन्होली
सूत्र	_	कात्यायन	ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज
वेंद	_	यजुर्वेद	प्रवर	_	3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
देवता		गौरी	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम	सूत्र	_	कात्यायन
शिखा	_	वाम	वेद		यजुर्वेद
आस्पद	3.5	झा	देवता	_	गौरी
		(12)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष		जगन्नाथ झा	शिखा	_	वाम
मूलग्राम	_	कलिग्राम	आस्पद	_	झा
ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज			(15)
प्रवर	-	3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य	बीजी पुरुष	_	उदित पाठक
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	मूलग्राम	_	सुदई
सूत्र .	_	कात्यायन	ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज
वेद	-	यजुर्वेद	प्रवर .	_	3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
देवता	-	गौरी	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
चरण	-	वाम	सूत्र	_	कात्यायन
शिखा	-	वाम	वेद	_	यजुर्वेद
आस्पद	-	झा	देवता	_	गौरी
		(13)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष		सारुणदत्त झा	शिखा	_	वाम
मूलग्राम	-	काली गांव	आस्पद	_	पाठक 🐪
0					

		(24)			69
		(16)	सूत्र	_	कात्यायन
बीजी पुरुष	_	जगन्नाथ झा	वेद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम	_	काको	देवता	_	गौरी
ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज	चरण	_	वाम
प्रवर	-	3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य	शिखा		वाम
शाखा	-	माध्यन्दिनीय	आस्पद	_	झा
सूत्र	-	कात्यायन			(19)
वेद	-	यजुर्वेद	बीजी पुरुष	27	लहरदार झा
देवता	-	गौरी	मूलग्राम	_	सुदई
चरण	-	वाम	ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज
शिखा	-	वाम	प्रवर	_	3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
आस्पद	TO	झा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
		(17)	सूत्र .	_	कात्यायन
बीजी पुरुष	-	देवानन्द झा	वेद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम	_	सुदई	देवता	_	गौरी
ऋषि गोत्र	-	भारद्वाज	चरण	_	वाम
प्रवर	_	3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य	शिखा	_5	वाम
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	आस्पद	_	झा
सूत्र	_	कात्यायन			(20)
वेद	_	यजुर्वेद	बीजी पुरुष		झमर झा
देवता	_	गौरी	मूलग्राम	_	सुदई
चरण	_	वाम	ऋषि गोत्र	_	भारद्वाज
शिखा	_	वाम	प्रवर	-	3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य
आस्पद	_	झा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
		(18)	सूत्र	_	कात्यायन '
बीजी पुरुष	1	माधवानन्द झा	वेद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम	13	कल्होली	देवता	_	गौरी
ऋषि गोत्र		भारद्वाज	चरण	_	वाम
प्रवर		3 भारद्वाज, अंगिरस, वार्हस्पत्य	शिखा	-	वाम
शाखा		माध्यन्दिनीय	आस्पद	-	झा
	Harris L	गा ज्या प्राप			THE STREET

गार्ग्य गोत्र

			9 11121		
		(1)	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
बीजी पुरुष	_	देवदत्त झा	सूत्र		कात्यायन
मूलग्राम		वसेह वसांव	वेद	_	यजुर्वेद
ऋषि गोत्र	_	गार्ग्य	देवता	_	अम्बा
प्रवर		5 गार्ग्य, धृत, कौशिक,	चरण	-	वाम
		माण्डव्यं, वैशम्पायन	शिखा	-	वाम
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	आस्पद	-	झा
सूत्र		कात्यायन			(4)
वेद		यजुर्वेद	बीजी पुरुष	_	रघुनाथ झा
देवता	-	अम्बा	मूलग्राम		वसेह वसांव
चरण	_	वाम	ऋषि गोत्र	-	गार्ग्य
शिखा	_	वाम	प्रवर	-	5 गार्ग्य, धृत, कौशिक,
आस्पद		झा			माण्डव्य, वैशम्पायन
-11,14		(2)	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
बीजी पुरुष	_	राघवेन्द्र झा	सूत्र		कात्यायन
मूलग्राम		वसेह वसांव	वेंद	_	यजुर्वेद
ऋषि गोत्र			देवता	_	अम्बा
		गार्ग्य	चरण	_	वाम ।
प्रवर	T	5 गार्ग्य, धृत, कौशिक,	शिखा	_	वाम
		माण्डव्य, वैशम्पायन	आस्पद	_	झा
शाखा	-	माध्यन्दिनीय .			(5)
सूत्र		कात्यायन	बीजी पुरुष	_	उमेश झा
वेद	-	यजुर्वेद	मूलग्राम		वसेह वसांव
देवता	-	अम्बा	ऋषि गोत्र	_	गार्ग्य
चरण	-	वाम	प्रवर	_	5 गार्ग्य, धृत, कौशिक,
शिखा	-	वाम			माण्डव्य, वैशम्पायन
आस्पद	-	झा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
		(3)	सूत्र		कात्यायन
बीजी पुरुष	=	हरिकृष्ण झा	वेद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम	-	वसेह वसांव	देवता	_	अम्बा
ऋषि गोत्र	-	गार्ग्य	चरण	-	वाम
प्रवर	-	5 गार्ग्य, धृत, कौशिक,	शिखा	_	वाम
		माण्डव्य, वैशम्पायन	आस्पदं	-	झा

मौदगल्य गोत्र

		(1)	सूत्र		कात्यायन
बीजी पुरुष	_	सुधाकर झा	वेद		यजुर्वेद
मूलग्राम		मलिछबार-भरोछ	देवता		अन्नपूर्णा
ऋषि गोत्र	-	मौदगल्य	चरण		वाम .
प्रवर	_	3 मौदगल्य, वार्हस्पत्य,	शिखा		वाम
		अंगिरस	आस्पद	-	झा
शाखा	-	माध्यन्दिनीय			

विष्णु वृद्धि गोत्र

		(1)	सूत्र	_	कात्यायन
बीजी पुरुष	_	ग्रहपाणि झा	वेंद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम	_	कोंथुए-तुमोल	देवता		गौरी
ऋषि गोत्र		विष्णु वृद्धि	चरण	_	वाम
प्रवर		3 विष्णुवृद्धि, कौरूप,	शिखा	_	वाम
		क्षत्रासहस्य	आस्पद	_	झा
शाखा	_	माध्यन्दिनीय			

कौण्डिल्य गोत्र

	(1)		(2)
बीजी पुरुष	– रजनीनाथ झा	बीजी पुरुष	- शिवदत्त झा
मूलग्राम	- परिसडे, नरोंछ	मूलग्राम	- परिसडे, नरोंछ
ऋषि गोत्र	– कौण्डिल्य	ऋषि गोत्र	– कौण्डिल्य
प्रवर	 3 कौण्डिल्य, आस्तीक, 	प्रवर	— 3 कौण्डिल्य, आस्तीक,
	कौशिक		कौशिक
शाखा	– माध्यन्दिनीय	शाखा	– माध्यन्दिनीय
	– कात्यायन	सूत्र	– कात्यायन
सूत्र वेद	यजुर्वेद	वेद	– यजुर्वेद
देवता	– उमा	देवता	– उमा
चरण	वाम	चरण	— वाम
शिखा	– वाम	शिखा	– वाम
आस्पद	– झा	आस्पद	– झा

पराशर गोत्र

		(1)	. PX	सूत्र	_	कात्यायन	
बीजी पुरुष	-	- हरिकान्त झा		वेद	_	यजुर्वेद	Day that
मूलग्राम		- सक्तरापुर		देवता		शुभ्रा	141070
ऋषि गोत्र	-	- पराशर		चरण	_	वाम	对作的
प्रवर	-	- 3 पराशर, शक्ति,	वशिष्ठ	शिखा	1.	वाम	
शाखा	-	- माध्यन्दिनीय	101115	आस्पद	_	झा .	
सूत्र	-	- कात्यायन				(4)	72577
वेद	-	· यजुर्वेद	wife or	बीजी पुरुष	_	विद्याधर झा	
देवता	-	शुभ्रा		मूलग्राम	_	सक्तरामपुर	
चरण	_	वाम	PART.	ऋषि गोत्र	_	पराशर	
शिखा	-	वाम		प्रवर		3 पराशर, शत्ति	. वशिष्ठ
आस्पद	_	झा	THE PERSON	शाखा		माध्यन्दिनीय	THE RE
		(2)	(c. 10 ft)	सूत्र		कात्यायन	
बीजी पुरुष	-	देवी झा	及門	वेद		यजुर्वेद	
मूलग्राम	_	सोलनी	puns"	देवता	_	शुभ्रा	
ऋषि गोत्र	-	पराशर		चरण	_	वाम	1200
प्रवर	-	3 पराशर, शक्ति,	वशिष्ठ	शिखा		वाम	
शाखा	-	माध्यन्दिनीय		आस्पद	_	झा	
सूत्र	-	कात्यायन				(5)	
वेद	_	यजुर्वेद		बीजी पुरुष	_	रमणदेव झा	SOF IST
देवता	-	शुभ्रा	+14171	मूलग्राम		पिलोखर	THE R
चरण	_	वाम		ऋषि गोत्र		पराशर	a for what
शिखा	_	वाम	7.3	प्रवर		3 पराशर, शक्ति	विशिष्त
आस्पद	_	झा		शाखा	_	माध्यन्दिनीय	, -1111
		(3)		सूत्र	2	कात्यायन	The said
बीजी पुरुष	_	मधुसुदन झा		वेद	_	यजुर्वेद	
मूलग्राम		हरनाडीह		देवता		शुभा	30
ऋषि गोत्र	-	पराशर	1455	चरण	_	वाम	TRUE
प्रवर		3 पराशर, शक्ति,	वशिष्ठ	शिखा		वाम	
शाखा	-	माध्यन्दिनीय		आस्पद	-	झा	
			THE REAL PROPERTY.			Britains and the first	

		(6)	Da .		
बीजी पुरुष	-		सूत्र वेद	154	कात्यायन
मूलग्राम	_		देवता		यजुर्वेद
ऋषि गोत्र	_		चरण		शुभा
प्रवर	-	3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ	शिखा		वाम
शाखा	181		आस्पद	1300	वाम
सूत्र	_	कात्यायन	जास्यद		झा
वेंद	_	*	बीजी पुरुष		(9)
देवता	_	शुभा	मूलग्राम		मेघराज झा ओझोल
चरण	_	वाम कि	ऋषि गोत्र		
शिखा	_	वाम	प्रवर		पराशर 3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
आस्पद	_	झा भारता समार्थ	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
DESTRUCTION OF		(7)	सूत्र		कात्यायन
बीजी पुरुष	_	पूरनदवे झा	वेद	_	~
मूलग्राम		लोआम	देवता		शुभा विश्व
ऋषि गोत्र		पराशर	चरण	_	वाम
प्रवर	_	The state of the state of	शिखा	_	वाम कि कि
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	आस्पद		झा
सूत्र	18	कात्यायन			(10)
वेद	_	यजुर्वेद	बीजी पुरुष	_	ऋषिदेव झा
देवता	_	शुभ्रा	मूलग्राम	_	सक्तरापुर
चरण	_	वाम	ऋषि गोत्र	_	पराशर
शिखा	_	वाम	प्रवर	_	3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ
आस्पद	_	झा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
		(8)	सूत्र	_	कात्यायन
बीजी पुरुष		उमापति झा	वेद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम	_	पिलोखर	देवता	_	शुभा
ऋषि गोत्र	_	पराशर	चरण	_	वाम अन्य क्रिक्ट
प्रवर	_	3 पराशर, शक्ति, वशिष्ठ	शिखा	_	वाम
शाखा		माध्यन्दिनीय	आस्पद	_	झा
		W 7 12			

गौतम गोत्र (3)(1) बीजी पुरुष महेश झा बीजी पुरुष दिगम्बर झा मूलग्राम बुसबाड़ी मूलग्राम ब्रह्मपुर ऋषि गोत्र - गौतम गौतम ऋषि गोत्र 3 अंगिरा, बार्हस्पत्य, विशुष्ठ 3 अंगिरा, बार्हस्पत्य, वशिष्ठ प्रवर प्रवर माध्यन्दिनीय माध्यन्दिनीय शाखा शाखा कात्यायन सूत्र कात्यायन सूत्र यजुर्वेद यजुर्वेद वेद वेद देवता देवता उमा उमा चरण चरण वाम वाम शिखा शिखा वाम वाम आस्पद झा आस्पद झा, पाठक (2)(4)बीजी पुरुष बीजी पुरुष नारायण झा गोकुलनाथ झा पचाड़ी मूलग्राम मूलग्राम ब्रह्मपुर ऋषि गोत्र ऋषि गोत्र गौतम गौतम 3 अंगिरा, बाईस्पत्य, वशिष्ठ 3 अंगिरा, बाईस्पत्य, वशिष्ठ प्रवर प्रवर माध्यन्दिनीय माध्यन्दिनीय शाखा शाखा कात्यायन कात्यायन सूत्र सूत्र यजुर्वेद यजुर्वेद वेद वेद देवता देवता उमा उमा चरण चरण वाम वाम शिखा शिखा वाम वाम आस्पद आस्पद झा झा कौशिक गोत्र वेद (1) यजुर्वेद बीजी पुरुष देवता हासानन्द ठाकुर तप्तेश्वरी बरही चरण मूलग्राम वाम शिखा ऋषि गोत्र कौशिक वाम 3 कौशिक, अत्रि, जमदिगन आस्पद प्रवर ठाकुर माध्यन्दिनीय शाखा (2)

बीजी पुरुष

दयानन्द ठाकुर

कात्यायन

सूत्र

AIGIST SINIS	eu					7
मूलग्राम	-	वरही		आस्पद	_	ठाकुर
ऋषि गोत्र	_	कौशिक				(5)
प्रवर	-	3 कौशिक, अत्रि, जमदि	ोन	बीजी पुरुष	_	चिन्तामणि ठाकुर
शाखा	_	माध्यन्दिनीय		मूलग्राम	_	निकुती
सूत्र	_	कात्यायन		ऋषि गोत्र	_	कौशिक
वेद	_	यजुर्वेद		प्रवर	_	3 कौशिक, अत्रि, जमदिग्न
देवता		तप्तेश्वरी		शाखा		माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम		सूत्र	_	कात्यायन
शिखा	_	वाम	FIS	वेद	_	यजुर्वेद
आस्पद	_	ठाकुर		देवता		तप्तेश्वरी
		(3)	6	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	_	विद्यानन्द ठाकुर		शिखा	_	वाम
मूलग्राम	-	बरही		आस्पद	_	ठाकुर
ऋषि गोत्र	-	कौशिक		THE PARTY		(6)
प्रवर	-	3 कौशिक, अत्रि, जमदि	न	बीजी पुरुष	_	ब्रह्मानन्द झा
शाखा	-	माध्यन्दिनीय		मूलग्राम	_	ब्रह्मपुर
सूत्र	_	कात्यायन		ऋषि गोत्र	_	कौशिक
वेद	_	यजुर्वेद		प्रवर	_	3 कौशिक, अत्रि, जमदिग्न
देवता	_	तप्तेश्वरी		शाखा	_	माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम 🙀		सूत्र	_	कात्यायन
शिखा	-	वाम		वेद	_	यजुर्वेद
आस्पद	_	ठाकुर		देवता		तप्तेश्वरी
		(4)		चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	_	श्रीनाथ ठाकुर		शिखा	_	वाम
मूलग्राम	_	निकुती का क		आस्पद	_	झा
ऋषि गोत्र	_	कौशिक		THE WA		(7)
प्रवर	-	3 कौशिक, अत्रि, जमदग्नि	न	बीजी पुरुष	-	महीनाथ ठाकुर
शाखा	_	माध्यन्दिनीय		मूलग्राम	-	बरही
सूत्र	_	कात्यायन		ऋषि गोत्र	-	कौशिक
वेद	_	यजुर्वेद		प्रवर	-	3 कौशिक, अत्रि, जमदिग्न
देवता	_	तप्तेश्वरी		शाखा	-	माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम 💴 📧		सूत्र		कात्यायन
शिखा	_	वाम अर्थ के अस्त्रिक		वेद	-	यजुर्वेद

16							अ।हाण गोत्रावल
देवता	_	तप्तेश्वरी		प्रवर	-	3 कौशिक,	अत्रि, जमदिग्न
चरण	-	वाम		शाखा	_	माध्यन्दिनीय	TO THE REAL
शिखा	=	वाम	ALON BURN	सूत्र		कात्यायन	
आस्पद	-	ठाकुर	Malog	वेद	-	यजुर्वेद	
		(8)	FID STRE	देवता	_	तप्तेश्वरी	
बीजी पुरुष	_	दिगम्बर ठाकुर		चरण	_	वाम	
मूलग्राम	_	बरही	1000年	शिखा	-	वाम	
ऋषि गोत्र	-	कौशिक		आस्पद	-	ठाकुर	
			कात्या	यन गोत्र			1916
	*	(1)	10505			(3)	- 34900
बीजी पुरुष	_	श्रीदेव झा	Tr. Car	बीजी पुरुष	-	धीरनाथा झा	
मूलग्राम	-	कुन्जोली	TENEST:	मूलग्राम	7-		
ऋषि गोत्र	-	कात्यायन	50500	ऋषि गोत्र	_	कात्यायन	HILIST
प्रवर	-		ऋणु, अंगिरा	प्रवर	_	3 कात्यायन,	विष्णु, अंगिरा
शाखा	-	माध्यन्दिनीय	A P IN IN	शाखा	-	माध्यन्दिनीय	
सूत्र		कात्यायन	. 计符记证	सूत्र	_	कात्यायन	
वेद		यजुर्वेद	CP-DIR	वेद	_	यजुर्वेद	
देवता	-	क्षेमप्रदा		देवता	-	क्षेमप्रदा	
चरण	_	वाम		चरण	-	वाम	
शिखा	-	वाम		शिखा	_	वाम	
आस्पद	-	झा		आस्पद	_	झा	
		(2)				(4)	
बीजी पुरुष		शंकरदेव झा		बीजी पुरुष	_	जानकी झा	
मूलग्राम	-	कुन्जोली	和	मूलग्राम	-	भकरोली	
ऋषि गोत्र	-	कात्यायन		ऋषि गोत्र	_	कात्यायन	
प्रवर	_	3 कात्यायन, वि	त्रष्णु, अगिरा	प्रवर		3 कात्यायन, र्	वेष्णु, अंगिरा
शाखा	-	माध्यन्दिनीय	To the Health	शाखा	_	माध्यन्दिनीय	
सूत्र	-	कात्यायन	artis attack	सूत्र	-	कात्यायन	
वेद	_	यजुर्वेद		वेंद	-	यजुर्वेद	
देवता	-	क्षेमप्रदा	A STATE OF THE PARTY OF THE PAR	देवता	-	क्षेमप्रदा	
चरण		वाम		चरण	-	वाम	
शिखा		वाम	100	शिखा	-	वाम	
आस्पद		झा		आस्पद	-	झा	

		(5)			77
बीजी पुरुष	· _	- 01	चरण	35	- वाम
मूलग्राम	_		शिखा		- वाम
ऋषि गोत्र	10077	- कात्यायन	आस्पद	2	- ठाकुर
प्रवर	_		-2-3		(8)
शाखा			बीजी पुरुष		- उमानाथ झा
सूत्र		कात्यायन	मूलग्राम		
वेद			ऋषि गोत्र		· कात्यायन
देवता		क्षेमप्रदा	प्रवर		3) "
चरण	170	वाम	शाखा		माध्यन्दिनीय
शिखा			सूत्र		कात्यायन
		वाम	वेंद	-	यजुर्वेद
आस्पद		झा	देवता	-	क्षेमप्रदा
-0-0		(6)	चरण	-	वाम
बीजी पुरुष			शिखा	-	वाम
मूलग्राम	-	दिगोन	आस्पद	-	झा
ऋषि गोत्र	-	कात्यायन			(9)
प्रवर		3,	बीजी पुरुष	-	शंकरदेव झा
शाखा		माध्यन्दिनीय	मूलग्राम	-	रिसीगभा
सूत्र		कात्यायन	ऋषि गोत्र	-	कात्यायन
वेद	-	यजुर्वेद	प्रवर	_	3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
देवता	-	क्षेमप्रदा	शाखा	_	माध्यन्दिनीय
चरण	_	वाम	सूत्र	-	कात्यायन
शिखा	_	वाम अपन	वेद	_	यजुर्वेद
आस्पद	-	झा	देवता	-	क्षेमप्रदा
		(7)	चरण	_	वाम
बीजी पुरुष	_	श्रीपति ठाकुर	शिखा	_	वाम
		उल्लू	आस्पद	_	झा
ऋषि गोत्र	_	कात्यायन			(10)
प्रवर	_	3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा	बीजी पुरुष	_	मुखपाणि झा
शाखा		माध्यन्दिनीय	मूलग्राम		यलगिया
		कात्यायन	ऋषि गोत्र	-	कात्यायन
सूत्र वेद		यजुर्वेद			3 कात्यायन, विष्णु, अंगिरा
देवता	_	क्षेमप्रदा	शाखा		माध्यन्दिनीय

सूत्र	_	कात्यायन	चरण	-	वाम
वेद	_	यजुर्वेद	शिखा	-	वाम
देवता	_	क्षेमप्रदा	आस्पद	_	.झा
		कृष्य	गित्रय		
		(1)			(2)
बीजी पुरुष	_	केशव झा	बीजी पुरुष	-	रुद्रमाल झा
मूलग्राम	_	मूसवड़े-राजे	मूलग्राम		मूसवड़े, अदौली
ऋषि गोत्र		कृष्णात्रेय	ऋषि गोत्र		कृष्णात्रेय
प्रवर	_	3 कृष्णात्रेय, आप्लावन,	प्रवर	-	3 कृष्णात्रेय, आप्लावन,
		सास्वत			सास्वत
शाखा	_	माध्यन्दिनीय	शाखा	-	माध्यन्दिनीय
सूत्र		कात्यायन	सूत्र		कात्यायन
वेद	_	यजुर्वेद	वेद	_	यजुर्वेद
देवता .	_	उमा	देवता	-	उमा
चरण	_	वाम	चरण	-	वाम
शिखा	_	वाम	शिखा	-	वाम
आस्पद	_	झा	आस्पद	-	झा
		विश	ष्ठ गोत्र		Nicola
MILITE I	espli	(1)	सूत्र	<u>-</u>	कात्यायन
बीजी पुरुष		राघवानन्द मिश्र	वेद	_	यजुर्वेद
मूलग्राम	_		देवता	_	गौरी
ऋषि गोत्र	_		चरण	_	वाम
प्रवर		C	शिखा	_	वाम
शाखा		माध्यन्दिनीय	आस्पद	_	मिश्र

शाखा

कान्यकुन बाह्मणोत्पत्ति

महोदयपुर के राजा का नाम कुशनाभ था। उनकी पत्नी का नाम घृताक्षी था। उसकी एक अत्यन्त सुन्दरी कन्या थी। रूप यौवन सम्पन्न कन्या बाग में अपनी सहेलियों के साथ घूमने गयी। सहेलियों के साथ राजकुमारी का सांस्कृतिक कार्यक्रम (गाना-बजाना आदि) प्रारम्भ हो गया।

सर्वगुण सम्पन्न, रूप-यौवनोपशालिनी राजकुमारी को देखकर सर्वात्मा वायु देवता मनुष्य रूप में प्रकट हो गये। उन्होंने राजकुमारी से विवाह की इच्छा व्यक्त की और अपना परिचय भी दिया कि तुम्हारा मानुषी भाव समाप्त हो जायेगा और तुम अजर-अमर हो जाओगी।

कन्या ने वायु देवता के प्रस्ताव का तिरस्कार करते हुए कहा कि हमारे पिता हमारे ईश्वर हैं। वे हमें जिसके हाथ में देना चाहेंगे, वे हमारे स्वामी होंगे।

यह सुनकर वायु देवता कुपित हो गये और वह राजकुमारी तत्काल कुब्जा हो गयी।

दुखित कन्या सहेलियों के साथ घर आयी और पिता से सारी घटना कही। राजा ने शुभ मुहुर्त-में महर्षि ब्रह्मदत्त के हाथ में राजकुमारी का हाथ सौंप दिया। ऋषि के पाणिग्रहण करते ही कुपित वायु दूर हो गया और कन्या सर्वांग सुन्दरी हो गयी। जिस देश में वह कन्या कुब्जा हुई थी, उसे कान्यकुब्ज कहते हैं। इसी क्षेत्र में विश्वामित्र ने इन्द्र के साथ सोमपान किया था और राजर्षि से ब्रह्मर्षि हो गये। कान्यकुब्ज क्षेत्र

अयोध्या के दक्षिण में शृगीरामपुर से दालभ्य ऋषि के आश्रम पर्यन्त कान्यकुब्ज देश कहलाता था। यद्यपि इस समय कानपुर, फतेहपुर, फर्रखाबाद, इटावा, लखनऊ, बाराबंकी, उन्नाव, रायबरेली, हरदोई, शाहजहांपुर, भगवन्त नगर आदि स्थानों में कन्याकुब्ज ब्राह्मणों का विस्तार हो गया है।

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में कुल मर्यादा मान आदि का विशेष ध्यान रहता है। इनकी उपाधियां बहुधा कर्म से सम्बन्ध रखती हैं।

गोत्रों और कुलों का वर्णन

1. कश्यप, 2. भारद्वाज, 3. शाण्डिल्य, 4. सांकृत, 5. कात्यायन, 6. उपमन्यु, 7. गार्ग्य, 8. धनञ्जय, 9. कविस्त, 10. गौतम, 11. गर्ग, 12. कृष्णात्रेय, 13. कौशिक, 14. विसष्ठ, 15. वत्स और 16. पराशर। ये 16 गोत्र कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में बहुत प्रसिद्ध हैं। इनमें प्रथम 6 गोत्र बहुत प्रसिद्ध हैं।

1. कात्यायन, 2. उपमन्यु, 3. भारद्वाज, 4. कश्यप, 5. शाण्डिल्य और 6. सांकृत्य। इन्हें षटकुल के नाम से जाना जाता है। इनकी दूसरी शाखा धाकर कहलाती है। इनके आस्पद (उपाधियां) निम्नलिखित हैं

पाण्डेय, पाठक, त्रिपाठी, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, अवस्थी, दीक्षित, शुक्ल, मिश्र, उपाध्याय,

भट्टाचार्य, अग्निहोत्री, वाजपेई आदि। इनकी उपाधियां कर्मों के आधार पर हैं

1. वेद पढ़ने से-द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि

2. अध्यापन करने से-उपाध्याय, पाठक, भट्टाचार्य आदि

3. यज्ञादि अनुष्ठान करने से—वाजपेई, अग्निहोत्री, अवस्थी और दीक्षित आदि

4. स्मार्त्त कर्मानुष्ठान से-मिश्र

5. शुद्ध निर्मल गुण कर्मों के अनुष्ठान से-शुक्ल

षटकुली कान्यकुब्ज ब्राह्मण

गोत्र	उपाधियां क्षा का अनुसार के अनु
कात्यायन	मिश्र, दुबे
शाण्डिल्य	तिवारी, अवस्थी, दीक्षित, अग्निहोत्री
भारद्वाज	दीक्षित, शुक्ल, त्रिवेदी, अग्निहोत्री
उपमन्यु	दीक्षित, अग्निहोत्री, दुबे, बाल्मीकि, पाठक
सांकृत	अवस्थी, त्रिवेदी, वाजपेई, शर्मा, चूड़ामणि
कश्यप	तिवारी, अवस्थी, दीक्षित, अग्निहोत्री, मिश्र, त्रिपाठी, मीठे, शुक्ल, पाण्डे, भट्टाचार्य
	कान्यकुब्जों के 16 गोत्र, प्रवर, आस्पद आदि
	सांकृत

वेद आस्पद शाखा गोत्र प्रवर क्र०सं० यजुर्वेद दीक्षित माध्यन्दिनी अंगिरा भारद्वाज 1. यजुर्वेद माध्यन्दिनी अवस्थी अत्रेय, ओर्वच्य कृष्णात्रेय 2. यजुर्वेद माध्यन्दिनी दीक्षित वशिष्ठ, भारद्वाज उपमन्य 3. यजुर्वेद माध्यन्दिनी तिवारी कौशिक विश्वामित्र, उद्दालक 4. यजुर्वेद अग्निहोत्री कौथुसी कश्यप, वत्स, नैधुव 5. कश्यप माध्यन्दिनी यजुर्वेद शुक्ल आगिरस, शाक्य सांकृत 6. माध्यन्दिनी त्रिपाठी यजुर्वेद भार्गवच्य, ओर्वच्य वत्स 7. कौथुनी तिवारी सामवेद आंगिरस, गार्ग्य गार्ग्य 8. यजुर्वेद माध्यन्दिनी पाठक वृहस्पत्य गौतम 9. कौथुमी दीक्षित सामवेद असित देवल शाण्डिल्य 10. यजुर्वेद माध्यन्दिनी तिवारी विशष्ठ पाराशर 11. कौथुमी अत्रेय, घनंजयेति दीक्षित सामवेद धनंजय 12. यजुर्वेद माध्यन्दिनी त्रिपाठी विशष्ठ 13. पाराशर यजुर्वेद माध्यन्दिनी तिवारी विशष्ठ ब्रह्म 14. यजुर्वेद माध्यन्दिनी दीक्षित अंगिरस, गार्ग्य कात्यायन 15. यजुर्वेद माध्यन्दिनी दीक्षित काविस्त ब्रह्मा 16.

कश्यप गोत्र

ब्रह्माजी के पुत्र मरीचि ऋषि, इनके पुत्र कश्यपजी। इन्हीं कश्यपजी के पुत्र देवल थे। देवल के पुत्र आशादत्तजी को शिवराज पुर के राजा ने अपना पुरोहित बनाया और चिंगीसपुर में एक यज्ञ कराया। दक्षिणा में शिवराजपुर सहित साढ़े दस ग्राम दिये और आधा चिंगीसपुर में अपनी राजधानी बनायी।

उन गांवों के नाम हैं—1. मनोह, 2. वरुआ, 3. सखरेज, 4. गौरी, 5. शिवराजपुर, 6. पचोर, 7. उमरी, 8. शिवली, 9. हरिवंशपुर, 10. गूदरपुर, 11. चिंगीसपुर आधा गांव। इस प्रकार से साढ़े दस गांव कश्यप गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के हैं।

मनोह गांव का वंश विस्तार

ग्राम	आस्पद
मनोह	तिवारी
ख्यूरा	तिवारी, अग्निहोत्री
करिंग	तिवारी
शिवराजपुर	तिवारी
औनहा	अवस्थी
ख्यूरा	आशादत्ती तिवारी
मनोह	वामनग्रन्थी तिवारी
चिंचोली	तिवारी
रतनपुर	तिवारी
वदरका	दीक्षित .
शिवली	अवस्थी
करुलुआ	अग्निहोत्री
लक्ष्मणपुर	मिश्र
ओहाग	तिवारी
नागरमऊ	दुबे
नवाये	अवस्थी .
खखरेज	तिवारी
कलुआ	अग्निहोत्री
कोड़ा	अग्निहोत्री
कठेरुआ	अग्निहोत्री
नगरा	मिश्र
रामपुर	गौतमाचार्य मिश्र
, , ,	दबे

आरी

क्र०सं०

1.
 2.
 3.
 4.

5.

1. 2. 3.

क्र०सं०

वीठलपुर	दीक्षित	
पिहानी	अवस्थी	
नवाये	अवस्थी	10 विश्वे
रतनपुर	तिवारी	5 विश्वे
चांदीपुर	तिवारी	7 विश्वे
बकसीर	तिवारी	9 विश्वे
मोरंग	तिवारी	7 विश्वे
सिरोज	अग्निहोत्री	8 विश्वे
वांगर	दुबे	5 विश्वे
शिवरामपुर	दुबे	5 विश्वे
लांथे	दुबे	5 विश्वे
हडहा	दीक्षित	20 विश्वे
उमू	दीक्षित	20 विश्वे
नौगांव	दीक्षित	15 विश्वे
नोदलपुर	दीक्षित	15 विश्वे
भगवन्तनगर	दीक्षित	
खखरेज	दीक्षित	
विराह	दीक्षित	
टेढ़ाग्राम	दीक्षित	20 विश्वे
खेड़े	दीक्षित	20 विश्वे
वरुआ	ग्रामवासियों का वं	श विस्तार
नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
सुगनापुर	दुबे	5 विश्वे
नागपुर	दुबे	5 विश्वे
आंटीपुर	दुबे	5 विश्वे
. वरुआ	तिवारी	7 विश्वे
गोपालपुर	तिवारी	7 विश्वे
वांगरमऊ	तिवारी	7 विश्वे
खखरेज	त ग्रामवासियों का व	श विस्तार
नाम ग्राम	आस्पद.	विश्वा
एकड़ा	तिवारी	10 विश्वे
हदरा	(तेवारी	9 विश्वे
आविनहार	तिवारी	8 विश्वे
A CONTRACTOR AND A CONTRACTOR	All the second to the second to the second	

ब्राह्मण गोत्रावली

4.	सांपेपुर	तिवारी	
5.	ऊंख्पुर	तिवारी	8 विश्वे
6.	असनी	तिवारी	8 विश्वे
7	अर्चितपुर	तिवारी	5 विश्वे
	गौरी ग	ामवासियों का वंश वि	8 विश्वे
क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	
1.	गौरी गांव	जास् यद तिवारी	विश्वा
			5 विश्वे
2.	जनकपुर	पंचभइया तिवारी तिवारी	5 विश्वे
3.	विद्वानपुर	पंचभइया तिवारी	5 विश्वे
4.	विहारपुर गांव	पंचभइया तिवारी	6 विश्वे
5.	मिथोली	अवस्थी	6 विश्वे
	खिर्मीपुर	अवस्थी	5 विश्वे
	शितग्रानाम	ज्यस्या ग्रामवासियों का वंश	3 विश्वे
क्र०सं०	नाम ग्राम		
1.	शिवराजपुर	आस्पद तिवारी	विश्वा
2.	पंचभइया		15 विश्वे
3.	बरहमपुर	पंचभइया तिवारी तिवारी	10 विश्वे
3.	भरत्मपुर चित्रस्ती र	गमवासियों का वंश वि	8 विश्वे
क्र०सं०	नाम ग्राम		
1.	शिवली	आस्पद	विश्वा
		तिवारी	9 विश्वे
2.	पकहापुर	तिवारी	9 विश्वे
3.	दिलीपपुर	तिवारी	10 विश्वे
4.	ककरदही	तिवारी	10 विश्वे
5.	पुरवा	तिवारी	3 विश्वे
6.	विहारपुर	तिवारी	3 विश्वे
7.	चढ़ीक	तिवारी	6 विश्वे
8.	शाहबाद	तिवारी	3 विश्वे
9.	नौवस्ता •	तिवारी	7 विश्वे
10.	वरूआ	तिवारी	5 विश्वे
11.	वीरपुर	तिवारी	5 विश्वे
12.	विहारपुर	तिवारी	5 विश्वे
13.	गूदरपुर	तिवारी	8 विश्वे

14.	विदारी	तिवारी	5 विश्वे
15.	दयालपुर	तिवारी	5 विश्वे
		वासियों का वंश विस	तार
क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	उमरीगांव	तिवारी	5 विश्वे
2.	चंचौली	तिवारी	8 विश्वे
3.	वरगदपुर	तिवारी	6 विश्वे
4.	धतूरा	तिवारी	5 विश्वे
5.	नैनी कुम्हराव गांव	तिवारी	5 विश्वे
6.	महोली	तिवारी	4 विश्वे
7.	मगेर	तिवारी	8 विश्वे
8.	शिवपुर	तिवारी	8 विश्वे
	पचोर ग्राम	वासियों का वंश विस	तार
क्र॰सं॰	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	दयालपुर	तिवारी	10 विश्वे
2.	श्रीपतिपुर	तिवारी	10 विश्वे
3.	रतनपुर	तिवारी	10 विश्वे
4.	चिंचोली	तिवारी	7 विश्वे
5.	पचोर	तिवारी	5 विश्वे
6.	विरामपुर	तिवारी	5 विश्वे
	हरिवंश पुर ग्र	ामवासियों का वंश वि	वेस्तार
क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	हरिवंशपुर	तिवारी	8 विश्वे
2.	छीतरपुर	तिवारी	8 विश्वे
3.	बोधीपुर	तिवारी	5 विश्वे
4.	गड़रीपुर	तिवारी	5 विश्वे
5.	हरवाई	तिवारी	5 विश्वे
6.	सपरीपुर	तिवारी	5 विश्वे
7.	घरवाईपुर	तिवारी	4 विश्वे
		मवासियों का वंश वि	
क्र॰सं॰	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	गूदरपुर गांव	तिवारी	10 विश्वे
2.	करुआ	तिवारी	7 विश्वे

3.	कठेरे	2 1	
		तिवारी	14 विश्वे
4.	महंगूपुर	तिवारी	11 विश्वे
5.	अनंगपुर	तिवारी	14 विश्वे
6.	छितावले	तिवारी	
7.	झगड़गांव	तिवारी	4 विश्वे
			4 विश्वे
8.	सिदुडा	तिवारी	4 विश्वे
9	वरुआ	तिवारी	10 विश्वे
10.	सपई	तिवारी	10 विश्वे
11.	पड़री	तिवारी	16 विश्वे
12.	कठेरुआ	तिवारी	19 विश्वे
13.	जहांगीराबाद	तिवारी	20 विश्वे
14.	वीरवली	तिवारी	2 विश्वे
15.	चचू	तिवारी	18 विश्वे
	चिंगीसपुर	ग्रामवासियों का व	श विस्तार
क्र०सं०	नाम ग्राम	आस्पद	विश्वा
1.	चिगिंसपुर	तिवारी	5 विश्वे
2.	जहांगीराबाद	तिवारी	5 विश्वे

शाण्डिल्य गोत्र की व्याख्या

ब्रह्माजी के पुत्र मरीचि ऋषि, उनके पुत्र कश्यपजी। कश्यपजी ने यज्ञ द्वारा शाण्डिल्य ऋषि को प्रकट किया। ये अग्नि-जैसे तेजस्वी थे। कहते हैं कि अग्नि का भी गोत्र शाण्डिल्य ही है।

शाण्डिल्य वंश में एक पुरुष महाप्रतापी हुआ। उसका नाम हुतासन था। हुतासन के वंश में मनोरथ तिवारी नामक एक उद्भट विद्वान् हुए। बुन्देलखण्ड के राजा को कोई पुत्र नहीं था। इन्होंने पुत्रेष्टि करायी। राजा का नाम अमरिसंह था। उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। राजपुरोहित का नाम विश्वनाथ था। उन्होंने प्रभावित होकर मनोरथ तिवारी से अपनी बेटी की शादी कर दी।

कुछ समय बाद दितया, उडैसा और महावर के राजाओं ने उन्हें बुलाया और तीनों उनके शिष्य हो गये। कुछ दिनों बाद वे हमीरपुर के पुरोहित बने और राजपुरोहित गंगाराम की बेटी से दूसरा विवाह किया। उस समय से ये तिवारी से मिश्र हो गये। इनकी निवास भूमि धतूरा थी, इसलिए वे धतूरा के मिश्र कहलाये।

पहली पत्नी से कमलनाभि नामक पुत्र हुआ। वह माता के साथ मऊ गांव में रहा, इसलिए मऊ का मिश्र कहलाया।

यहीं से शाण्डिल्य गोत्र का विस्तार हुआ। इनके वंशज विभिन्न गांवों में भिन्न-भिन्न उपाधियों से प्रसिद्ध हुए। कुछ गांव और शाण्डिल्य गोत्री ब्राह्मणों की उपाधियां आगे दी गयी हैं।

ग्राम	अस्पद	विश्वे
हमीरपुर	मिश्र	7 विश्वे
हमरीपुर	उपाध्याय	3 विश्वे
कपिला	मिश्र	10 विश्वे
योगपुर	मिश्र	5 विश्वे
योगपुर	दीक्षित	5 विश्वे
खानीपुर	मिश्र	7 विश्वे
असनी	शुक्ल	4 विश्वे
अंठेर	दीक्षित	15 विश्वे
नौगांव	मिश्र	10 विश्वे
अटेरी	दीक्षित	4 विश्वे
खानीपुर	मिश्र	20 विश्वे
भटेडरा	मिश्र	19 विश्वे
अंटेरा	मिश्र	15 विश्वे
असजी	मिश्र	15, 10 विश्वे
अंटेर	दीक्षित	20 विश्वे
वटपुर	दीक्षित	20 विश्वे
अंटेर	दीक्षित	18, 18, 19 विश्वे
वीरेश्वर	दीक्षित	20 विश्वे
वटपुर	दीक्षित	20 विश्वे
खानीपुर	मिश्र	20 विश्वे
कनौज	मिश्र	17 विश्वे
धोविहा	मिश्र	18 विश्वे
वटेश्वर	दीक्षित	18 विश्वे
वटपुरा	समाधान दीक्षित	67, 8, 7 विश्वे
वटपुर	दीक्षित	18 विश्वे
परसुपुर	मिश्र	20 विश्वे
गोपालपुर	मिश्र	15 विश्वे
वीरेश्वर	दीक्षित	6, 15, 14, 15 विश्वे
परसू	मिश्र	
धतुरा	तिवारी	3 विश्वे
- कठौता	तिवारी	3 विश्वे
कठौता	अवस्थी	3 विश्वे

अग्निहोत्री बटपुर 3 विश्वे लखनऊ उपाध्याय 3 विश्वे चिंचोली उपाध्याय 3 विश्वे

इस प्रकार शाण्डिल्य गोत्र में 17 पीढ़ी और 130 पुरुषों के वंश कर्ता पाये जाते हैं।

उपमन्यु गोत्र का वर्णन

ब्रह्माजी के पुत्र विशष्ट्रजी, इनके व्याघ्रपाद और व्याघ्रपाद के पुत्र का नाम था महर्षि उपमन्यु। महर्षि उपमन्यु के पुत्र का नाम था सिंघुप्रद। बहुत दिन बाद इसी कुल में 'भूप' नामक एक विद्वान् पैदा हुए। इन्होंने पिनाक पुर के राजा धर्मपाल को अपना शिष्य बनाया। राजपुरोहित ने इनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर अपनी पुत्री के साथ इनका विवाह कर दिया। पं० भूपजी ने जुजुहूतपुर में एक महायज्ञ किया था। तब से ये जुजुहूतपुर के दीक्षित हो गये। यहीं से इनका वंश विस्तार हुआ। इनके वंशज विभिन्न गांवों में विभिन्न उपाधियों से (आस्पद) से सम्बोधित होने लगे। इनमें से कुछ निम्नलिखित

6—	The root of the same		
गांव	उपाधियां े	गांव	उपाधियां
नागपुर	पाइक	त्योरासी	अवस्थी
यज्ञपुर	दुंबे	सरमऊ	मिश्र
दरियाबाद	अवस्थी	मखपुरा	मिश्र
सेठपुर	पाइक	परसुहा	मिश्र
विसोरा	अवस्थी	मुर्दवान	मिश्र
एकडला	त्रिवेदी	पहुआं	थलई के दीक्षित
चन्दनपुर	वाजपेयी	भैसई	दुबे
निसुरा	पाठक	जोनपुर	अग्निहोत्री
जानापुर	पाठक	गौरा	वाजपेयी
अंगई	पाठक	कदरी	वाजपेयी
ओमीपुर	अवस्थी	रायपुर	वाजपेयी
चन्दनपुर	वाजपेयी	लखनऊ	वाजपेयी
शाहाबाद	पाइक	खपेलहा	वाजपेयी
मौराये	पाठकं	त्योरासी	अवस्थी
वेनभामऊ	पाइक	एकडला	त्रिवेदी
मौराये	अवस्थी	इटावा	घरवास के दुबे
सरवन	अवस्थी	नेमिष	दीक्षित
जयगांव	अवस्थी	उज्जैन	अग्निहोत्री
दरियाबाद	अवस्थी	ऊंगू	अग्निहोत्री
मतिपुर	अवस्थी	लखनऊ	वाजपेयी

	ब्राह्मण गोत्रावली

गोरागांव	अवस्थी	वटेश्वर	महामुनि के वाजपेई
मौराये	अवस्थी	चिल्लोली	
मौराये	मिश्र	भैसई	दुबे
मौराये	दुबे	सेपई	दुबे
मौराये .	वाजपेयी	भोजपुर	दु बे दु बे दु बे दु बे दु बे
सिंहपुर	अवस्थी	उन्नाव	दुबे
एकडला	अठमइया अवस्थी	ओमीपुर	अवस्थी
वेनमामऊ	पाठक	पिनोरी	अवस्थी
पसिगावां	दुबे	मीठापुर	उपाध्याय े
रिकड़ी	अग्निहोत्री		

इस प्रकार उपमन्यु गोत्र में 20 पीढ़ी और 204 पुरुष वंशवृद्धिकर्त्ता हुए।

88

कात्यायन गोत्र का वर्णन

ब्रह्मिष विश्वामित्र के गोत्र में महर्षि कात्यायन का जन्म हुआ था। इनके गोत्र में चतुर्भुज द्विवेदी बड़े विद्वान् और प्रसिद्ध हुए। उन्हीं से कात्यायन गोत्र का वंश विस्तार हुआ। उनके वंशज विभिन्न गांवों में विभिन्न उपाधियों से प्रसिद्ध हुए। कुछ गांवों और उनमें बसने वाले कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मणों की उपाधियां निम्नलिखित हैं।

टिकरिया	दुबे	5 विश्वे
कंजपुर	मिश्र	10 विश्वे
वदरिका	मिश्र	10 विश्वे
सिरिकटा	दुबे	10 विश्वे
ववनाटोला	मिश्र	15, 10 विश्वे
वैजगांव	मिश्र	15 विश्वे
पासीखेरे	मिश्र	14 विश्वें
गलेथें	मिश्र	11 विश्वे
राजपुर	अग्निहोत्री	10 विश्वे
ववनाटोला	मिश्र	13, 14, 14 विश्वे
वरुआ	मिश्र	14 विश्वे
पत्योना	दुबे	7 विश्वे
नलहारपुर	मिश्र	7 विश्वे
पासीखेरे	मिश्र	15 विश्वे
मलौथे	मिश्र	13, 14, 14 विश्वे
वदरिका	अग्निहोत्री	3 विश्वे
रामनुर	मिश्र	14 विश्वे

-		
हड़हा	वैजगांव के मिश्र	10 विश्वे
विहगांव	अग्निहोत्री	10 विश्वे
मोतीपुर	अग्निहोत्री	3 विश्वे
चोदीपुर	अग्निहोत्री	
रामपुर	मिश्र	8 विश्वे
मुठिया		5 विश्वे
	मिश्र	20 विश्वे
आंकन	मिश्र	19 विश्वे
मैदान	मिश्र	14 विश्वे
बदरिका	आंकिव के मिश्र	20 विश्वे
मझगांव	मिश्र	20 विश्वे
निवादा	मिश्र	18 विश्वे
कन्नौज ग्वाल मैदान	अनिरुद्ध मिश्र	20 विश्वे
बांकीपुर	मिश्र	1 विश्वे
नौगांव	सुठिया के मिश्र	17 विश्वे
मुरादाबाद	आंकिन के मिश्र	20 विश्वे
मांझागांव	मिश्र	20 विश्वे
निवादा	आंकिन के मिश्र	16, 17, 16, 18 विश्वे
गोपाभऊ	मिश्र	10 विश्वे
कांकोरी	मझगांव के मिश्र	20 विश्वे
कांकोरा	मझगांव के मिश्र	18, 18 विश्वे
पिहानी	मिश्र	10 विश्वे
महर्षि कात्यायन के वंश में	10 पीढ़ी और 116 पुरुष	वंशकर्ता हुए।

भारद्वाज गोत्र का वर्णन

ब्रह्माजी के पुत्र अंगिरा ऋषि। इनके बृहस्पतिजी। इनके भारद्वाजजी, भारद्वाज के द्रोणाचार्य और द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वथामा हुए। इसी वंश में बहुत दिनों के बाद सत्याधर, वामदेव लोकप्रसिद्ध परम विद्वान् हुए। इनका घर तरी गांव में था, इसलिए ये 'तरी के शुक्ल' कहलाये। यहीं से इनका वंश विस्तार हुआ और इनके वंशज विभिन्न गांवों, विभिन्न उपाधियों (आस्पदों) से विभूषित हुए।

गांवों के नाम	आस्पद (उपारि
विहगपुर	शुक्ल
नवाये	शुक्ल
मणिकण्ठपुरवा	शुक्ल
गूदरपुर	शुक्ल
चन्द्रप्र	शुक्ल

शुक्ल

ऊंचेगांव ——^	शुक्ल पाण्डेय
वनस्थी	
पाटन	शुक्ल
चौसा	शुक्ल
चन्दनपुर	शुक्ल
गौरा	पाण्डेय
कपिल	[`] पाण्डेय
पटियारी	पाण्डेय
दीलीपपुर	शुक्ल
- }	प्रिथ अ

मिश्र और शुक्ल भानु शुक्ल चौसा

गौड़हा शुक्ल पाण्डेय भीष्मपुर पाण्डेय लखनऊ

(गली) खोरी में रहने के कारण भैरव—खोरी के पाण्डे कहलाये

वेला	पाण्डेय	हरिदासपुर	पाण्डेय
डोडियाखेरे	पाण्डेय	मुखीमनुर	पाण्डेय
गोडिहा	शुक्ल	बररी	पाण्डेय
महोली	शुक्ल	जहानावाद	पाण्डेय
सिकटिया	शुक्ल	गामेथे	शुक्ल
गलेंथे	शुक्ल	हफजाबाद	शुक्ल

वागीस विहगपुर शुक्ल

(न्याय शास्त्र में शृगार महाचार्य की उपाधि दिलीपपुर शुक्ल

		पाया)	
सांढ़	त्रिवेदी	महाचार्य कन्नौज	
अधमपुर	शुक्लं	भइसई	शुक्ल
कान्हा	त्रिवेदी	सनसलपुरी	पाण्डेय
संगोसो	पाण्डेय	पहतिया	पाण्डेय
विहगपुर	शुक्ल	हफीजाबाद	'शुक्ल
लहुरी गांव	त्रिवेदी	वागीश	शुक्ल
तोधकपुर	त्रिवेदी	साहनपुर	शुक्ल
उधनपुर	शुक्ल	मिवाद .	शुक्ल
भैंसोई	शुक्ल	सकूराबाद	शुक्ल
पाटन	शुक्ल	छन्नी	शुक्ल

विगहपुरी	मकरन्द के शुक्ल	निवाहा	W-1
लखनऊ	महाचार्या	वसई	शुक्ल
असनी	पाण्डेय	वरौली	शुक्ल
बिहारीयोरा	पाण्डेय		शुक्ल
इटौजा	पाण्डेय	पतिहा	शुक्ल
		बेका	पाण्डेय
वागीशपुर	पाण्डेय	सुसौरा	पाण्डेय
वनगांव	पाण्डेय	मौराव	पाण्डेय
मनोह	पाण्डेय		
नाथपुर	पाण्डेय	26.7.7	

इस प्रकार भारद्वाज गोत्र में सत्याधर से गिरवर तक 16 पीढ़ियों में 265 पुरुष वंशकर्त्ता हुए। सांकृत गोत्र का वर्णन

ब्रह्माजी के पुत्र भृगु ऋषि के वंश में सांख्यायन ऋषि हुए। इनके पुत्र गगन को गौर्वे कहा जाता है। इन्हीं गगन ऋषि के पुत्र का नाम था सांकृत। सांकृत के पुत्र जीवाश्व महान् विद्वान् और लोकप्रसिद्ध हुए। इन्हीं के पुत्र पृथ्वीधर थे। इनसे कौशिकपुर के राजा ने 'आवस्थ्य' नामक यज्ञ कराया और पृथ्वीधरजी को अवस्थी कहा। तब से ये कौशीकपुर के अवस्थी कहलाये।

इनसे ही सांकृत गोत्र का वंश विस्तार हुआ। ये विभिन्न गांवों में विभिन्न उपाधियों से सम्बोधित

होने लगे।

गांव	उपाधियां	गांव	उपाधियां
कौशिकपुर	शुक्ल .	गहिरी	शुक्ल
कौशिकपुर	त्रिगुणायत अवस्थी	फतेहाबाद	पुरैनिया के शुक्ल
पुरैनिया	नवेले के शुक्ल	कौशिकपुर	'मिश्र
गौरा	शुक्ल	विजौली	दुबे
गहेरी	शुक्ल	जाजमऊ	मिश्र
डोमनपुर	शुक्ल	चचंडी	मिश्र
इटावा	मिश्र	. नमेला	शुक्ल
401-11		•	

इस प्रकार सांकृत गोत्र में 8 पीढ़ी और 42 पुरुष वंशकर्ता हुए।

उस्तरे और कटोरे पूजक कश्यप गोत्र का विवरण

संवत् 1564 विक्रमी में भदारपुर के अधिपित ब्राह्मण थे। एक बार ब्राह्मणों और यवनों में भयानक युद्ध हुआ। युद्ध में सारे ब्राह्मण औरत-मर्द सभी मारे गये। संयोग से पं॰ अनन्तराम की पत्नी बच गयी। वह गर्भवती थी। उस अनाथ गर्भवती महिला को स्योना नाम का एक नाई, जो मदारपुर गांव के ब्राह्मणों का भक्त था, अपने ससुराल कुतमऊ नामक गांव में ले गया।

पं॰ अनन्तराम की पत्नी के सभी सगे-सम्बन्धी युद्ध में मारे गये थे, इसलिए वह महिला बहुत ही दुखी रहती थी और बहुत कमजोर हो गयी थी। फलत: बच्चे के जन्म के साथ ही उसकी मृत्यु हो गयी।

स्योना नाई ने उस बालक को अपने पुरोहित कश्यप गोत्रीय चिंचोली के तिवारी को पुत्र रूप में दे दिया और इन्हीं सुखमणि तिवारी से उस ब्राह्मणी की अन्त्य क्रिया भी करवायी तथा बालक का जात कर्म आदि संस्कार कराया। बालक का नाम गर्भू रखा गया। पुत्रहीन सुखमणि तिवारी ने उस बालक को पुत्र रूप में अपना लिया। उसको भली-भांति वेदाध्ययन कराया। गर्भू के कुल में नाई के उपकार को ध्यान में रखकर आज भी 'उस्तरे और कटोरे' की पूजा होती है।

इसी गर्भू से 'उस्तरे और कटोरे' पूजक कश्यप गोत्र का वंश विस्तार हुआ, जो निम्न प्रकार से है।

	6		יוו, יוו וו ואיזוו נ
गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
मदारपुर	कुतुमौवा के तिवारी	रिवाड़ी	शुक्ल
वितोरे	अग्निहोत्री	मदारपुर	क्यूना के दीक्षित
वड़ेरा	तिवारी	कुतमऊ	दीक्षित
तिरोली	तिवारी	कोड़री	दीक्षित
गल्हैया	दुबे	विहारपुर	दीक्षित
नागापुर	दुबे	शाहाबाद	दीक्षित
सगुनापुर	दुबे	सेहुंणा	दीक्षित
विनहारपुर	दुबे दुबे दुबे दुबे	खरमुआ	अवस्थी
मगरायलपुर	दुबे	गरहा	दीक्षित
कृपालपुर	मिश्र	ककुहा	अग्निहोत्री
भागीरथी	दीक्षित .	खिरोली	अवस्थी
निवोली	शुक्ल	ख्यूरा	अवस्थी
मिगलानी	अवस्थी	महनिहार	दुबे
विठूर	दुबे	ठाठविलार	दुबे दुबे दुबे दुबे
अग्निपुर	अग्निहोत्री	इच्छावर	दुबे
कठेरुआ	अग्निहोत्री	लहुरीपुर	दुबे
नगरा	मिश्र	तिवारीपुर	तिवारी
क्यूनापुर	दीक्षित	नगरा	मिश्र
गर्ग गोत्र का विवरण			

गर्ग गोत्र का विवरण

श्री गर्गाचार्यजी यदुवंशियों के पुरोहित थे। उनके वंश में महानन्द चौबे लोकप्रसिद्ध विद्वान् हुए। इनसे ही गर्ग गोत्र का विस्तार है। विभिन्न गांवों में विभिन्न आस्पदों से ये सम्बोधित होते हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
डोडियाखेरे	चौबे	संतर	अग्निहोत्री
पिहानी	चौबे	धोकली	उपाध्याय
अगकी	चौबे	त्रिपुरारीपुर	पाठक
जिनखीपुर	चौबे	उन्नवा	- दुबे

शिवराजपुर पचोरे पिहाने कन्नौज पड़री खिऊलिहा सदनिया	अवस्थी पाण्डे पाण्डे पाण्डे पाण्डे दुबे	गरगैया गांव सिरौनी गुदरीपुर अमहारा सांपी छीटपुर	चौबे पाठक पाठक पाठक पाठक तिवारी पाठक
सदानया	दुबे		

गौतम गोत्र का वर्णन

महर्षि गौतम न्यायशास्त्र के आचार्य थे। उनके वंश में गौतमी गंगा के तट पर धनावली ग्राम में माधवानन्द शुक्ल उद्भट विद्वान् और लोकप्रसिद्ध हुए। उनके 5वीं पीढ़ी में त्रिपुर मर्दन नामक तेजस्वी विद्वान् हुए। इन्हीं से गौतम गोत्र का वंश विस्तार हुआ, जो विभिन्न गांवों में विभिन्न उपाधियों से सम्बोधित होते हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
धनावली	शुक्ल	चिलौली	पाण्डेय
त्रिपुरारिपुर	शुक्ल	गुलोली	पाण्डेय
गहख	तिवारी	गूंगरपुर	मिश्र
बाढ़पुर	. तिवारी	पोखरा	मिश्र
विसनहार	तिवारी	त्रिपुरारि	अवस्थी
चकलापुर	अग्निहोत्री	गूगरपुर	अवस्थी
सुकुनपुर	अग्निहोत्री	नवलपुर	अवस्थी
भदेश्वरी	दुबे	वीरमपुर	दुबे
दीनगलौली	दुबे	भोगीपुर	अवस्थी
		त्र का वर्णन	

भारद्वाज संहिता में लिखा है कि बाण विद्या का प्रचार करने वाले भारद्वाजजी बड़े तपस्वी थे। उनके शिष्य तपोधन नामक ब्रह्मचारी ने गुरु की आज्ञा से चित्रकूट के राजा महिपाल अभिवंशोत्पन्न की सौभाग्यवती नामक कन्या से विवाह किया।

तपोधन ने अंगेठ नामक गांव में बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों को आमन्त्रित कर अग्निहोत्र यज्ञ किया। ऋषियों ने प्रसन्न होकर तपोधन को अग्निहोत्री कहा और उनका गोत्र भारद्वाज बताया। इन्हीं तपोधन की 7वीं पीढ़ी में धीरधर नामक लोकविख्यात विद्वान् हुए। यहीं से भारद्वाज गोत्र का विस्तार हुआ। ये अनेक गांवों में विविध उपाधियों से सम्बोधित होते हैं।

आस्पद	गांव	आस्पद
	राधी	पाण्डेय
	सपडेल	दीक्षित
	आस्पद अग्निहोत्री तिवारी	अग्निहोत्री राधी

तिवारीपुर	तिवारी	ख्यूरा	दीक्षित
चौसा	दुबे	जहानाबाद	दीक्षित
गिहोनी	दुबे	डोडियाखेरे	दीक्षित
स्थूला	दुबे दुबे दुबे	कल्हारी	दीक्षित
रोधनपुर	शुक्ल	हडाडे	दीक्षित
गड्डमऊ	दीक्षित	गडमऊ	दीक्षित
पहितिया .	पाण्डेय	भसौरा, सनहा	शुक्ल
खोरिहा	तिवारी	पहितिया	पाण्डेय
इच्छावर	उपाध्याय	शान्तिपुर	पाण्डेय
वरुआ	दुबे	शिविसहायपुखा	तिवारी
इच्छावर	दुबे दुबे दुबे दुबे	ऐन	पराशर दुबे, ऐर्न
रेगांव	दुबे	पठोरे	मिश्र
उनैया	दुबे	भदेश्वर	दुबे
अंगेठा	अग्निहोत्री	मलोहावादी	उपाध्याय
सगुनापुर	आध्वर्यू	सोनिहा	पाठक
सोनिहा	पाठक	नागपुर	पाठक
भमरायल	पाठक	नवरतन	पाठक
चौसा	पाठक	जहानाबाद	पाठक
रामों ० मीरी और 52 म	क्रम तंप्रावितकर्ना द्या ।		

इसमें 9 पीढ़ी और 52 पुरुष वंशवृद्धिकर्त्ता हुए।

धनञ्जय गोत्र का वर्णन

श्रीमद् भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध के उत्तरार्द्ध में एक कथा आती है-

द्वारिकापुरी में एक ब्राह्मण रहता था। उसके बच्चे जब होते थे, तो पैदा होते ही मर जाते थे। पुत्र शोक से पीड़ित वह ब्राह्मण बालक के शव को ले जाकर राजा उग्रसेन की सभा में रख देता था और राजा को बुरा-भला कहकर घर आ जाता था। उसकी मान्यता थी कि राजा के पाप से ही प्रजा दुखी होती है।

इस प्रकार जब नौवें बच्चे के शव को उग्रसेन की राजसभा में रखा और पूर्ववत अपशब्द कहने लगा, तो उस समय वहां अर्जुन बैठे हुए थे। उन्होंने कहा, ''ब्राह्मण देवता! आपके अगले पुत्र को मैं मरने नहीं दूंगा। आप प्रसन्न होकर जाइये।'' ब्राह्मण ने तिरस्कार का भाव व्यक्त करते हुए कहा, ''क्या प्रलाप कर रहे हो। जिस काम को साक्षात् नारायण स्वरूप भगवान् कृष्ण नहीं कर सकते, उस काम को करने की डींग हांकने वाला तू कौन है?'' अर्जुन ने कहा, ''ब्राह्मण देवता! मैं अर्जुन बोल रहा हूं। गाण्डीवधारी अर्जुन, और बोल ही नहीं रहा हूं, बिल्क प्रतिज्ञा भी कर रहा हूं कि यदि बालक को नहीं बचा सका, तो अग्नि में प्रवेश कर जाऊंगा।''

ब्राह्मण लौट आया और जब दसवें पुत्र के प्रसव का समय आया, तो अर्जुन को सूचित किया।

अर्जुन अपने गाण्डीव के साथ पहुंचे और सूतिका गृह को चारों ओर से दिव्यास्त्रों से आच्छादित कर दिया।

हर बार तो शव मिल भी जाता था, इस बार तो शव ही गायब हो गया। क्रोधी और दुखी ब्राह्मण अर्जुन के अभिमान को धिक्कारने लगा। अर्जुन ने कहा, ''विप्रवर! आप घबरायें नहीं। मैं कहीं से भी आपका बालक लाकर दूंगा।"

अर्जुन अपनी गति और ज्ञान के अनुसार अनेक दिव्य लोकों में गये, किन्तु निराशा ही हाथ लगी। अन्त में जब आत्मदाह की तैयारी की, तो भगवान् कृष्ण उनको रोकते हुए महानारायण के गोलोक में लेकर गये और वहां से ब्राह्मण के दसों पुत्रों को लेकर आये। ब्राह्मण सारे मरे हुए पुत्रों को जीवितावस्था में पाकर परम प्रसन्न हुआ। अर्जुन ने उन दस लड़कों में से एक लड़के को मांगा। ब्राह्मण ने सहर्ष एक पुत्र को अर्जुन के हाथ में सुपुर्द कर दिया।

अर्जुन ने उस बालक का नाम कृष्णानन्द रखा। भगवान् कृष्ण ने कहा, ''तुमने हमारे नाम क अनुसार इस लालक का नाम रखा है, इसलिए में वरदान देता हूं कि तुम्हारे नाम पर इसका गोत्र चलेगा।'' धनञ्जय नाम से गोत्र विख्यात हुआ। महर्षि गर्गाचार्य ने बालक का उपनयन संस्कार किया और अर्जुन ने उसे महर्षि संदीपनी ऋषि के पास पढ़ने के लिए भेज दिया। उनके वंश में पुष्करानन्द और पुष्पानन्द नामक दो भाई बड़े उद्भट्ट विद्वान् हुए। ये धनञ्जय वंश के विस्तारक हैं। इनके गांव और आस्पद निम्नलिखित हैं।

गांव	आस्पद
नौरंगाबाद	. तिवारी
मन्मथारिपुर	दीक्षित
सुन्दरपुर	दुबे
पाली	अवस्थी
तलेसरा	अवस्थी
अम्बरसर	अवस्थी

इस प्रकार धनञ्जय गोत्र में तीन पीढ़ी और 12 पुरुषों से वंशवृद्धि हुई।

वत्स गोत्र का वर्णन

ब्रह्माजी के वंश में वत्स मुनि एक उद्भट्ट तपस्वी थे। उनके वंश में कई पीढ़ियों के बाद माध्वानन्द लोकप्रसिद्ध विद्वान् हुए। उन्हीं से वत्स गोत्र का विस्तार हुआ। इनके गांव और उन गांवों में रहने वालों के विविध आस्पत निम्नलिखित हैं।

विविध्य आस्पद । ग		गांव	आस्पद
गांव	आस्पद	अर्गलापुर	तिवारी
सांपनी	तिवारी		तिवारी
रोतापुर	तिवारी	रायपुर	
माकनपुर	तिवारी	आकापुर	पाण्डे
	मिश्र	हिंगुजपुर	मिश्र
सत्सरपर			

सिमौनी	शुक्ल	हथमरिया	दीक्षित
पटना	दुबे	. रायपुर	दुबे
धोकली	दुबे दुबे	हिलोरी	शुक्ल
जवापुर	पाठक	ं जानाबकी	पाण्डेय
भदरसी	पाण्डेय	सेढ़रपुर	पाण्डेय
भगवानपुर	पाण्डेय	धोकली	अग्निहोत्री
कोसरिहा	दुबे	ख्यूरा	दुबे
ख्यूलिहा	दुबे	शिवराजपुर	दुबे दुबे
फफुन्द	रावत .	रावतपुर	पाण्डेय
नेवाला	पाण्डेय	धोकली	पाण्डेय
धोकली	उपाध्याय	ठकु रिया	पाण्डेय
बन्धना	पाठक	हरिदासपुर	पाण्डेय
मियागंज	पाठक	सिमौनी	दुबे
बर्गलपुर	दुबे		
The second secon	7. 00 1		

इस प्रकार वत्स गोत्र में 7 पीढ़ी और 38 पुरुष वंशवृद्धिकर्त्ता हुए।

विशष्ठ गोत्र का वर्णन

महर्षि विशष्टजी ब्रह्माजी के पुत्र और सूर्यवंश के पुरोहित थे। इनके वंश में महानन्द नामक एक विश्वविख्यात विद्वान् पैदा हुए। उन्हीं से विशष्ट गोत्र का विस्तार हुआ। इनके ग्राम और उन ग्रामों में रहने वालों की विभिन्न प्रकार की उपाधियां निम्नलिखित हैं।

		~ · · · · ·	
गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
मौराये	एकावशिष्ठी चौबे	हन्नूपुर	तिवारी
मोतीपुर	चौबे	ख्यूरा	चौबे
मोधनी	चौबे	ख्यूरा	पाठक
मितपुर	चौबे	ब्रह्मशील	दीक्षित
जालारी	दुबे	वगीरया	दीक्षित
लहरपुर	दुबे	सगुनापुर	दीक्षित
आंटीपुर	चौबे	डोडियाखेरे	चौबे
रामपुर	अवस्थी	संगुनापुर .	दुबे
कन्गौज	चौबे		3'

इस प्रकार विशष्ठ गोत्र में ७ पीढ़ी और १७ पुरुषों द्वारा वंश विस्तार हुआ। कौशिक गोत्र का वर्णन

महाराज कौशिक गोत्री राजा गाधि के पुत्र महर्षि विश्वामित्र ने तपस्या के बल से ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया। विश्वामित्र का एक नाम कौशिक भी है। इसी वंश में कालान्तर में देवकीनन्दन नामक एक

विद्वान् हुए, जो दो वेदों में पारंगत थे। ये मदेसी गांव में रहते थे। इनकी कोई औलाद नहीं थी। विद्वान् ब्राह्मणों को बलाकर इन्होंने पुत्रष्टि किया।

ब्राह्मणों ने इन्हें पुत्रवान होने के आशीर्वाद के साथ अवस्थी की उपाधि से विभूषित किया। उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और उसका नाम शोभादत्त रखा गया।

यहीं से कौशिक गोत्र का विस्तार हुआ। विभिन्न गांवों के अनुसार उपाधियों का विवरण निम्नलिखित है।

गांव भदेसी मुचापुर पिहानी कपिला	आस्पद अवस्थी अवस्थी अवस्थी त्रिगुणपाल	गांव कपूरथला कुंजुकलिंग जिलहपुर इटावा	आस्पद पाइक दीक्षित दीक्षित दुबे
ऐठान	तिवारी	संकेतपुर	मिश्र
बहरामपुर ख्यूरा	मिश्र अग्निहोत्री	शिवंराजपुर	रावत

इस प्रकार कौशिक गोत्र में छह पीढ़ी और 18 पुरुषों द्वारा वंश का विस्तार हुआ है।

कविस्त गोत्र का वर्णन

महर्षि कविस्त ब्रह्माजी के वंशज हैं। इस वंश में पण्डित योगराज एक लोकप्रसिद्ध विद्वान् हुए हैं। इन्हीं योगराज से कविस्त गोत्र का वंश विस्तार हुआ है। जिनके गांव और आस्पद निम्नलिखित हैं।

गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
नसुराले	दुबे	विलखारी	पाठक
धामपुर	पाठक	विलखारी	पाठक
नानामऊ	पाण्डेय	किनावा	त्रिगुणापत
गुगुरुहा	दुबे	चेंचेडी	चौबे
विट्ठलपुर	चौबे	कजरी	अवस्थी
मटपुरा	दुबे	मंगलपुर	मिश्र
चिंचोली	दुबे	शीतल	अग्निहोत्री
199101	37		

इस प्रकार कविस्त गोत्र में 5 पीढ़ी और 14 पुरुष गोत्रकर्त्ता हुए।

पराशर गोत्र का वर्णन

महर्षि पराशर के वंश में शक्तिधर नामक विश्वविख्यात विद्वान् हुए। इनसे पराशर गोत्र का विस्तार

७आ। इनक गाव आर	आस्पद ।नम्नालाख्य र		2000
ं गांव	आस्पद	गांव	आस्पद
	नागपुरी पराशरी दुबे	नागपुर	नागपुरी शुक्ल
नागपुर		सिमोनी	पराशरी दुबे
नागपर	तिवारी	171 a a	9

नरवरपुर	दुबे	वसई	दुबे
सिमोनी	अवस्थी	सिमोनी	मिश्र
सिमोनी	पराशरी दीक्षित	गुदरियापुर	शुक्ल
षहाड़पुर	तिवारी	पटना	मिश्र
			-

सिमोनी पाठक

इस प्रकार महर्षि पराशर के गोत्र में 5 पीढ़ी और 15 पुरुष वंशवृद्धिकर्त्ता हुए।

प्राचीन भृगु संहिता महाशास्त्र

(संस्कृत-हिन्दी) (भाषा टीका सहितम्) यह ग्रन्थ सभी ग्यारह खण्डों में हमारे यहां उपलब्ध हैं।

- भृगु संहिता कुण्डली खण्ड
- ♦ (1895 संवत् से 2020 संवत् तक)
- भृगु संहिता फलित खण्ड
- भृगु संहिता स्त्री फलित खण्ड
- भृगु संहिता राज खण्ड
- भृगु संहिता नरपित जयरचिरया स्वरोदय खण्ड

- भृगु संहिता मूक प्रश्न विचार खण्ड
- भृगु संहिता सन्तान उपाय खण्ड
- भृगु संहिता नष्ट जन्मांग दीपिका खण्ड
- ♦ भृगु संहिता जातक प्रकारण खण्ड
- भृगु संहिता सर्वारिष्ट निवारण खण्ड
- सोने की चिड़िया

Rs. 4800/-

प्राप्ति स्थान

डी.पी.बी. पब्लिकशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पी. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑ.) 23251630, (दु.) 23273220, (नि.) 23847320, (मो.) 9811648916

सरयू पारीण बाह्मणोत्पत्ति

लंका विजय करके जब भगवान् राम अयोध्या लौटे, तो उन्हें जितनी विजयी होने की प्रसन्नता थी, उससे अधिक दु:ख इस बात का था कि मैंने एक विद्वान्, तपस्वी और कुलीन ब्राह्मण की हत्या की है, तो हमें ब्रह्महत्या का दोष तो लगा ही होगा। इसलिए उन्होंने देश को बड़े-बड़े ऋषियों से अपनी पीड़ा बतायी और ब्रह्महत्या से निवृत्ति का मार्ग पूछा। ऋषियों ने भगवान् राम की बातों का समर्थन करते हुए उन्हें अश्वमेध यज्ञ करने की सलाह दी।

यज्ञ का आयोजन हुआ। देश के उद्भट्ट विद्वान् और तपस्वी पधारे। यज्ञ में कन्नौज के दो महान् विद्वान् और तपस्वी कान्य और कुब्ज भी पधारे। ये दोनों भाई थे। कान्य छोटे और कुब्ज बड़े। यज्ञ में इनका प्रमुख स्थान था। जब यज्ञ समाप्त हो गया, तो कुब्ज ने सोचा, 'अब तो भगवान् राम दक्षिणा का वितरण करेंगे। राम एक राजा हैं। राजा का प्रतिग्रह तो ऐसे ही दूषित होता है; क्योंकि वह सम्पत्ति पसीने की कमाई की नहीं होती। वह जनता से वैध-अवैध तरीके से उगाही सम्पत्ति होती है। इसलिए ऐसे राजा का दान भी नहीं लेना चाहिए। यदि राजा प्रायश्चित कर रहा हो और वह भी साधारण पाप का नहीं, बल्कि एक विद्वान्, कुलीन और तपस्वी ब्राह्मण की हत्या का, तो वह कितना भयानक दान होगा? यह सोचा जा सकता है।'

महर्षि कुब्ज दान-दक्षिणा लेने के भय से चुपचाप अयोध्या से सरयू नदी पारकर सरयू से उत्तर की दिशा में चले गये। उनके पीछे-पीछे और भी बहुत सारे ब्राह्मण चले आये। ये ब्राह्मण सरयू नदी पार करके दक्षिणा लेने के भय से भागे थे, इसलिए इनको सरयू पारीण या सरजू-पारी या सरबरिया कहते हैं।

सरयू पारीण ब्राह्मणों का ऋषि गोत्र

सरयू पारीण ब्राह्मणों में निम्नलिखित ऋषियों के गोत्र मिलते हैं-

1. गर्ग, 2. गौतम, 3. शाण्डिल्य, 4. पराशर, 5. सावर्णि, 6. कश्यप, 7. वत्स, 8. भारद्वाज, 9. कोशिक, 10. उपमन्यु, 11. वशिष्ठ, 12. घृत कौशिक, 13. गार्ग्य, 14. गर्दभीमुख, 15. भृगु, 16. भार्गव, 17. अगस्त्य, 18. कौण्डिन्य आदि।

सरयूपारी ब्राह्मणों के भेद

सरयू पारीण ब्राह्मणों में तीन श्रेणियां मिलती हैं-

- 1. त्रिकुल (प्रथम श्रेणी)
- 2. त्रयोदश कुल (द्वितीय श्रेणी)
- 3. तीसरी श्रेणी त्रिकुल को तीन और त्रयोदश कुल को तेरह कहते हैं। त्रिकुल वाले गर्ग, गौतम और शाण्डिल्य

गोत्री ब्राह्मण अपने को श्रेष्ठ ब्राह्मण मानते हैं।

नोट—कुल से कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। छोटा-बड़ा बनाने वाला अपना चरित्र होता है। कहा है—

ऊंचे कुल का जनिमयां करनी उच्च न होय। सुवरन कलश सुरा भरा साधु निन्दै सोय।

तो ये त्रिकुल, त्रयोदश कुल और एक तृतीय श्रेणी भी मात्र सम्बोधन के लिए है।

1. गर्ग, 2. गौतम, 3. शाण्डिल्य, 4. भारद्वाज, 5. वत्स, 6. घृत कौशिक, 7. गार्ग्य, 8. सावर्ण्य, 9. गर्दभीमुख, 10. सांकृत, 11. कश्यप।

11 गोत्रों से तीन और तेरह, अर्थात् सोलह घर इन ब्राह्मणों के भेद कहे गये हैं। गर्ग, गौतम,

शाण्डिल्य-इन तीन कुलों की संतित त्रिकुल या प्रथम श्रेणी में गिनी जाती है।

1. पयासी, 2. समुदार, 3. धर्मपुरा, 4. चौरा कांचनी, 5. गुर्दवान, 6. बृहदग्राम, 7. माला, 8. पाला, 9. पीण्डी, 10. नागचोरी, 11. इटाये, 12. त्रिफला तथा 13. इटिया।

ये ही तेरह स्थान हैं। ये द्वितीय श्रेणी के कहे जाते हैं।

अगस्त्य, कौन्डन्य, पराशर, विशष्ठ, भार्ग, कात्यायन, गार्ग्य, उपमन्यु, कौशिक तथा भृगु और इनके अतिरिक्त अन्य गोत्र वाले सरयूपारीण तीसरी श्रेणी के हैं।

निम्नलिखित ग्राम इनके स्थान हैं-

खोरिया, कोंडरिया, अगस्त्पार, सिंघनजोड़ी, नैपुरा, करैली, हस्तग्राम, गुरौली, चारपानी, मीठाबेल, सोनोरा, मार्जनी, पोहिम, कोडिग्राम, कुसौरा और पिपरासी—ये इन तृतीय श्रेणी वालों के मूल स्थान हैं।

विभिन्न उपाधियों से सम्बोधित होने वाले गांव

मिश्र—वयसी, मधुवनी, मार्जनी, धरमा, भरसी, पयासी ग्रामों के ब्राह्मण मिश्र कहे जाते हैं। त्रिवेदी और द्विवेदी—सरया, सोहगौरा, धतुरा, गुरौली, पाला, टाडा, पिण्डी, नदौली, पोहिल, खैरा, सिघनजोड़ी ग्रामों के ब्राह्मण द्विवेदी और त्रिवेदी कहे जाते हैं।

पाण्डेय—इटिया, माला, नागचौरी, हस्तग्राम, धमौली, चारपानी, त्रिफला, इटार और अगस्तपार

ग्रामों के ब्राह्मण पाण्डेय कहलाते हैं।

द्विवेदी—कांचनी, अर्थात् गुर्दवान्, बृहद्ग्राम, अर्थात् बड़गो, मीठावेल, कोढारी, समुदार और सरार ग्रामों के ब्राह्मण द्विवेदी कहलाते हैं।

चतुर्वेदी-नेपुरा और पिपरासी गांव के ब्राह्मण चौबे कहलाते हैं।

पाठक-सोनार गांव के ब्राह्मण पाठक हैं।

उपाध्याय—खोदिया और लिखमा गांव के ब्राह्मण उपाध्याय हैं।

ओझा-करेली गांव के ब्राह्मण ओझा हैं।

नोट—कौडिन्य गोत्र के ब्राह्मण शुक्ल, मिश्र और त्रिवेदी उपाधियों से सम्बोधित होते हैं। प्रथम श्रेणी के ब्राह्मण—प्रथम श्रेणी के ब्राह्मण वे हैं, जिनका मूल गोत्र एक ही ऋषि का चली

आ रहा हो।

द्वितीय श्रेणी के ब्राह्मण — द्वितीय श्रेणी के ब्राह्मण वे हैं, जिनमें द्वामुष्यायण मिल गये हों, जैसे किसी की सन्तान नहीं है, उसने दूसरे गोत्र वाले किसी रिश्तेदार के बालक को या किसी अन्य गोत्रीय ब्राह्मण बालक को गोद लेकर 🏋 किसी अन्य ऋषि गोत्रीय बच्चे का क्रय करके अपना पुत्र बना लिया हो, उसे द्वामुष्यायण कहते हैं। उसके सम्मिश्र कुल हो जाने से द्वितीय श्रेणी के कहे जाते हैं।

पंक्ति पावन-एक तीसरी श्रेणी है-पंक्ति पावन ब्राह्मणों की। जिनकी उपस्थिति से दूषित बाह्मणों की पंक्ति भी पवित्र हो जाती है। ये पंक्ति पावन ब्राह्मण वेद वेदान्त के पारगामी और

संदाचारनिष्ठ होते हैं।

ये वेद के छहों अंगों के ज्ञाता, विनयी, योगी और ययावर, यानि एक रात्रि से अधिक एक स्थान में न रहने वाले होते हैं। इनको पंक्ति पावन कहते हैं।

सरयू पारीण ब्राह्मणों के गोत्र प्रवरादि

गर्ग

आस्पद-शुक्ल प्रवर-आंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज, श्येन, गार्ग्य वेद-यजुर्वेद शाखा-माध्यन्दिनीय सूत्र-कात्यायन

उपवेद-धनुर्वेद

शिखा-दाहिनी

पाद-दक्षिण

उपास्य देव-शिव

मूल स्थान—भेड़ी, मामखोर, बकरुआ, करज्जही, कनइल, मझगवां, महसो, बरेही, करहुचिया, लखनौरा, पांक्तेय, महलियार, असौंजा, नगहरा, शुक्लपुरा अपांगतेय है।

गार्ग्य और गार्गेय भी इसी के अन्तर्गत हैं। इन गांवों के भी कई भेद हो गये हैं। जैसे-

मामखोर से-सीयर, खखाइचखोर, सरांव, रुदाइन, परसा, भण्टोली, छोटा सोरांव, कनइल,

तलहा आदि। महसों से-मुडेरा, बकैना, बसौढ़ी, कटारि, झौवा, रुद्रपुर, अकौलिया, खोरीपाकर, गोपालपुर,

मेहरा, सिलहटाह आदि आदि।

गौतम

आस्पद—मिश्र; द्विवेदी वेद-यजुर्वेद शाखा-माध्यन्दिन सूत्र—कात्यायन

उपवेद-धनुर्वेद

शिखा-दक्षिण

पाद-दक्षिण

उपास्य देव-शिव

प्रवर-अंगिरस, वार्हस्पत्य, गौतम

मूल स्थान—मिश्र वंश का—बइसी, कारौडीह, मधुबनी, मटियारी, पिपरा, भर्सी, भउडीह, ममया, रापतपुर, जिगिना आदि।

द्विवेदी लोगों का मूल गांव—बरपार, सहुवा, बडयापार, गोपालपुर, गड़री, रजहटा, कांचनी, गुर्दवान, धनौली, मझौरा तथा पटियारी।

शाण्डिल्य

इनके दो भेद 1. श्री मुख

2. गर्धमुख

आस्पद-तिवारी

वेद-सामवेद

शाखा-कौथुमी

सूत्र-गोभिल

उपवेद-गन्धर्व

शिखा-वाम

पाद-वाम

छन्द-जगती

उपास्य देव-विष्णु

प्रवर-शाण्डिल्य, असित, कश्यप

श्रीमुख शाण्डिल्य

गोरख पुर में सर्थां, सौहगौरा, झुड़िया, देउरवा, मलुवा, सिरजम, धानी, सोपरी, चेतिया और परतावल। इन गांवों के तिवारी परिवार में पंक्ति भेद है। इनके नाम के साथ राम, कृष्ण, नाथ तथा मणि शब्द लगाते हैं।

सरसा, सोहगौरा, उनवलिया, अतरौली, रुद्रपुर, झड़िया, बहुवारी आदि के निवासी अपने नाम के साथ मणि शब्द लगाते हैं।

निम्नलिखित गांवों में भी शाण्डिल्य गोत्री तिवारी मिलते हैं, किन्तु इनका प्रवर भिन्न है। कदहा, गोपीकान्ध, यंगेरा और घोड़नर के तिवारी लोगों का गोत्र तो शाण्डिल्य है, किन्तु प्रवर शाण्डिल्य, कौलव तथा बाल्मीक है।

देउरिया, खोरभा, गानौरा, नेवास, नकौझा, बुढ़ियावारी, धतुरा, पाला, सेमरी, चौरा, गुरौली, हथियामरास के तिवारी लोगों का प्रवर शाण्डिल्य, असित एवं कश्यप है।

गर्धमुख शाण्डिल्य

आस्पद-तिवारी

गोत्रं-शाण्डिल्य

प्रवर-शाण्डिल्य, असित, देवल

वेद-सामवेद

उपवेद-गान्धर्व वेद

शाखा-कौथुमी

सूत्र-गोमिल

शिखा-वाम

पाद-वाम

छन्द-जगती

देवता-विष्णु

इनका आदि स्थान नदौली कहा जाता है। यहीं से पिण्डी स्थान भी सम्बद्ध है। अन्तर केवल इतना है कि नदौली के लोग 'नाथ' शब्दान्त तथा पिण्डी के 'पित' शब्दान्त नामों से कहे जाते हैं। इसी गोत्र में कीलपुर के दीक्षित लोग भी हैं, किन्तु उनमें पंक्ति नहीं है।

पराशर

आस्पद-पाण्डेय, उपाध्याय तथा शुक्ल

प्रवर-शक्ति, पराशर, वशिष्ठ

मूल स्थान—सिलावट, वामपुरा, धमौली, सोहनहार गांवों में पाण्डेय हैं। धनैती, नदुवा, चौखरी गांवों में उपाध्याय हैं। परसा, बूड़ा, परहसा, कन्तित तथा नगवा बरौछा में शुक्ल लोग रहते हैं।

भारद्वाज

आस्पद—द्विवेदी, पाण्डेय, चतुर्वेदी, पाठक, उपाध्याय

वेद-यजुर्वेद

उपवेद-धनुर्वेद

शाखा-माध्यन्दिनीय, कात्यायन

शिखा-दाहिनी

पाद-दाहिनी

देवता-शिव

प्रवर—अंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज मूल गांव-द्विवेदी-बड़गों, शरारि, बढ़या, रमवापुर, बदगदी, मझौंवा, जलालपुर, बड़मैया,

पटवरियां, मुडवरिया आदि ग्रामों को अपना मुख्य स्थान मानते हैं। पाण्डेय लोगों में —सिसवां, पुरैना तथा कौसड़ —ये मचैयां के अन्तर्गत हैं। बलुवा, बाबू मठियारी

तथा पगड़ों के लोग अध्वर्यु (अघुर्य) अधुर्य कहे जाते हैं। बलुवा बाबू और मलौली में इसी गोत्र के

चतुर्वेदी भी हैं।

कश्यप

वेद—सामवेद उपवेद—गन्धर्व वेद शाखा—कौथुमी सूत्र—गोमिल पाद—वाम शिखा—वाम

उपास्य देव-विष्णु

प्रवर-कश्यप, असित, देवल

आस्पद—पाण्डेय, द्विवेदी, चौबे, मिश्र, ओझा, उपाध्याय

मूल गांव—पाण्डेय—त्रिफला, बनगांव, फरेदा, जगदीशपुर, नाथपुर, बिसनैया, गौरा तथा नदुला में अधिकांश पाण्डेय लोगों की आबादी है।

द्विवेदी-काश्जनी (परवा कन्तित) में दुबे लोग हैं।

चौबे-सोनवर्ष, विष्णुपुर में चौबे लोग हैं।

उपाध्याय-पकड़ी, बरौली तथा भरसांड

मिश्र—राढ़ी, मिश्रोलिया, परमेश्वरपुर तथा रभौली में भारद्वाज गोत्री मिश्र लोग मिलते हैं। पाठक—सोनौरा

अत्रि (कृष्णात्रि गोत्र)

वेद-ऋगवेद

उपवेद-आयुर्वेद

शाखा-शाकल्य

सूत्र-आश्रलायन

प्रवर-अर्चि, अचिननस, श्यावाश्र

शिखा-वाम

पाद-वाम

आस्पद-दुबे, शुक्ल

उपास्य देव-ब्रह्मा

मूल गांव—डुमरीगंज तहसील में डुमरिया के दुबे लोग तथा पिछौरासत्यकर कन्तित में शुक्ल लोग मिलते हैं।

वत्स गोत्र

वेद—सामवेद उपवेद—गन्धर्व शाखा—कौथुमी सूत्र—गोभिल पाद—वाम शिखा—वाम उपास्य देव—विष्णु

प्रवर—वत्स, च्यवन, आप्लवान, और्च एवं जामद्ग्न्य 5 प्रवर होते हैं।

आस्पद—पाण्डेय, दुबे, मिश्र, तिवारी, ओझा लोग मिलते हैं।

मूल गांव—पाण्डेय—नागचौरी, बेलवा, सोनफेरवा, वनहा, परिसया तथा बिठौला में मिलते हैं। द्विवेदी—ये सनदरिया, भरौली, बकुलारी तथा विमटी में मिलते हैं।

मिश्र—ये मुख्यतः पयासी, रतनमाला, नरगहा, बनकटा, करिहैया, मणिकटा, वाना, बेलौरा तथा

दोगारि में मिलते हैं।

पयासी में रतनमाला, भरवलिया, गोपालपुर, बीजापुर, जिगना, भिटह, छिपया, बिजरा, कतरारी,

बैरिया, परसिया, भुड़िसा तथा रानीपुरी हैं।

बनवटा या नगरहा में—अधैला, सुंखई, तिलकपुर, सलेमपुर, रेवली तथा चैनपुर आते हैं। किरियां में—किरहांव, दियावाती तथा मेंहदावल हैं। मिणकढ़ा से—खुदिया, बघौरा, चिमखा तथा बैनुवा हैं। गाना में—गाना, त्योंठा, बरविरया, बैरिया तथा चकदहा सिम्मिलत हैं। बेलोरा में—पानन, चिनरवा, बंधोरा, मझौलिया, सुलजामपुर तथा पकिरया सिम्मिलत हैं। तिवारी—फूदा गाजर, धुरियामार, बिरई तथा पोहिला में इस गोत्र के तिवारी रहते हैं। ओझा—ककुवा, रजौली तथा खैरी में वत्स गोत्री ओझा लोग रहते हैं। वात्स्यायन गोत्र

वेद — यजुर्वेद शाखा — माध्यन्दिन सूत्र — कात्यायन पाद — दक्षिण शिखा — दक्षिण उपास्य देव — शिव प्रवर — विश्वामित्र, किल, कात्यायन आस्पद — चौबे मूल गांव — नैपुरा, कुसौरा

सांकृत गोत्र

वेद-यजुर्वेद शिखा-दक्षिण शाखा—माध्यन्दिन

पाद-दक्षिण

सूत्र-कात्यायन

उपास्य देव-शिव

प्रवर-सांकृत, सांख्यायन, मिश्र

आस्पद-पाण्डेय, तिवारी, चौबे

पाण्डेय-मलांव में पाण्डेय लोग मिलते हैं।

तिवारी-नाउरदेउर, मिलौर सरया

चौबे-भभुआ पार, नगवा, उनबलि, देउगर, सरसैया, तेलियाडीह तथा सिधैंया में मुख्य रूप से चौबे लोग मिलते हैं।

सावण्यं गोत्र

वेद-सामवेद

उपवेद-गान्धर्व वेद

शाखा-कौथुमी

सूत्र-गोभिल

शिखा-वाम

पाद-वाम

प्रवर-भार्गव, च्यवन, आप्रवाल, और्व, सावर्ण्य

आस्पद-मिश्र, पाण्डेय

देव-विष्णु

मूल गांव—पाण्डेय—इटारि, रैकहट, पट्टीदिलीपपुर, वंशीधरपुरवा, मझगंवा, चारपानि, लसेहरी, साहुकोल तथा भसमा ये मूल स्थान हैं।

सखरुआ, इमली डांड, भरोसा के परखपाण्डे, इन्द्रपुर, वारघाट, भट्टाचारी तथा टिकरा के पाण्डे भी इसी गोत्र के हैं।

मिश्र-सिसैया के मिश्र भी इसी गोत्र के हैं।

भार्गव

वेद—सामवेद
उपवेद—गान्धर्व वेद
शाखा—कौथुमी
सूत्र—गोभिल
उपास्य देव—विष्णु
शिखा—वाम
पाद—वाम

आस्पद-तिवारी

प्रवर—भार्गव, च्यवन, आप्लवान, और्व, जामदग्न्य 5 प्रवर मूल गांव — भार्गवपुर, मदनपुर, सोढ़ा चक्र सिंहन जोरी, रखुआ खोर तथा चर्नार इनके मुख्य स्थान हैं। उपमन्यु गोत्र

वेद-यजुर्वेद उपवेद-धनुर्वेद शाखा-माध्यन्दिनीय सूत्र-कात्यायन उपास्य देव-शिव शिखा-दक्षिण पाद-दक्षिण प्रवर—वशिष्ठ, इन्द्रप्रमद तथा उपमन्यु आस्पद-ओझा, पाठक

मूल गांव-ओझा-करैली, ओझवली, अजांप तथा मलांव इनके मुख्य स्थान हैं। पाठक-मगदरिया में इसी गोत्र के पाठक मिलते हैं।

वशिष्ठ गोत्र

वेद-यजुर्वेद उपवेद—धनुर्वेद शाखा-माध्यन्दिनीय सूत्र-कात्यायन प्रवर-विशष्ठ, शक्ति, पराशर उपास्य देव-शिव शिखा-दक्षिण पाद-दक्षिण आस्पद—तिवारी, पाण्डे, मिश्र, चौबे मूल स्थान-

मार्जनी तथा वट्टापुर—इन गांवों में मिश्र लोग रहते हैं।

2. मणिकण्ठवंकिवा तथा हरिना में तिवारी लोग इसी गोत्र के हैं।

3. नार्जनी में चौबे।

4. अम्बा, कोंहड़ा गांव के पाण्डेय लोग वशिष्ठ गोत्री हैं। घृतकोशिक

वेद-यजुर्वेद उपवेद-धनुर्वेद शाखा—माध्यन्दिनीय
सूत्र—कात्यायन
प्रवर—विश्वामित्र, कौशिक, घृतकौशिक
शिखा,—दक्षिण
पाद—दक्षिण
उपास्य देव—शिव
आस्पद—मिश्र
मूल गांव—धर्मपुरा, लगुनहीं, हरदिया, मझौना तथा कुशहरा इनके मूल स्थान हैं।
कौशिक गोत्र

वेद—यजुर्वेद
उपवेद—धनुर्वेद
शाखा—माध्यन्दिनीय
सूत्र—कात्यायन
प्रवर—विश्वामित्र, कौशिक तथा अघमर्षण
शिखा—दक्षिण
पाद—दक्षिण
अस्पद—मिश्र, दुबे
उपास्य देव—शिव
मूल गांव—द्विवेदी—मीठवेल, ब्रह्मपुर। मिश्र—सुगौटी।
कुशिक

वेद-यजुर्वेद उपवेद-धनुर्वेद शाखा-माध्यन्दिनीय सूत्र-कात्यायन प्रवर-विश्वामित्र, कौशिक, अधमर्षण उपास्य देव-शिव आस्पद-चौबे शिखा-दक्षिण पाद-दक्षिण मूल गांव-1. अलीनगर तथा 2. हरगढ़ कौण्डन्य

वेद—अथर्ववेद

उपवेद-स्थापत्य वेद

शाखा-शौनकी

सूत्र-बोधायन

शिखा-वाम

पाद-वाम

प्रवर—वशिष्ठ, मित्रावरुण, कौण्डिन्य

उपास्य देव-इन्द्र

आस्पद-मिश्र और पाण्डेय

मूल गांव—मिश्र—बभनौली, नगरहा। पाण्डेय—पलामू, बेलौजा। सरयू पारीण ब्राह्मणों में उपरोक्त गोत्रों के अतिरिक्त भी गोत्र मिलते हैं।

नाम गोत्र	आस्पद	ग्राम
1. चन्द्रायण	पाण्डेय	वेलौंजा
2. वरतन्तु	त्रिपाठी	धर्महरि
3. कश्यप	दुबे	सिंगेला
4. कण्व	दुबे	निरौली
4. 44		from \$1

सरयू पारीण ब्राह्मणों के गोत्र का और भी विस्तार है।

सरयूपारी ब्राह्मणों की कुछ विशेषताएं

1. शाण्डिल्य गोत्री कुछ त्रिपाठी लोगों में पंक्तियां हैं। इनके पीछे एक इतिहास है। सरार गांव ताप्ती नदी के किनारे है। एक बार एक कुटुम्ब में राजयक्ष्मा प्रविष्ट हो गया। यह संक्रामक रोग है। धीरे-धीरे पूरा परिवार इससे ग्रसित हो गया और सभी कालकवितत हो गये।

सौभाग्य से एक महिला मायके गयी हुई थी। उसके पेट में बच्चा था। उसका प्रसव नाना के घर सौभाग्य से एक महिला मायके गयी हुई थी। उसके पेट में बच्चा था। उसका प्रसव नाना के घर में हुआ और वहीं उसका पालन-पोषण भी होने लगा। जब बच्चा कुछ बड़ा हो गया, तो उसने माताजी से अपने पिता के विषय में पूछा। मां ने रो-रोकर कुल के सत्यानाश की पूरी कहानी सुना दी। बालक से अपनी पितृभूमि देखने के लिए व्याकुल हो गया और अपने एक ग्वाले मित्र के साथ सरार गांव को उपनी पितृभूमि देखने के लिए व्याकुल हो गया और अपने एक ग्वाले मित्र के साथ सरार गांव को चल दिया।

ताप्ती के तट पर बसी अपनी पितृभूमि को देखकर रो पड़ा और अपने मित्र ग्वाले से कहा, ''इस भूमि पर हमारे पूर्वजों ने जान दी है। हम भी यहीं प्राण त्यागेंगे।'' ग्वाले ने उसे बहुत समझाया, किन्तु भूमि पर हमारे पूर्वजों ने जान दी है। हम भी यहीं प्राण त्यागेंगे।'' ग्वाले ने उसके बाद जो चाहो वह नहीं माना। अन्त में ग्वाले ने कहा, ''जाओ, पहले स्नान करके तो आओ। उसके बाद जो चाहो करना।'' वह लड़का ताप्ती नदी में स्नान करने के लिए उतरा। ग्वाले को लगा वह तो डूब गया। अब पीड़ित ग्वाले ने आत्महत्या कर ली।

जब ब्राह्मण बालक नहाकर आया, तो उसने ग्वाले के शव को देखा। बड़ा दुखी हुआ। उसके बाद वह सरार गांव में गया। गांव के लोगों ने उसके पूर्वजों की जमीन उसे दे दी और उसका नाम उस दिन से धरणीधर हो गया। उस बालक के कुल के लोग अपने नाम के साथ धर लगाते हैं। इनके कुल में साधु नामक ग्वाले की पूजा होती है। गौरक्षा न्नाम के एक ब्राह्मण थे। उनके चार लड़के थे। उनके नाम राम, कृष्ण, नाथ और मिण थे। ये विभिन्न गांवों में जाकर बस गये। जो जहां बसा, वह अपने नाम के साथ अपने पितरों का नाम लगाने लगा। जैसे—सरार गांव के वंशज अपने नाम के साथ राम लगाते हैं। सोहगौरा के वंशज अपने नाम के साथ कृष्ण लगाते हैं। धतुरा के ब्राह्मण अपने नाम के अन्त में मिण लगाते हैं। इसी प्रकार चेतिया ग्राम के वंशज अपने नाम के अन्त में नाथ शब्द लगाते हैं।

उपरोक्त चारों गांवों के ब्राह्मण अपने को श्रीमुख शाण्डिल्य बतलाते हैं।

इसी प्रकार नदौली ग्राम में एक नन्ददत्त नामक ब्राह्मण रहते थे। उनके मेरु, फेरु और सुखपित तीन पुत्र हुए। मेरु और फेरु के वंशज अपने नाम के साथ नाथ लगाते हैं, किन्तु सुखपित और सभापित के वंशज पिण्डी ग्राम वासी अपने नाम के साथ पित शब्द का प्रयोग करते हैं। जबिक प्रामाणिक शास्त्रीय ग्रन्थों में न तो कहीं श्रीमुख की चर्चा है और न गर्दमुख की। राम, कृष्ण, नाथ, पित तो बहुत दूर की बात है।

पिण्डी नाम पड़ने का कारण

एक दिन गौतम गोत्र के एक पंक्ति पावन ब्राह्मण ने सभापित के हाथ का पानी में सानी हुई सत्तू की पिण्डी खा लिया, तब से सभापित पंक्ति में मिला लिये गये और उस गांव का नाम पिण्डी हो गया। नदौली वासी ब्राह्मणों का गोत्र गर्दभी मुख है।

गर्दभी मुख नाम के पांच गोत्रकार ऋषि विभिन्न समयों में उत्पन्न हुए हैं। जैसे-

भृगुवंश में गर्दभी मुख, विशष्ठ वंश में गर्दभीमुख, विश्वामित्र वंश में गर्दभीमुख, अंगिरस वंश में गर्दभीमुख और कश्यप वंश में गर्दभीमुख।

(2)

- 1. ये जिस गांव में अपनी बेटी की शादी करते हैं, उस गांव में बेटे की शादी नहीं करते।
- 2. विवाह सम्बन्ध में ये गोत्र निर्णय में बहुत सावधान रहते हैं।
- 3. गोत्र भिन्न होने पर भी यदि प्रवर समान हो, तो विवाह वर्जित माना जाता है। जैसे—शाण्डिल्य, कश्यप और गर्दभीमुख के गोत्र भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु प्रवर समान होने से विवाह सम्बन्ध वर्जित है।
 - 4. अंगिरस और भृगु के सिवा अगर एक भी प्रवर्षि समान दिख पड़े, तो उसे सगोत्र कहते हैं।
- 5. भरद्वाज, गर्ग, रौक्षायण और और्व—ये चारों भारद्वाज कहे जाते हैं। इनका परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं होता है।
- 6. हारित, संकृति, कण्व, रथीतर, मुद्गल, विष्णु, वृद्ध—ये छह ऋषि अंगिरस पक्ष के हैं। इसलिए इनमें विवाह सम्बन्ध वर्जित है।
- 7. वितहव्य, मिश्रयु, शुनक तथा वेणु—ये चार ऋषि भृगु पक्ष के होने से भार्गव कहलाते हैं। इनका भी परस्पर विवाह वर्जित है।
- 8. भृगु, सावर्णि और वत्स गोत्रों के पंच प्रवर भार्गव, च्यवन, आप्लवान, और्व और जामदग्न्य हैं। इसलिए इनका भी परस्पर विवाह सम्बन्ध वर्जित है।
 - 9. माण्डव्य, दर्भ, रैवत के साथ भृगु और जमदग्नादि का विवाह सम्बन्ध नहीं होता है।

राकद्वीपीय बाह्मण या शाकलद्वीपीय बाह्मण

भगवान् कृष्ण के एक पुत्र थे। उनका नाम था साम्ब। उनकी माता जाम्वती थी। साम्ब ने भगवान् सूर्य का एक बड़ा मन्दिर बनवाया और उसमें भगवान् सूर्य की प्रतिमा की स्थापना की। पूजा करने के लिए उन्होंने गौरमुख ऋषि से निवेदन किया। ऋषि ने कहा, ''मैं पूजा का प्रतिग्रह नहीं ले सकता।''

तब साम्ब ने भगवान् सूर्य की ही आराधना की। भगवान् सूर्य ने साम्ब से कहा, ''इस देश में हमारी पूजा करने का अधिकारी कोई नहीं है। शक द्वीप में चार वर्ण मग, मगस, मानस और मन्दग निवास करते हैं। उनको तुम यहां लाकर बसाओ।''

साम्ब शक द्वीप गये और अट्ठारह कुलों के कुमारों को लाकर चन्द्रभागा नदी के किनारे बसाया।

वे भगवान् सूर्य की नित्य पूजा करने लगे।

उन 18 कुलों में 8 कुल मन्दग वर्णों के शूद्र थे और 10 कुल मग वर्ण के ब्राह्मण थे। साम्ब ने

भोजवंश की कन्याओं से उन ब्राह्मण कुमारों का विधिपूर्वक विवाह कर दिया।

उन कुमारों के जो बालक हुए, वे भोजक कहलाये। वे सब ब्राह्मणों जैसा काम करते थे। ऋषियों के समान दाढ़ी रखते थे। सूर्य की पूजा करते थे। ये सांप को केचुली जैसा वस्त्र, जो भीतर से पोला होता था, जनेऊ जैसा धारण करते। तीनों व्याहृति सिहत सूर्य गायत्री का जप करते हैं और अग्निहोत्र करते हैं।

प्राचीन सामुद्रिक शास्त्र

(भाग एक व दो)

शरीर लक्षण एवं आकृति विज्ञान, हस्तक्षेप विज्ञान, जिसमें आठ सौ चित्रों द्वारा एक-एक रेखाओं एवं रेखाओं से बने योगों को समझाया गया है। सामुद्रिक विज्ञान की इन दोनों शाखाओं के समस्त विवरणों से युक्त एक सम्पूर्ण ग्रन्थ, जिसमें हाथ एवं शरीर के निर्माण हस्तरेखाओं की उत्पत्ति के रहस्यों को भी अनुपम तरीकों से बताया गया है। इस ग्रन्थ को पढ़ने हाथ एवं शरीर के निर्माण हस्तरेखाओं की उत्पत्ति के रहस्यों को भी अनुपम तरीकों से बताया गया है। इस ग्रन्थ को पढ़ने हाथ एवं शरीर के निर्माण हस्तरेखाओं की उत्पत्ति के रहस्यों को भी अनुपम तरीकों से बताया गया है। इस ग्रन्थ को पढ़ने हाथ एवं शरीर के निर्माण हस्तरेखाओं की उत्पत्ति के रहस्यों को भी अनुपम तरीकों से बताया गया है। इस ग्रन्थ को पढ़ने हाथ एवं शरीर के वाद अन्य पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

प्राप्ति स्थान

डी.पी.बी. पब्लिकशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन: (ऑ.) 23251630, (दु.) 23273220, (नि.) 23847320, (मो.) 9811648916

जांगिड़ और पांचाल ब्राह्मण

देवताओं के गुरु बृहस्पित की बहन का नाम भुवन और वरस्त्री था। वह आठवें वसु प्रभास की पत्नी थीं। उनसे देवताओं के शिल्पी महाभाग प्रजापित विश्वकर्मा का जन्म हुआ। उनके चार पुत्र हुए—अजैक पाद, अहिर्बुघन्य, त्वष्टा और रुद्र। प्रजापित विश्वकर्मा ने जगदीश की आज्ञा से चौदह भुवन और चार मनुओं की सृष्टि की। स्वायम्भु मनु के ऋक् यजुः साम, अथर्व, वेदव्यास और प्रियव्रत छह पुत्र हुए। ये मुख्य ब्राह्मण हैं। इनके पीछे चार उपब्राह्मण हुए। इनका नाम था—शिल्पायन, गौरवायन, कायस्थायन और मागधायन। उपरोक्त छह ब्राह्मण ऋषि वेद मन्त्रों को पढ़ने के अधिकारी हैं।

शिल्पायन आदि चार पुत्र उपब्राह्मण उपवेद, धनुर्वेद, आयुर्वेद, गान्धर्व वेद और शिल्प वेद (स्थापत्य कला) पढ़ने के अधिकारी हैं। उप पांचालों में शिल्पायन के पुत्र—लोहकार (लोहार), सूत्रधार, प्रस्तरारि (पत्थर पर नकाशी करने वाले), ताम्रकार और सुवर्णकार हुए। इन सभी की शाखा वैश्वकर्म, सूत्र कौडिन्य, आत्रेय, भारद्वाज, बौधायन, दाक्षायण और कात्यायन है। देवता रुद्र हैं। छन्द त्रिष्टुप और मन्त्र रुद्र गायत्री हैं।

इनको शिल्पवेद की पांच संहिता पढ़नी चाहिए। शिल्पायन के बड़े पुत्र ने मनु का शिष्य बनकर उनसे धनुर्वेद की शिक्षा ग्रहण की।

सूत्राधार ने मय का शिष्य बनकर सूत्रधार संहिता पढ़ी, तक्ष ने शिल्पी का शिष्य बनकर शैल संहिता पढ़ी, ताम्रकार ने त्वष्टा का शिष्य बनकर ताम्र संहिता पढ़ी। स्वर्णकार ने दैवज्ञ का शिष्य बनकर सुवर्ण संहिता पढ़ी। इस प्रकार इन पांचों ने 5 शिल्प संहिताएं पढ़ीं।

पंचाल ब्राह्मणों को षटकर्म करने का अधिकार है-

- 1. पढ़ना पढ़ाना, 2. यज्ञ करना कराना, 3. दान देना, दान लेना। नित्य नैमितिक कार्य पांचालों को करना चाहिए।
 - 1. पितृयज्ञ 2. भूत यज्ञ 3. देव यज्ञ, 4. जप यज्ञ, 5. ब्रह्म यज्ञ (वेद पाठ)। उपब्राह्मणों को पुराणोक्त काम करना चाहिए।

भोजदेव ने अपने वास्तुशास्त्र पर लिखे ग्रन्थ में अपने इष्ट की प्रशस्ति में निम्नलिखित श्लोक लिखा है।

तदेषः त्रिदशाचार्य सर्वसिद्धि प्रवर्तकः। सुतः प्रभासस्य विभोः स्वस्त्रीयश्च बृहस्पते॥

ये विश्वकर्मा देवताओं के आचार्य हैं। सिद्धियों के प्रवर्तक हैं। प्रभास ऋषि के पुत्र और देव गुरु बृहस्पति के भांजे हैं।

जांगिड ब्राह्मण

मूलतः जांगिङ नहीं, जंगिङ शब्द है। जंगिङ शब्द अथर्ववेद के दूसरे और उन्नीसवें काण्ड में दर्जनों बार आया है। वहां प्रसंग के अनुसार जंगिङ के विभिन्न अर्थ हैं।

1. जंगिड़ एक मणि का नाम है, जो पुरोहित द्वारां बालक की भुजा में बांधी जाती है।

2. जंगिड़ एक वृक्ष का नाम है, जिसे अर्जुन कहते हैं।

3. कुछ विद्वानों ने इसे पिलखग वृक्ष भी बताया है। इसका रस औषधि के काम आता है।

4. आयुर्वेद शास्त्र में जंगिड़ एक देश विशेष को कहा गया है। जहां करील के वृक्ष और काला मृग होते हैं।

5. गुड़गांवा से लेकर बीकानेर तक का क्षेत्र जांगिड़ या जांगल कहलाता था। इसीलिए वहां के राजा को जंगलधर महाराज कहते थे।

6. महाभारत काल में कुछ देश, जांगल और कुरुपांचाल नाम से विख्यात थे। जो आजकल राजस्थान में हैं।

भारत में जांगिड़ ब्राह्मणों की संख्या भी इसी क्षेत्र राजस्थान में निवास करती है।

7. जांगिड़ नाम के एक ऋषि भी थे, जिनका नाम अंगिरा है। अथर्ववेद के 19वें काण्ड के 34वें सूत्र में कहा गया है—अंगिरा असि जंगिड़—अंगिरा का ही नाम जांगिड़ है। परोक्ष प्रियो देवा:, हमारे देश में विद्वानों को ही देव कहा गया है, जैसे—'विद्वांसो हि देवा:'

तो ये विद्वान् लोग शब्दों की परोक्ष वृत्ति को ही श्रेष्ठ मानते हैं, इसके प्रति उनकी जो भी मनसा हो। जैसे—पति-पत्नी की जोड़ी को 'जायापित' कहा गया है। विद्वानों ने इसे परोक्ष करने के लिए जम्पित्त कहा। फिर अति परोक्ष करने के लिए उसे दम्पित्त कहा और यह 'दम्पित्त' शब्द ही लोक में विख्यात हुआ न कि जायापित।

विश्वकर्मा, जो शिल्प विज्ञान के प्रवर्तक माने जाते हैं, जांगिड़, पांचाल धीमान्, रामगढ़िया सुनार,

लोहार, पत्थरकार, चित्रकार ये सभी उन्हीं को अपना पूर्वज मानते हैं।

अथर्ववेद का उपवेद, शिल्प वेद है। इसीलिए शिल्पी ब्राह्मण अथर्ववेदी या अथर्वण कहलाते हैं। शिल्प शास्त्र के कर्त्ता विश्वकर्माजी हैं। महिषीं अंगिरा के 8 पुत्र थे। उनमें एक पुत्र का नाम सुधन्वा था। उन्हीं को विश्वकर्मा भी कहते हैं। विश्वकर्मा के 3 पुत्र हुए—1. ऋभु, 2. वाज 3. विभ्वा। ये तीनों रक्षकार कहलाते थे। इस ऋभु गणों की स्तुति में ऋग्वेद में 11 सूत्र हैं।

इस प्रकार महर्षि अंगिरा ऋषि का शिल्प विद्या से सीधा सम्बन्ध हो गया। विश्वकर्मा वंशज जांगिड़ ब्राह्मणों के 20 ऋषि गोत्र हैं। यथा—भृगु, अंगिरा, भारद्वाज, उपमन्यु, वशिष्ठ, कश्यप, मुद्गल, जातुकर्ण, शाण्डिल्य, कौडिन्य, गौतम, अघमर्षण, वत्स, वामदेव, ऋक्ष, लौंगाक्षि, गविष्टर, विद,

दीर्घतमा, भुग्वांगिरस।

अथर्ववेद शिल्प विज्ञान प्रधान है, अत: विश्वकर्मा वंशज जांगिड़, धीमान, पांचाल आदि ब्राह्मणों को अपना परिचय अथर्ववेदीय बताकर देना चाहिए तथा शौनक और पिप्लाद शाखाएं बतानी चाहिए।

जांगिड़ ब्राह्मणों के वेदादि

1. वर्ण	ब्राह्मण
2. कुल	जांगिड़
3. वेद	अथर्ववेद
4. शाखा	पिप्पलाद
5. सूत्र	अंगिरस
6. गोत्र	भारद्वाजादि उपास्य 20
7. शासन	1885 गांवों में से कोई एंक
8. प्रवर	तीन
9. देवी	सावित्री
10. मन्त्र	रुद्रगायत्री
11. कर्म	विज्ञान और शिल्प कर्म
12. देश	जांगल देश
13. सूक्त	विश्वकर्मा सूक्त
C .	C .

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र

(वास्तुदोष कारण व निवारण)

इस पुस्तक में अपने घर को वास्तुशास्त्र के अनुरूप बनाने, वास्तु दोष पहचानने तथा उसके निवारण का विस्तृत वर्णन किया है। इस पुस्तक से जानकारी प्राप्त कर व्यक्ति अपने घर को तो वास्तुदोष से मुक्त कर ही सकता है, साथ ही अपने जीवन को सुखमय भी बना सकता है।

Rs. 180/-

प्राप्ति स्थान

डी.पी.बी. पब्लिकशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑ.) 23251630, (दु.) 23273220, (नि.) 23847320, (मो.) 9811648916

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- * ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड—खेमराज श्री कृष्णदास
- * जाति भास्कर—खेमराज श्री कृष्णदास
- * भारत में जाति प्रथा-मोतीलाल बनारसीदास
- * ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण-नीता प्रकाशन
- * भारतीय ब्राह्मण की गोत्रावली-पं॰ लक्ष्मीनारायण शर्मा (पानीपत वाले)
- * जिंगड ब्राह्मण गोत्रावली-सुकृति प्रकाशन

उपरोक्त सभी पुस्तकें 'डी०पी०बी० पब्लिकेशन्स', 110, चावड़ी बाजार से प्राप्त कर सकते हैं।

विशेष नोट

जो ब्राह्मण सज्जन अपने परिवार व मित्रगण में पुस्तक वितरण या मांगलिक उत्सव में बांटना चाहें, तो आप हमसे सम्पर्क करें व पुस्तकें लागत मूल्य पर प्राप्त करें।

तन्त्र जगत् में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाला दिव्य ग्रन्थ 'अलख' विरचित

लंकापति रावणकृत

असली वृहद् रावण संहिता

वाममार्गी तन्त्र के सभी अंगों के गोपनीय रहस्यों, साधनाओं, सिद्धियों, तन्त्राचारों, दिव्य योगों पर गहरायी से सर्वांग प्रकाश डालने वाला, सभी तन्त्राचारों एवं दुर्लभ विद्याओं के विस्मयकारी असंख्य रहस्यों को प्रकट करने वाला, देवताओं, ऋषियों, तपस्वियों, महान् साधकों के लिए भी दुर्लभ महाविद्याओं की सिद्धि दिलाने वाला विश्व का प्रथम

तन्त्र वरदान

मूल्य 3000/- रुपये सैट

विशिष्ट आकर्षण

यह तन्त्र ग्रन्थ विश्वप्रसिद्ध तन्त्र साधक गुरुवर प्रेम कुमार शर्मा (स्वामी प्रेमानन्द अलख) की व्याख्याओं से युक्त है; जिन्होंने श्लोकों के वास्तविक गोपनीय तन्त्र शास्त्र को सरल ढंग से समझाया है। इस ग्रन्थ में उन्होंने तन्त्र विद्या के वे समस्त रहस्य खोल दिये हैं, जिनका ज्ञान स्वयं शिव के अतिरिक्त इस विश्व-ब्रह्माण्ड में किसी को ज्ञात नहीं। देवता, ऋषि एवं अवतारों के लिए भी दुर्लभ महाज्ञान का यह सागर गुरुवर के ज्ञान से अमृत बन गया है। प्रत्येक स्त्री-पुरुष और परिवार के लिए अमृत कलश व सभी पुस्तकालयों में संग्रहणीय योग्य।

सहा : कल्पवृक्ष तेजी मन्दा सहा

व्यापार में तेजी-मन्दी के योग, तेजी-मन्दी मटका, सट्टा, लाटरी व शेयर पर ज्योतिष का प्रभाव, लक्ष्मी प्राप्ति के योग व नक्षत्र, ग्रहों, राशि व नक्षत्र ज्ञान से तेजी-मन्दी व शेयर की जानकारी, वर्ष के राजा व मन्त्रिमण्डल से तेजी-मन्दी का विचार, सट्टा, दड़ा, मटका, लाटरी, रेस व शेयर बाजार की विस्तृत जानकारी व अंकों में छिपे शेयर बाजार के खेल इत्यादि की सम्पूर्ण जानकारी सहित।

बच्चों के मनोहर नाम

इस पुस्तक में बच्चों के अतिसुन्दर एवं मनोहर आधुनिक नाम दिये गये हैं। साथ ही उनका अर्थ भी दिया गया है, ताकि दम्पत्ति अपने बच्चे के लिए उपयुक्त नाम का सरलता से चयन कर सकें।

इण्डियन वेजिटेरियन किचन किंग

लेखिका-टीना गर्ग

प्रस्तुत पुस्तक में वेजिटेरियन भोजन के विभिन्न प्रकार और उनको बनाने की विधियां दी गयी हैं। इन विधियों को अपनाकर आप अपने भोजन को अधिक स्वादिष्ट एवं पौष्टिक बना सकते हैं। Rs. 90/-

खाना बनाइये वेजिटेरियन

लेखिका—अनामिका दीक्षित भोजन के बिना जीवन की कल्पना करना व्यर्थ है। सभी को खुश रखने के लिए रसोई में स्वादिष्ट भोजन बनाना जरूरी है। प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न प्रकार के भोजन और उनको बनाने की विधियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

बारह महीनों के वत, त्यौहार व मंगल गीत

(महाराजा अग्रसेनजी के चित्र वाली) Rs. 50/-

हैण्डबुक ऑन स्नैक्स फूड, पापड़ एण्ड नमकीन

पुस्तक में सामान्य जानकारियों के अतिरिक्त आवश्यक जानकारियां भी दी गर्यी हैं, जिससे आप अपनी पसन्द का उद्योग बहुत ही आसान तरीके से सेटअप कर सकते हैं। इस पुस्तक में विभिन्न तरह के स्नैक्स फूड उद्योग, नमकीन प्लान्ट, पोटेटो चिप्स प्लान्ट, स्वीट्स प्लान्ट, पापड़ प्लान्ट, विड्या, नमकीन, तुरन्त उपयोग किये जाने वाले स्नैक्स, रेडी टू ईट फूड व अन्य सम्बन्धित उत्पादों के उद्योग लगाने की जानकारी दी गयी है।

डाक द्वारा पुस्तकें घर बैठे वी.पी.पी. द्वारा हमसे मंगायें या पधारें

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन: (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

हैण्डबुक ऑन प्लम्बिंग एण्ड सेनिटेशन विद् पाइप फिटिंग एण्ड पम्प मैनटेनेन्स सहित (थ्योरी एण्ड प्रेक्टिकल)

प्लम्बर व्यवसाय और पॉलिटेक्नीक के डिप्लोमा में वाटर सप्लाई और सेनिटरी इंजीनियरिंग का प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों के लिए भी अधिक उपयोगी है। इसमें मुख्यत: दो भाग हैं—वाटर सप्लाई और सेनिटरी इंजीनियरिंग। छोटे-बड़े भवनों, कार्यशालाओं, औद्योगिक प्रतिष्ठानों आदि में वाटर सप्लाई लेने के लिए प्लिम्बंग का कार्य कराया जाता है। इसके साथ ही बाथरूम, मूत्रालय, शौचालय आदि में भी सेनिटरी का कार्य होता है। इन सभी की पूर्ण जानकारी आवश्यक डायग्रामस और टेबल्स द्वारा इस पुस्तक में दी गयी है।

इलेक्ट्रिकल मोटर वाइन्डिंग विद् वाइन्डिंग डाटा

भिन्न-भिन्न प्रकार के छत के पंखे व टेबल फैन के साथ सिंगल फेस व थ्री फेस मोटर की वाइन्डिंग के बारे में लिखा गया है। इसे पढ़कर अनजान व्यक्ति भी वाइन्डिंग में निपुण हो सकता है। यह पुस्तक आई०टी० आई० के मोटर वाइन्डरों, इलेक्ट्रिशयनों व वायरमैनों के लिए अधिक उपयोगी है। इसमें डी०सी० मोटर की वाइन्डिंग का भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

Rs. 120/-

प्रेक्टिकल स्क्रीन प्रिंटिंग

स्क्रीन प्रिंटिंग तकनीक व व्यावहारिक ज्ञान कार्यक्षमता दक्षता श्रम पर आधारित एक ऐसा कार्य है, जिसके लिए नाम मात्र के पूंजी निवेश और स्थान की आवश्यकता होती है। 15 हजार प्रति माह की आमदनी इस उद्योग द्वारा आसानी से की जा सकती है। यह पुस्तक कदम-कदम पर आपके मार्गदर्शन का कार्य करेगी।

ऑटोमोबाइल डीजल इंजन मेकेनिक

इस पुस्तक में आई०टी०आई० के डीजल इंजन के स्लेबस के अनुसार सामग्री दी गयी है, जो डीजल मेकेनिक पशिक्षार्थियों, मेकेनिकों व अन्य के लिए अधिक उपयोगी एवं लाभप्रद सिद्ध होगी। Rs. 175/-

हैण्डबुक ऑन स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज

चार सौ से अधिक कम पूंजी के अत्यधिक लाभ प्रदायक व चुने हुए उद्योग, जिससे न्यूनतम प्रतिस्पर्धा है, हानि की नगण्य संभावना, फार्मूलों, निर्माण प्रक्रियाओं, कच्चे माल एवं मशीनों के साथ-साथ बिक्री व्यवस्था, प्रचार पैकिंग का विश्लेषण तथा अन्य व्यावाहारिक जानकारियां, उद्योग के चुनाव, प्लांट की सेटिंग, लाइसेंस, लोन तथा उद्योग के संचालन हेतु विशेष दिशा निर्देश।

Rs. 250/-

डाक द्वारा पुस्तकें घर बैठे वी.पी.पी. द्वारा हमसे मंगायें या पधारें

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन: (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

गोस्वामी तुलसीदासजी कृत श्री रामचरितमानस

राभायण

सम्पूर्ण आठों काण्ड भाषा टीका सहित सम्पूर्ण आठ काण्डों का वर्णन बहुत सरल एवं शुद्ध भाषा में इस महान् ग्रन्थ में किया गया है। जिसको पढ़कर पाठकगण लाभ प्राप्त कर सकते हैं तथा इस पवित्र ग्रन्थ को अपने घर में रखकर अपने घर को पवित्र बना सकते हैं।

Rs. 280/-

शताब्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण विलक्षण घटना लंकाधिपति दशानन रावण कृत ज्योतिष, औषधि विज्ञान, रसायन शास्त्र, दार्शनिक विचारों और नीति शास्त्र का अनुपम ग्रन्थ

रावण संहिता

(पांचों भाग)

रावण संहिता नामक ये हस्तलिखित वृहद् ग्रन्थ है। प्रस्तुत ग्रन्थ पांच खण्डों में उपलब्ध है, जिसमें रावण को आयुर्वेद के ज्ञाता कुशल नीतिज्ञ के रूप में दर्शाया गया है। Rs. 2500/-

धन्वनारि कृत

भारतीय जड़ी बूटियां

भारतीय प्राप्य एवं दुष्प्राप्य वनस्पतियों के अलौकिक गुणों एवं उनके सभी गुणों सहित उपयोग पहचान, प्राप्ति स्थान आदि का दुर्लभ विवरण, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी है। Rs. 250/-

धन्वनारिकृत आयुर्वेदिक निघण्टू

सदियों तक ब्रिटिश शासनकाल में आयुर्वेदिक चिकित्सा को कुचला गया। इसके बाद भी यह जीवित रहा और आज समस्त विश्व में अपनी उपयोगिता के परचम लहरा रहा है। जिन रोगों की चिकित्सा आज के विकसित एलोपैथिक चिकित्सा पद्धित में नहीं है, जिन रोगों के लिए भारी मात्रा में धन व्यय करना आवश्यक हो जाता है, वे रोग आयुर्वेद की सामान्य सस्ती जड़ी-बूटियों के माध्यम से दूर किये जा सकते हैं। अति प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों की प्रमाणिक और गोपनीय योगों एवं जड़ी-बूटियों के विवरणों से युक्त आयुर्वेद का सार, संग्रह रूप में।

दुर्गा सप्तराती

(लाल व काली छपाई में)

भगवती दुर्गा की आराधना से राजा सुरथ ने अखण्ड राज्य प्राप्त किया और विरक्त समाधि वैश्य ने मोक्ष पाया। दुर्गा सप्तशती के साथ-साथ दुर्गा कवच, अर्गला स्तोत्र, कोलक स्तोत्र, दुर्गा पूजन विधि, दुर्गा पाठ विधि, कुमारी पूजन आदि अधिक ज्ञान देने से पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है। Rs. 50/-

> औघड्नाथ विरचित तन्त्र सिन्ध्

प्रस्तुत पुस्तक में कर्णिपशाचिनी, कुण्डलिनी जागरण, तन्त्र से सम्बन्धित विभिन्न सिद्धियां, टोने-टोटके, औघड़नाथ तन्त्र की तान्त्रिक व्याख्याएं, तान्त्रिक ऊर्जाओं के स्रोत, बन्ध्यापन, बाजीकरण आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

Rs. 250/-

डाक द्वारा पुस्तकें घर बैठे वी.पी.पी. द्वारा हमसे मंगायें या पधारें

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

गोपनीय तन्त्र साधना एवं टोने-टोटके, गण्डे और तावीन

तन्त्र की साधनाओं एवं सिद्धि के गोपनीय तत्त्व, दीक्षा के तत्त्व, तन्त्र की गोपनीय सिद्धियां, हजारों दुर्लभ मन्त्र, सैकड़ों अति गोपनीय गण्डे, तावीज, मुद्राएं, चिह्र एवं उनको सिद्ध करके प्रयुक्त करने की विधि, तान्त्रिक जीव-जन्तु एवं वनस्पति के अंगों की चमत्कारिक शक्तियों, बांदा के तान्त्रिक उपयोग, पूजा-पाठ, दीप-दान आदि के तान्त्रिक महत्त्व और शक्ति आदि का विस्तृत विश्लेषण। Rs. 250/-

लेखक प्रेम कुमार शर्मा की 'ऑपरेशन हिन्दू'

जो हिन्दू-संस्कृति को अपमानित और कलंकित करने के लिए ही जीवन व्यतीत करते हैं, ऐसे व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक एक चुनौती की भांति है; क्योंकि इसमें हिन्दू संस्कृति के ज्ञान-विज्ञान की आधुनिक व्याख्याएं भी हैं, जो यह स्पष्ट करती हैं कि हमारे ज्ञान-विज्ञान के सामने आधुनिक विज्ञान भी मिथ्या से अधिक और कुछ नहीं है।

Rs. 100/-

स्वप्न विज्ञान

स्वप भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास होते हैं। प्राय: शुभ स्वप्न का फल अशुभ और अशुभ स्वप्न का फल शुभ होता है। वे मानव जीवन की व्याख्या भी करते हैं। महात्मा गांधी तथा अब्राहम लिंकन ने स्पष्टत: मृत्यु से पूर्व स्वप्न द्वारा अपनी मृत्यु का आभास किया था, ब्रिटिश गणितइ रसेल कठिन समस्याओं का उत्तर स्वप्न में ही प्राप्त किया करते थे। इसी भाव की सन्तुष्टि के लिए इस पुस्तक की रचना की गयी है। Rs. 80/-

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र (वास्तुदोष कारण व निवारण)

इस पुस्तक में अपने घर को वास्तुशास्त्र के अनुरूप बनाने, वास्तु दोष पहचानने तथा उसके निवारण का विस्तृत वर्णन किया है। इस पुस्तक से जानकारी प्राप्त कर व्यक्ति अपने घर को तो वास्तुदोष से मुक्त कर ही सकता है, साथ ही अपने जीवन को सुखमय भी बना सकता है।

हस्तरेखाएं बोलती हैं-कीरो

हस्तरेखाओं में जीवन की सचाई छिपी होती है। कोई भी व्यक्ति अपनी हस्तरेखाओं द्वारा अपने भाग्य, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अपने भविष्य को जान सकता है तथा इसका ज्ञान प्राप्त कर आने वाली विष्न-वाधाओं को आंशिक रूप से दूर करने का प्रयत्न कर सकता है।

पाचीन भृगु संहिता महाशास्त्र

(संस्कृत-हिन्दी) (भाषा टीका सहितम्) यह ग्रन्थ सभी ग्यारह खण्डों में हमारे यहां उपलब्ध हैं।

- भृगु संहिता कुण्डली खण्ड
- (1895 संवत् से 2020 संवत् तक)
- भृगु संहिता फलित खण्ड
- भृगु संहिता स्त्री फलित खण्ड
- भृगु संहिता राज खण्ड
- भृगु संहिता नरपित जयरचिरया स्वरोदय खण्ड
- भृगु संहिता मूक प्रश्न विचार खण्ड
- भृगु संहिता सन्तान उपाय खण्ड
- भृगु संहिता नष्ट जन्मांग दीपिका खण्ड
- भृगु संहिता जातक प्रकारण खण्ड
- भृगु संहिता सर्वारिष्ट निवारण खण्ड
- सोने की चिड़िया

Rs. 4800/-

डाक द्वारा पुस्तकें घर बैठे वी.पी.पी. द्वारा हमसे मंगायें या पधारें

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन: (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

लेखक प्रेम कुमार शर्मा की

'सबिह नचावत राम गोंसाई'

सनातन धर्म के प्रति द्वेष और कुटिलता से भरे प्रपंचकारियों के अनर्गल राम विरोधी प्रचार-प्रसार से क्षुब्ध शिवजी की आज्ञा से अमूल्य रोमांचक और विश्व के बौद्धिकवाद को स्तब्ध करने वाली यह पुस्तक विलक्षण और अद्भुत महाविज्ञान की सरल वैज्ञानिक प्रस्तुति है। Rs. 100/-

श्रीमद्भागवत रहस्य

(संत डोगरे जी महाराज)

इस ग्रन्थ के पठन-पाठन, श्रवण, मनन एवं चिन्तन से मनुष्य की अविद्यारूपी सभी भ्रान्तियों की समाप्ति के साथ ही उसे शीघ्र असीम शान्ति की भी प्राप्ति होती है। डोगरेजी ने इस ग्रन्थ को विविध दृष्टान्तों द्वारा अत्यन्त सरल, रोचक एवं शिक्षाप्रद बनाकर भक्तजनों का बहुत कल्याण किया है। श्रीराधा-कृष्ण भगवान् का ऐसा चित्रण किया है, मानो वे हमारे हृदय में निवास करते हैं।

Rs. 280/-

धन्वनारि कृत

जड़ी बूटियों की खेती

अति लाभदायक मशरूम की खेती, कृषि तकनीकें, जैविक खेती, उत्पाद पादकों का व्यापार, वित्तीय मार्गदर्शन, किसान क्रेडिट कार्ड एवं अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों का सम्पूर्ण संकलन।

पाचीन सामुद्रिक शास्त्र

शरीर लक्षण एवं आकृति विज्ञान, हस्तक्षेप विज्ञान, जिसमें आठ सौ चित्रों द्वारा एक-एक रेखाओं एवं रेखाओं से बने योगों को समझाया गया है। सामुद्रिक विज्ञान की इन दोनों शाखाओं के समस्त विवरणों से युक्त एक सम्पूर्ण ग्रन्थ, जिसमें हाथ एवं शरीर के निर्माण हस्तरेखाओं की उत्पत्ति के रहस्यों को भी अनुपम तरीकों से बताया गया है। इस ग्रन्थ को पढ़ने के बाद अन्य पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

भृगु संहिता फलित प्रकाश

एक सम्पूर्ण भृगु संहिता, जिसमें फलगणना के सभी सूक्ष्म तकनीकियों सिद्धान्तों के साथ-साथ विशिष्ट योगों, सारिणयों, मुहूर्तों, विवाह विचार, ग्रहों की शान्ति, रत्न ज्योतिष आदि से सिम्मिलित एक अद्वितीय संस्करण, जो हर प्रकार से पूर्ण है।

Rs. 250/-

वृहद् हस्तरेखा शास्त्र

पांच सौ से अधिक चित्रों से सुसज्जित एक-एक रेखा, उनके योगों का विस्तृत फल बताने वाला एक ऐसा ग्रन्थ, जिसमें भविष्य कथन से सम्बन्धित एक-एक तथ्य स्पष्ट किया गया है। हस्तरेखा तर्कसंगत बौद्धिक वर्णनों से युक्त अमूल्य ग्रन्थ के रूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत है। Rs. 100/-

श्रीमद् भगवद् गीता

तीन संस्करणों में उपलब्ध है-

1. श्रीमद् भगवद् गीता (डीलक्स)

120/-

2. श्रीमद् भगवद् गीता (साधारण)

40/-

3. श्रीमद् भगवद् गीता (संस्कृत हिन्दी पॉकेट)

ॉकेट) 15/-

डाक द्वारा पुस्तकें घर बैठे वी.पी.पी. द्वारा हमसे मंगायें या पधारें

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

आश्वलायना-ऽऽपस्तम्ब-बोधायन-कात्यायन-लौगाद्मि-सत्याषाढ-मत्स्योक्ताः प्रवरदर्पणकार-दर्शिताश्च गोत्रप्रवरर्षयः

गोत्राणामग्रे ग्रन्थप्रमाणविषये साङ्केतिकाक्षराणि लिखितानि, तेषामाशयः निम्नभागे द्रष्टव्यः।

प्रमाणग्रन्थाः

साङ्केतिकं आ. प्रमाणग्रन्थाः

साङ्केतिकं

आश्वलायन:

आप.

लौगाक्षि:

लौ.

आपस्तम्ब: बोधायन:

बो.

सत्याषाढ:

स.

कात्यायन:

का.

मत्स्य:

म.

सं.	गोत्रर्ष	यः	प्र.सं.		प्रवरर्षय:	
1	अगस्ति:	आप.	1	अगस्त्य:		
2	अगस्तिः	बो.	3	आगस्त्य:	दार्ढ्यच्युतः	एध्मवाहः
3	अगस्तिः	का.	3	आगस्त्य:	माहेन्द्र: •	मायोभुवः
4	अगस्त्य:	म,	3	आगस्त्य:	माहेन्द्र:	मायोभुव:
5	अघमर्षण:	, बो.	- 3	वैश्वामित्रः	आघमर्षण:	कौशिक:
	अज:	का लौ.	3	वैश्वामित्रः	माधुच्छन्दसः	आजः
7	आजमीढ:	आप.	3	आङ्गिरसः	आजमीढ:	काण्वः
7	अत्रि:	म.बो.	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	श्यावाश्व
-	अनूप:	का.लौ.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्य
100	अप्नवानः	म.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्यः
8100	अयास्य:	का लौ	3	आङ्गिरसः	आयास्यः	गौतम
- 28	अरुणपराशर:	बो.म.	3	वासिष्ठ:	शाक्त्य:	पाराशर्य
	आगस्त्य:	म,	3	आगस्त्य:	दार्ढ्यच्युतः	ऐध्मवाह
1000	आत्रेय:	का.	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	श्यावाश्व
100	आपस्तम्बः	बो.म.	3	आङ्गिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाज
-	आपस्तम्बः	लौ.का.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः आर्ष्टिषेणः	आनूप
192	आयास्य:	बो.	3	आङ्गिरसः	आयास्य:	गौतम
	अर्ष्टिषेण:	बो.आप.म.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: आर्ष्टिषेण:	आनूप
7.000	आर्ष्टिषेण:	आप.	3	भार्गव:	आर्ष्टिषेण:	आनूप

सं.	गोत्रर्षय		प्र.सं.		प्रवरर्षय:	
_	आश्वलायनः	लौ.का.	3	भार्गव:	वाध्यश्व:	दैवोदास:
	आश्वलायन:	आप.	3	वासिष्ठ:	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
	आश्वलायन:	बो.	1	वासिष्ठ:		
1000	उच (त) थ्यः	म.	3	आङ्गिरसः	औच (त) थ्यः	औशिज:
	उच (त) थ्यः	आ.का.	3	आङ्गिरसः	औच (त) थ्यः	गौतमः
	उच (त) थ्यः	आ.	5	आङ्गिरस:औच(त) थ्यः	गौतमः '	औशिज: काक्षीवत:
	उद्वाह:	н.	3	वासिष्ठ:	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्य:
	उद्दालक:	म.	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	श्वाश्व:
10000	उपमन्युः	बो.म.	3	वासिष्ठ:	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्य:
	और्व:	н.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः	और्व: जामदग्न्य:
30	औशिज:	आप.	3	आङ्गिरसः	औशिज:	काक्षीवत:
31	कण्वः	बो.का.लौ.	3	आङ्गिरस:	आजमीढ:	काण्वः
32	कण्वः	म.	3	आङ्गिरसः	आ (सा)महीयव:	औरक्षय:
33	कण्वः	. आ.	3	आङ्गिरस:	घौर:	काण्वः
34	काण्वः	म.	3	वासिष्ठ:	ऐन्द्रप्रमद:	आभरद्वसव्यः
35	कर्णः	म.	3	आङ्गिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः वान्दनः	मातवचसः
36	कर्दमः	म.	3	काश्यप:	आसित:	दैवल:
37	कश्यपः	बो.आप.	3	काश्यप:	आवत्सार:	ंनैधुवः
38	कश्यपः	म.	3	काश्यपः आसितः '	दैवल:	(शाण्डिलः)
39	कश्यपः	आ.	3	काश्यप:	आवत्सार:	आसितः
40	कश्यपिः	н.	3	भार्गव:	वैतहव्य:	सावेदास:
41	क्रतुः	н.	3	आगस्त्य:	माहेन्द्र:	मायोभुवः
42	कात्यायनः	т.	. 3	आंगिरस:	आ (सा) महीयव:	औरुक्षयः
43	कात्यायन:	आप.का		वैश्वामित्र:	कात्य:	आक्षीलः
44	कात्यायनः	बो का	. 5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: आर्ष्टिषेण:	आनूप:
45	कात्यायनः	आप	. 3	भार्गव:	आर्ष्टिषेण:	आनूपः
46	काविष्टिर:	. बो	100000	आत्रेय:	आर्चनानस:	श्यावाश्वः
47	कावेपाव:	आप	. 3	वैश्वामित्र:	दैवरात:	औदल:
48	काश्यपि:	. н	. 3	भार्गव:	वैतहव्य:	रैवसः
49	The state of the s	म		काश्यपं:	आवत्सार:	नैधुवः
50	कुण्डिनः	बो.आ	. 3	वासिष्ठ:	मैत्रावरुण:	कौण्डिन्यः
51	विकृत्सः	आ	. 3	आंगिरस:	आम्बरीष:	यौवनाश्वः

52 कुरसः आप. 3 जांगिरसः मान्धात्रः कोत्सः केरलाः 54 कुशिकः जाप. 3 जगंगिरसः मान्धात्रः देवरातः औदलः औरलाः 55 कृष्णपराशरः बो.म. 3 जांगिरसः मान्धात्रः पराशरं औरलाः केर्णणपराशरः बो.म. 3 जांगिरसः बार्हस्पत्यः भारद्वाजः वान्दनः भारवचसः भारद्वाजः वान्दनः मातवचसः भारद्वाजः भारद्वा	सं.	गोत्रर्षर	7 :	प्र.सं.		प्रवरर्षय:	
कुशिक: बो.का.ली. 3 वेश्वामित्र: दैवरात: औदल: कौशिक: किश्वामित्र: वासिष्ठ: शाकत्य: प्राप्तर्य: वासिष्ठ: शाकत्य: प्राप्तर्य: भारद्वाज: शाकिरय: भारद्वाज:	52	कुत्स:	आप.	3	आंगिरस:		कोत्स:
54 कुशिक: आप. 3 वैश्वामित्र: आघमर्षण: कौशिक: 55 कृष्णपराशर: बो. 3 वौरवामित्र: शाकत्य: पराशर्यः 57 कौण्डन्य: बो. 3 आत्रेय: आवंनानस: श्यावाश्व: 58 कौथ्य: म. 5 आङ्गिरस: बाहंस्पत्य: भारद्वाज: मातवचस: 59 कौथ्य: म. 5 आङ्गिरस: बाहंस्पत्य: भारद्वाज: मातवचस: 60 कौश्वम: का.लौ. 5 आङ्गिरस: बाहंस्पत्य: भारद्वाज: मातवचस: वाखवन: 61 गर्ग: का.लौ. 5 आङ्गिरस: बाहंस्पत्य: भारद्वाज: गार्य: काण्य: जाङ्गित्य: गार्य: गार्य: गार्य: गार्य: गार्य: गार्य: काण्य: जाङ्गित्य: गार्य: जाङ्गित्य:	53		बो.का.लौ.	3			
क्रिक्रणपराशर: बो.म. 3 वासिष्ठ: शाक्त्य: पराहार्य: श्रांत्रय: अत्रेय: आर्वनानस: श्र्यावाश्व: श्रांत्रय: अत्रेय: आर्वनानस: श्र्यावाश्व: श्रांत्रय: आरंद्राज: मातवचस: भारद्वाज: मातवचस: भार्वः वाहंस्यत्य: भारद्वाज: श्रांत्रय: वाहुल: भार्त्र: अङ्गिरस: बाहंस्यत्य: भारद्वाज: श्रांत्रय: गार्ग्य: श्रांत्रय: गार्ग्य: श्रांत्रय: का.लो. अङ्गिरस: बाहंस्यत्य: भारद्वाज: श्रांत्रय: गार्ग्य: श्रांत्रय: गार्ग्य: श्रांत्रय: का.लो. अङ्गिरस: बाहंस्यत्य: भारद्वाज: भारद्वाज: श्रांत्रय: गार्ग्य: श्रांत्रय: गार्ग्य: श्रांत्रय: चार्त्यय: भारद्वाज: भारद्	- 54	कुशिक:	आप.	3	वैश्वामित्र:		
56 कृष्णात्रेयः बो. 3 आत्रेयः आर्चनानसः श्यावाश्वः 57 कौण्डिन्यः बो. 3 आत्रेयः आर्चनानसः श्यावाश्वः 58 कौथयः म. 5 आङ्गिरसः बार्हस्यत्यः भारद्वाजः वान्दनः मातवचसः 59 कौथुमः का.लो. 5 आङ्गिरसः बार्हस्यत्यः भारद्वाजः वान्दनः मातवचसः 60 कौशिकः म. 3 वैश्वामित्रः आश्मरध्यः वाष्टुलः गार्गः गार्गः आः 5 आङ्गिरसः बार्हस्यत्यः भारद्वाजः गार्यः आङ्गिरसः आङ्गिरसः आङ्गिरसः आण्यः आवितः वेवलः वेवलः गार्यः गार्विष्ठः गार्यः गार्वः गार्	55		बो.म.	3	वासिष्ठ:	शाक्त्य:	
58 कैथय: म. 5 आङ्गरसः बाह्स्पत्यः भारद्वाजः वान्दनः मातवचसः 60 कौशुमः का.लौ. 5 आङ्गरसः बाह्स्पत्यः भारद्वाजः वान्दनः मातवचसः 60 कौशिकः म. 3 वैश्वामित्रः आङ्गरसः बाह्स्पत्यः भारद्वाजः शौन्यः गार्मः 61 गर्गः का.लौ. वो. 5 आङ्गरसः बाह्स्पत्यः भारद्वाजः शौन्यः गार्मः 62 गर्गः अग. 3 अङ्गरसः बाह्स्पत्यः भारद्वाजः शौन्यः गार्मः 63 गर्गः अग. 3 अङ्गरसः बाह्स्पत्यः भारद्वाजः शौन्यः गार्मः 64 गर्वःभानुखः का.लौ. 5 भार्षवः च्यावनः आप्वानः आष्टिषणः आनृपः 65 गर्वःभानुखः का.लौ. 3 काश्यपः आवत्सारः वासिष्ठः 66 गर्वःभानुखः का.लौ. 3 काश्यपः आङ्गरसः आप्वाः काण्यः 67 गर्वःभानुखः का.लौ. 3 काश्यपः अप्वाः भार्वः वेवः 73 गाविष्ठः मात्वः अग्रयः अग्रयः	56	कृष्णात्रेय:	बो.	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	
59 कौथुम: का.लौ. 5 आङ्गिरस: बाईस्पत्य: भारद्वाज: वान्दन: मातवचस: 60 कौशिक: म. 3 अश्मरध्य: वाखुल: 61 गर्ग: का.लो.वो. 5 आङ्गिरस: बाईस्पत्य: भारद्वाज: शौन्य: गार्ग्य: 62 गर्ग: आ. 3 आङ्गिरस: बाईस्पत्य: भारद्वाज: गार्ग्य: शौन्य: 63 गर्प: का.लौ. 5 आङ्गिरस: बाईस्पत्य: भारद्वाज: गार्ग्य: शौन्य: 64 गर्दभ्य: का.लौ. 5 आङ्गिरस: बाईस्पत्य: भारद्वाज: गार्ग्य: आन्य: 65 गर्दभ्य: का.लौ. 3 आङ्गिरस: बाईस्पत्य: भारद्वाज: गार्म्य: आन्य: 66 गर्दभ: म. 3 आङ्गिरस: अण्य: आङ्गिरस: वास्य: वास्य: 67 गर्दभ: म. 3 आङ्गिरस: बाईस्पत्य: भारद्वाज: भारव: वीस्य: 68 गर्दभ: म. 3 आङ्गिरस: बाईस्पत्य: भारद्वाज: पौविद्वा 69 गर्दभ: म. अ अञ्चेत: पौविद्वा 70 गविष्ठिर: म. अञ्चेत: पौविद्वा 71 गाविष्ठिर: आप.	57	कौण्डिन्य:	बो.	3	आंगिरस:	बार्हस्पत्य:	भारद्वाज:
60 कौशिक: म. 3 वैश्वािमत्र: आश्वरसः वाबुल: 61 गर्ग: का.लो. वे. 5 आङ्ग्रिसः बार्हस्पत्यः भारद्वाजः गार्गः गार्मः 63 गर्ग: आ. 3 आङ्ग्रिसः बार्हस्पत्यः भारद्वाजः गार्गः शैन्यः 64 गर्दभ्यः का.लौ. 5 आङ्ग्रिसः बार्हस्पत्यः भारद्वाजः गार्गः आङ्ग्रियः 65 गर्दभीमुखः का.लौ. 3 अण्वत्सारः वासिष्ठः 66 गर्दभामुखः का.लौ. 3 आङ्ग्रिसः आजमीढः काण्वः 67 गर्दभामुखः का.लौ. 3 आङ्ग्रिसः घौरः काण्वः 68 गर्दभामुखः का.लौ. 3 आङ्ग्रिसः घौरः काण्वः 69 गर्दभामुखः का.लौ. 3 आङ्गरसः घौरः काण्वः 70 गविष्ठरः आप. 3 आप्रेयः गविष्ठरः पौर्वितिधः 71 गविष्ठरः पार्वः अ अप्रेयः गार्विष्ठः पौर्वितिधः पौर्वितिधः <td< td=""><td>58</td><td>कौथय:</td><td>म.</td><td>5</td><td>आङ्गिरसः बार्हस्पत्यः</td><td>भारद्वाजः वान्दनः</td><td>मातवचस:</td></td<>	58	कौथय:	म.	5	आङ्गिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः वान्दनः	मातवचस:
60 कौशिक: म. 3 वैश्वािमत्र: आश्वरसः वाबुल: 61 गर्ग: का.लो. वे. 5 आङ्ग्रिसः बार्हस्पत्यः भारद्वाजः गार्गः गार्मः 63 गर्ग: आ. 3 आङ्ग्रिसः बार्हस्पत्यः भारद्वाजः गार्गः शैन्यः 64 गर्दभ्यः का.लौ. 5 आङ्ग्रिसः बार्हस्पत्यः भारद्वाजः गार्गः आङ्ग्रियः 65 गर्दभीमुखः का.लौ. 3 अण्वत्सारः वासिष्ठः 66 गर्दभामुखः का.लौ. 3 आङ्ग्रिसः आजमीढः काण्वः 67 गर्दभामुखः का.लौ. 3 आङ्ग्रिसः घौरः काण्वः 68 गर्दभामुखः का.लौ. 3 आङ्ग्रिसः घौरः काण्वः 69 गर्दभामुखः का.लौ. 3 आङ्गरसः घौरः काण्वः 70 गविष्ठरः आप. 3 आप्रेयः गविष्ठरः पौर्वितिधः 71 गविष्ठरः पार्वः अ अप्रेयः गार्विष्ठः पौर्वितिधः पौर्वितिधः <td< td=""><td>59</td><td>कौथुम:</td><td>का लौ.</td><td>5</td><td></td><td></td><td>मातवचस:</td></td<>	59	कौथुम:	का लौ.	5			मातवचस:
62 गर्ग: आं: अं: अं: शंन्य: शंन्य: शंन्य: गार्य: शंन्य: गार्य: गार्	60		н.	3	वैश्वामित्र:	आश्मरथ्य:	वाघुल:
63 गर्गः आ अ अ अङ्गिरसः शैन्यः गार्ग्यः गर्दभ्यः का.लौ. अ अङ्गिरसः भाग्वः आप्वावनः आष्टिषेणः आनूपः विस्वः का.लौ. अ अङ्गिरसः आजमीढः काण्वः गर्दभः आ अङ्गिरसः आङ्गिरसः आजमीढः काण्वः गर्दभः अ अङ्गिरसः आङ्गिरसः आसितः दैवलः गर्दभीमुखः का.लौ. अ अङ्गिरसः आसितः दैवलः गर्विष्ठरः आप.बो. अञ्जेयः आर्चनानसः पौर्वितिथः गर्विष्ठरः आप. अञ्जेयः आर्चनानसः पौर्वितिथः गर्विष्ठरः आप. अञ्जेयः आर्चनानसः गर्विष्ठरः पौर्वितिथः अञ्जेयः आर्चनानसः गर्विष्ठरः गर्विष्ठरः गर्विष्ठरः गर्विष्ठरः अञ्जेयः आर्चनानसः गर्विष्ठरः गर्विष्ठरः गर्विष्ठरः गर्विष्ठरः गर्विष्ठरः अञ्जेयः अर्चनानसः गर्विष्ठरः गर्विद्वरः गर्विरः कापिभुवः जर्विरः आङ्गिरसः बार्हरसः बार्हरसः वर्वरः भर्वरः गर्वरः	61	गर्ग:	का लो बो	5	आङ्गिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः शैन्यः	
11 12 13 3 3 3 3 3 3 3 3	62	गर्ग:	आ.	5	आङ्गिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाज: गार्ग्य:	शैन्यः
64 गर्दभ्यः का.लौ. 5 भार्गवः च्यावनः आप्वानः आष्टिषेणः आन्तूपः 65 गर्दभीमुखः का.लौ. 3 आङ्गरसः आजमीढः काण्वः 67 गर्दभीमुखः का.लौ. म. 3 आङ्गरसः घौरः काण्वः 68 गर्दभीमुखः का.लौ. म. 3 आङ्गरसः आसितः दैवलः 69 गर्दभीमुखः का.लौ. व. 3 आङ्गरपः आसितः दैवलः 70 गविष्ठरः आप. बो. 3 आत्रेयः आचितासः पौर्वातिथिः 71 गविष्ठरः म.का.लौ. 3 आत्रेयः गविष्ठरः पौर्वातिथिः 72 गविष्ठरः आप. 3 अत्रेयः गविष्ठरः पौर्वातिथिः 73 गार्थिः आप. 3 अत्रेयः गाधिनः गविष्ठरः पौर्वातिथिः 73 गार्गायः म. 3 आङ्गरसः गाधिनः वैत्वः वैतः 74 गार्गाः म. 3 आङ्गरसः गौरितः काप्यः गार्वः गौरितः जौरितः गौरितः गौरितः <td< td=""><td></td><td></td><td>आ.</td><td>3</td><td>आङ्गिरसः</td><td>शैन्य:</td><td>गार्ग्य:</td></td<>			आ.	3	आङ्गिरसः	शैन्य:	गार्ग्य:
66 गर्दभ: म. 3 आङ्गिरस: आजमीढ: काण्व: 67 गर्दभ: आ. 3 आङ्गिरस: घौर: काण्व: 68 गर्दभीमुख: का.लौ. म. 3 आसित: दैवल: 69 गर्दभीमुख: का.लौ. 3 शाण्डिल: आसित: दैवल: 70 गविष्ठर: आप. वो. 3 आत्रेय: आर्चनानस: पौर्वातिथि: 71 गविष्ठर: आप. 3 आत्रेय: आर्चनानस: गविष्ठिर: 71 गविष्ठर: आप. 3 अत्रवामित्र: गाधिन: गविष्ठिर: 72 गविष्ठर: आप. 3 अत्रवामित्र: गाधिन: गविष्ठर: 73 गार्था: आप. 3 अत्रवामित्र: गाधिन: गाधिन: गाधिन: वैत्रवा 74 गार्था: म. 3 अङ्गिरस: तैत्तर्द्यः गार्वे काण्यं: काण्यं: काण्यं: काण्यं: काण्यं: काण्यं: गार्वे गार्वे: गार्यः आङ्गिरस: भार्वे: भार्वे: भार्वे: भार्वे: भार्वे: <			का लौ.	5		आप्नवान: आर्ष्टिषेण:	आनूप:
66 गर्दभ: म. 3 आङ्गरसः आजमीढः काण्वः 67 गर्दभ: अग. 3 आङ्गरसः घौरः काण्वः 68 गर्दभीमुखः का.लौ. म. 3 आसितः दैवलः 69 गर्दभीमुखः का.लौ. अ 3 आसितः दैवलः 70 गविष्ठरः आप. बो. 3 आत्रेयः आसितः पैविष्ठिः 71 गविष्ठरः आप. 3 आत्रेयः गविष्ठरः पौर्वाितिषः 72 गविष्ठरः आप. 3 अत्रेयः आर्चनानसः पौर्विष्ठिः 73 गाधिनः आप. 3 अत्रेवािमतः गाधिनः दैवणः 74 गार्गाः म. 3 अत्र्वािमतः गाधिनः पैवाितिथः 75 गार्गाः म. 3 अत्र्वािमतः गाधिनः पैवसः 76 गार्गाः म. 3 अङ्गिः औङ्गरसः तैतिरः मार्यः 77 गार्रमेदः बो. 1 भार्वः भार्वः भार्वः गार्वः गार्वः भार्वः	65	गर्दभीमुख:	का लौ.	3	काश्यप:	आवत्सार:	वासिष्ठ:
67 गर्दभ: आ. 3 आङ्गिरस: घौर: काण्वः 68 गर्दभीमुख: का.लौ. म. 3 आसित: दैवल: 70 गविष्ठर: आप.बो. 3 आग्नेय: आसित: दैवल: 70 गविष्ठर: आप.बो. 3 आग्नेय: आविष्ठर: पौर्वाितिष्टा 71 गविष्ठर: आप. 3 आग्नेय: गविष्ठर: पौर्वाितिष्टा 72 गविष्ठर: आप. 3 आग्नेय: आग्नेय: पौर्वाितिष्टा 73 गािधन: आप. 3 अग्नेय: आग्नेय: पौर्वाितिष्टा 73 गािधन: आप. 3 अग्नेय: गािधन: पैवाितिष्टा 74 गार्थ: आप. 3 अग्नेय: गािधन: पैवाितिष्टा 75 गार्य! म. 3 आङ्गिरस: तैत्तरः काण्मिः काण्मिः 76 गार्य! आ. 3 आङ्गिरस: वौत्तरः भार्यः गार्यः 76 गार्य! आ. 3 अङ्गिरस: शेतरः भार्यः गार्यः 77 गार्य! बो. 1 शार्यः शार्यः शार्यः<			म.	3	आङ्गिरसः	आजमीढ:	काण्वः
69 गर्दभीमुखः का.लौ. 3 शाण्डिलः आसितः दैवलः 70 गविष्ठिरः आप. बो. 3 आत्रेयः आर्चनानसः पौर्वातिष्टिः 71 गविष्ठिरः म. का.लौ. 3 आत्रेयः गविष्ठिरः पौर्वातिष्टिः 72 गविष्ठिरः आप. 3 अत्रेयः आर्चनानसः गविष्ठिरः 73 गाधिनः आप. 3 वेश्वामित्रः गाधिनः एविष्ठिरः 73 गार्माः अप. 3 वेश्वामित्रः गाधिनः ऐवसः 74 गार्माः म. 3 आङ्गिरसः गाधिनः वेतहव्यः १ 75 गार्मः बो. 5 आङ्गिरसः बार्हस्पत्यः भारद्वाजः शौन्यः गार्मः 76 गार्मः बो. 5 आङ्गिरसः बार्हस्पत्यः भारद्वाजः शौन्यः गार्मः 78 गार्तमदः बो. 1 शौनकः गार्मः भार्गः भार्मः			आ.	3	आङ्गिरसः	घौर:	
69 गर्दभीमुख: का.लौ. 3 शाण्डिल: आसित: दैवल: 70 गविष्ठिर: आप. बो. 3 आत्रेय: आर्चनानस: पौर्वातिथि: 71 गविष्ठिर: म. का.लौ. 3 आत्रेय: गविष्ठिर: पौर्वातिथि: 72 गविष्ठिर: आप. 3 अत्रेय: आर्चनानस: गविष्ठिर: 73 गार्धन: आप. 3 अत्रेय: आर्चनानस: गविष्ठिर: 73 गार्धन: आप. 3 अत्रेवामित्र: गार्धन: चैतहल्य: दैवस: 74 गार्य: म. 3 आङ्गिरस: वैतहल्य: दैवस: 75 गार्य: बो. 5 आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्य: 76 गार्त्य: बो. 1 आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: औट्य: गार्य: 78 गार्त्य: बो. 1 गार्त्य: भार्गव: भार्गव: भार्य: भार्य: 79 गार्त्य: बो. 1 गार्त्य: भार्गव: आप्रेव: भार्य: भार्य: भार्य: भार्य: भार्			का.लौ.म.	3	काश्यपः	आसित:	
70 गविष्ठिर: आप.बो. 3 आत्रेय: आर्चनानस: पौर्वातिथि: गविष्ठिर: म.का.लौ. 3 आत्रेय: गविष्ठिर: पौर्वातिथि: गविष्ठिर: आप. 3 आत्रेय: आर्चनानस: गविष्ठिर: गविष्ठिर: गार्धिन: आप. 3 लेश्वामित्र: गार्धिन: तैत्वण: तैत्वण: गार्थाय: म. 3 आङ्गिरस: तैत्तिर: कापिभुव: गार्य्य: म. 3 आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्य्य: गार्य्य: आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्य्य: गार्य्य: आङ्गिरस: बो. 1 शौनक: गार्त्यमद: बो. 1 शौनक: गार्त्यमद: म. 5 भार्ग्व: च्यावन: आप्नवान: आष्ट्रिषेण: आनूप: गार्व्य: भार्ग्व: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: शांविः च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: शांविः च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: औदल:			कान्लौ	3	शाण्डिल:	आसित:	
71 गविष्ठिर: म.का.लौ. 3 आत्रेय: गविष्ठिर: पौर्वातिथि: गविष्ठिर: आप. 3 आत्रेय: आर्चनानस: गविष्ठिर: गािधन: आप. 3 तेत्रवािमत्र: गािधन: वैतहव्य: वैतहव्य: वैतहव्य: वैतहव्य: वैतहव्य: विष्ठिर: गार्ग्य: म. 3 आङ्गिरस: वित्तर: कािपभुव: गार्ग्य: आः 3 आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्ग्य: गार्ग्य: आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्ग्य: गार्ग्य: आङ्गिरस: काें गार्त्समद: बाें 1 शाैनक: गार्त्समद: बाें 1 गार्त्समद: बाें 1 गार्त्समद: भार्वाचन: आप्नवान: आर्ष्टिषेण: आनूप: भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: शांव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: औदल: अौदल: वैश्वािमत्र: दैवरात: औदल: औदल:		The state of the s		3	आत्रेय:	आर्चनानसः	
72 गविष्ठिर: आप. 3 आत्रेय: आर्चनानस: गविष्ठिर: तैयण: तैयण: तैयण: पार्गीय: म. 3 भार्गव: वैतहव्य: तैतिर: कापिभुव: गार्य: म. 3 आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्य: गार्य: आ. 3 आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्य: गार्य: आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्य: गार्य: गार्य: शांनिक: गार्त्समद: बो. 1 शौनक: गार्त्समद: बो. 1 शौनक: गार्त्समद: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: आर्ष्टिषेण: आनूप: गांन्व: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: शांनिव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: शौदल: औदल: औदल: औदल:				3	आत्रेय:	गविष्ठिर:	
73 गाधिन: आप. 3 वैश्वामित्र: गाधिन: रैवण: गार्गय: म. 3 भार्गव: वैतहव्य: रैवस: कापिभुव: गार्ग्य: म. 3 आङ्गिरस: तैत्तिर: कापिभुव: गार्ग्य: गार्ग्य: आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्ग्य: गार्ग्य: गार्ग्य: आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्ग्य: गार्ग्य: गार्त्य: गार्त्य: गार्त्य: गार्त्य: गार्त्य: गार्त्य: वो. 1 शौनक: गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: पार्व: भार्गव: च्यावन: आप्नवान: आष्टिषेण: आनूप: गालव: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: गालव: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: गालव: का.ली. 3 वेश्वामित्र: दैवरात: औदल:		The state of the s	आप.	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	
74 गार्गीय: म. 3 भार्गव: वैतहव्य: रैवस: किप्भुव: गार्ग्य: म. 3 आङ्गिरस: तैत्तिर: कापिभुव: गार्ग्य: बो. 5 आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्ग्य: गार्ग्य: आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्ग्य: गार्ग्य: गार्त्मद: बो. 1 शौनक: गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: आष्ट्रिषेण: आनूप: गालव: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: गालव: का.ली. 3 वेश्वामित्र: दैवरात: और्व: औदल:			आप.	3	वैश्वामित्र:	गाधिन:	
75 गार्ग्य: म. 3 आङ्गिरस: तैत्तिर: कापिभुव: निर्मार्थ: बो. 5 आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्ग्य: गार्ग्य: आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्ग्य: गार्त्मद: बो. 1 शौनक: गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: भार्गव: च्यावन: आप्नवान: आष्ट्रिषेण: आनूप: गालव: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: शालव: का.ली. 3 वेश्वामित्र: दैवरात: और्व: औदल:			н.	3	भार्गव:	वैतहव्यः	
76 गार्ग्य: बो. 5 आङ्गिरस: बार्हस्पत्य: भारद्वाज: शैन्य: गार्ग्य: गार्ग्य: आङ्गिरस: बो. 1 आङ्गिरस: शैन्य: पार्ग्य: पार्त्य: गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: पार्ट्भ्य: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: आष्ट्रिषेण: आनूप: गालव: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: श्राप्तव: च्यावन: अप्नवान: और्व: जामदग्न्य: श्राप्तव: च्यावन: और्व: जामदग्न्य: औदल:		And the second s	н.	3	आङ्गिरसः	तैत्तिर:	
77 गार्ग्य: आ. 3 आङ्गिरस: शैन्य: मार्ग्य: पार्ल्समद: बो. 1 शौनक: गार्ल्समद: बो. 1 गार्ल्समद: बो. 1 गार्ल्समद: पार्ट्भ्य: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: आष्ट्रिषेण: आनूप: गालव: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: श्राण्वव: का.ली. 3 वैश्वामित्र: दैवरात: औदल:			बो.	5	आङ्गिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाज: शैन्य:	गार्ग्य:
78 गार्त्समद: बो. 1 शौनक: 79 गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: 80 गार्दभ्य: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: आष्ट्रिषेण: आनूप: 81 गालव: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: 82 गालव: का.लो. 3 वैश्वामित्र: दैवरात: औदल:			आ.	3	आङ्गिरसः	शैन्य:	मार्ग्य:
79 गार्त्समद: बो. 1 गार्त्समद: भगर्वान: आप्नवान: आर्ष्टिषेण: आनूप: भार्गव: च्यावन: आप्नवान: आर्ष्टिषेण: आनूप: भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: श्राणव: का.लो. 3 वैश्वामित्र: दैवरात: औदल:			बो.	1	शौनक:		
80 गार्दभ्यः म. ५ भार्गवः च्यावनः आप्नवानः आष्टिषेणः आनूपः 81 गालवः म. ५ भार्गवः च्यावनः आप्नवानः और्वः जामदग्न्यः 82 गालवः का.लो. ३ वैश्वामित्रः दैवरातः औदलः	A. T.		बो.	1	गार्त्समद:		
81 गालव: म. 5 भार्गव: च्यावन: आप्नवान: और्व: जामदग्न्य: 82 गालव: का.लो. 3 वैश्वामित्र: दैवरात: औदल:			н.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः आर्ष्टिषेणः	आनूप:
82 गालव: का.ली. 3 वैश्वामित्र: दैवरात: औदल:		The state of the s	н.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्यः
			का.लौ.	3	वैश्वामित्रः	दैवरात:	औदल:
83 गृत्समदः आ. 3 भार्गवः शौनहोत्रः गार्त्समदः			आ.	3	भार्गवः	शौनहोत्र:	गार्त्समदः

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.		प्रवर्षय:	
	0270.586.52	लौ.का.म.	2	भार्गव:	गार्त्समद:	
175	गृत्समद:	लो का	1	गार्त्समद:		
86	गोभिल:	म.	3	काश्यपः	आसित:	दैवल:
87	गौतमः	आ.	3	आंगिरसः	आयास्य:	गौतम:
88	गौतमः	म.	3	आंगिरसः	औच (त) थ्यः	ओशिज:
89	गौतमः	का.	3	आंगिरसः	औच (त) थ्यः	गौतम:
90	गौरपराशर:	बो.म.	3	वासिष्ठः	शाक्त्य:	पाराशर्य:
	गौरिवीत:	बो.	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	पौर्वातिथि:
92	घृतकौशिक:		2	वैश्वामित्र:	कापातरसः	
93	घोर:	आ.	3	आंगिरसः	घौर:	काण्व:
94	चान्द्रायणः	तो.	3	आंगिरस:	गौरुवीत:	साङ्कृत्य:
95	चैक:	का लो	3	वासिष्ठ:	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्य:
96	च्यवन:	म.	5	भार्गव: च्यवन:	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्य:
97	जमदग्नि: (वत्स:)	लो का म	5	भार्गव: च्यवन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्यः
98	जमदग्नि: (अवत्स:)	म.	3	भार्गव:	च्यावन:	आप्नवान:
99	जातूकर्ण्यः	म.	3	वासिष्ठ:	आत्रेय:	जातूकर्ण्यः
100	जातूकर्ण्यः	बो.	1	वासिष्ठ:		
101	जातूकर्ण्यः	का लो	3	वांसिष्ठ:	आत्रेय:	जातूकर्ण्यः
102	जातूकर्ण्यः	आप.	3	वासिष्ठ:	ऐन्द्रप्रमद:	आभरद्वसव्यः
103	जाबाल:	का लो	3	वैश्वामित्र:	दैवरात:	औदल:
104	जाबालि:	बो.	3	वैश्वामित्र:	दैवरात:	औदल:
105	जाबालि:	म.	3	भार्गव:	वैतभव्य:	रैवस:
106	जाबालि:	बो.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्यः
107	जामदग्न्य:	आप.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्यः
108	जामदग्न्य:	आप.	3	भार्गव:	और्व:	जामदग्न्यः
109	जैमिनि:	आ:	3.	भार्गव:	वैतहव्य:	सावेदासः
110	दक्ष:	का लो	3	आत्रेय:	गाविष्ठिर:	पौर्वातिथिः
111	दत्तात्रेयः	बो.	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	श्यावाश्व:
112	दार्ढच्युत:	बो.	3	आगस्त्य:	दार्ढ्यच्युतः	ऐघ्मवाहः
113	दालभ्य:	का लो	3	आंगिरस:	आम्बरीष:	यौवनाश्वः
114	दालभ्य:	का.ल.	3	मान्धात्र:	आम्बरीष:	यौवनाश्वः
115	दिवावसिष्ठ:	म.	1 3	काश्यप:	आव्रत्सार:	वासिष्ठः

सं.	गोत्रर्षय		प्र.सं.		प्रवर्षय:	117
116	दिवोदास:	म.	3	भार्गव:	वाप्रथश्व:	दैवोदास:
117	दीर्घतमसः	बो.	5	आंगिरस:	औच (त) थ्यः काक्षीवतः	गौतमः दैर्घतमसः
118	दीर्घतमसः	आ.	5	आंगिरस:	औच (त) थ्यः काक्षीवतः	गौतमः दैर्घतमसः
. 119	देवरात:	आ.प.	3	वैश्वामित्रः	दैवरात:	औदल:
120	देवरात:	का लो	3	वैश्वामित्र:	दैवश्रवसः	दैवतरस:
121	धनञ्जय:	आप.स.	3	वैश्वामित्र:	माधुच्छन्दस:	धानञ्जय:
122	धनञ्जयः	н.	3	वैश्वामित्र:	माधुच्छन्दस:	आघमर्षण:
123	धन्वन्तरिः	बो.	3	काश्यप:	आवत्सार:	शाण्डिल्य:
124	धन्वन्तरिः	बो.	3	शाण्डिल:	आसित:	दैवल:
125	धूम्रपाराशर:	बो.म.	3	वासिष्ठ:	शाक्त्य:	पाराशर्य:
126	निधुव:	बो.	3	काश्यपः	आवत्सार:	नैधुव:
127	नैधुव:	आ.	3	काश्यपः	आवत्सार:	नैधुव:
128	पतञ्जन:	का लो	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	श्याताश्व:
129	पतञ्जल:	का लो बो	3	आंगिरसः	आ (सा)महीयवः	औरक्षय:
130	पराशर:	आप.बो.म.	3	वसिष्ठः	शाक्त्य:	पाराशर्य:
131	पाणिनि:	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्य:
132	पाणिनि:	स.का.लो.	3	वैश्वामित्र:	माधुच्छन्दसः	धानञ्जय:
133	पाणिनि:	म .	3	वैश्वामित्र:	माधुच्छन्दसः	आघमर्षण:
134	पारण:	н.	3	आगस्त्य:	पौर्णमासः	पाराण:
135	पार्थ:	बो.	3	भार्गव:	वैन्यः	पार्थ:
136	पुलस्ति:	बो.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः और्वः	वैद:
137	पुलस्तिः	का.म.	3	आगस्त्य:	माहेन्द्र:	मायोभुवः
	पुलह:	म.	3	अत्मस्त्यः	माहेन्द्र:	मायोभुव:
139	पौर्णमासः	म.	3	आगस्त्य:	पौर्णमास:	पारण:
140	पौलस्ति:	लो.का.	3	आगस्त्य:	माहेन्द्र:	मायोभुवः
	पौलस्त्य:	म.	3	आगस्त्य:	माहेन्द्र:	मायोभुव:
	पौलस्त्य:	म.	3	भार्गव:	च्यावन:	आप्नवान:
	पौलस्त्य:	लो.का.म.	3	भार्गव:	और्व:	जामदग्न्य:
	पौलह:	н.		आगस्त्य:	माहेन्द्रः	मायोभुव:
	विद:	आ.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः और्वः	बैद:
	विद:	н.	3	भार्गव:	च्यावन:	आप्नवानः
147	बृहदुक्थ:	आ.	3	आंगिरसः	बार्हदुक्थः	गौतम:

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.	. प्रवर्षयः		
-	बृहदुक्थः	का लो	3	आंगिरसः	बार्हदुक्थः	वामदेव:
149	बोधायन:	का लो	3	वासिष्ठ:	आत्रेय:	जातूकर्ण्य:
150	बौधायन:	बो.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः और्वः	बैद:
151	भरद्वाज:	का लो.	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः शौङ्गः	शैशिर:
152	भरद्वाज:	н.	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाज: मान्त्रवर:	आत्मभुवः
153	भरद्वाज:	बो.आप.	3	आंगिरस:	बार्हस्पत्य:	भारद्वाज:
154	भरद्वाजाग्निवेश्य:	आ.	3	आंगिरस:	बार्हस्पत्य:	भारद्वाज:
155	भार्ग:	म.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्य:
156	भारद्वाज:	н.	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाज: मौद्गल्य:	शैशिर:
157	भारद्वाजायनि:	बो.	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	श्यावाश्व:
158	भारद्वाजायन:	बो.	3	आत्रेय:	आर्चनानसः	श्यावाश्व:
159	भृगुः	लो.का.	1 5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्य:
160	भृगव:	н.	3	काश्यप:	आवत्सार:	नैधुव:
161	मयोभुव:	लो का म	3	आगस्त्य:	माहेन्द्र:	मायोभुव:
162	माण्डव्य:	बो.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्य:
163	माधुच्छन्दस:	का.लो.	3	वैश्वामित्र:	माधुच्छन्दस:	आज:
164	माध्यन्दिनिः	बो.	- 3	वासिष्ठ:	मैत्रावरुण:	कौण्डिन्यः
165	मान्धाता	आ.	3	मान्धात्र:	आम्बरीष:	यौवनाश्व:
166	मान्धाता	बो.	3	आंगिरस:	आम्बरीष:	यौवनाश्व:
167	मान्धातुः	बो.	3	आंगिरस:	आम्बरीष:	यौवनाश्व:
168	मारीच:	н.	3	काश्यप:	आवत्सार:	नैधुव:
169	मार्कण्डेय:	बो.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्य:
170	माहुल:	बो.	3	वैश्वामित्र:	साहुल:	माहुल:
171	माहुलि:	बो.	3	आत्रेय:	आर्चनानस:	श्यावाश्वः
172	मित्रयु:	बो.	3	भार्गव:	वाध्रयश्व:	दैवोदास:
	मित्रावरुण:	का लो	3	वासिष्ठ:	मैत्रावरुण:	कौण्डिन्यः
	मुद्गलः	म.आ.	3	आंगिरस:	भार्म्यश्व:	मौद्गल्यः
	मुद्गलं:	बो.	3	आत्रेय:	आर्चनानस:	पौर्वातिथिः
	मैत्रेय:	का.	3	काश्यप:	आवत्सार:	रैभ्यः
100	मौद्गल:	लो.का.	3	भार्गव:	वैतहव्य:	सावेदासः
	मौद्गल:	लो का	3	आंगिरस:	भाम्यश्व:	मौद्गल्यः
	मौद्गल:	लो.का.	1 3	वासिष्ठ:	मैत्रावरुण:	कौण्डिन्यः

Ħ.	गोत्रष	वि:	प्र.सं.		प्रवर्षय:	
180	मौद्गल्य:	आप.	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व	जामदग्न्य:
181	याज्ञवल्क्यः	म.	1	वासिष्ठ:		
182	यस्कः	बो.	3	भार्गव:	वैतहव्य:	सावेदास:
183	याज्ञवल्क्यः	का.	1	वासिष्ठ:		
184	याज्ञवल्क्यः	आप.	3	वासिष्ठ:	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्यः
185	याज्ञवल्क्यः	आप.	3	वैश्वामित्र:	दैवरात:	औदल:
186	रथीतर:	का लो	3	भार्गव:	वैतहव्य:	सावेदास:
	रथीतर:	वो.	3	आंगिरसः	वैरूप:	रथीतर:
188	रहूगण:	आ.	3	आंगिरसः	वैरूप:	पार्षदश्व:
	रहूगण:	बो.	3	आंगिरसः	राहूगण्य:	गौतमः
	रेणुः	बो.	3	आंगिरस:	गौतम:	शारद्वन्तः
	रेणुः	आ	3	वैश्वामित्र:	गधिन:	रैणवः
	रेभ:	का.आप.आ	3	काश्यपः	आवत्सार:	रैभ्यः
	लौगाक्षि:	बो	3	काश्यपः	आवत्सार:	वासिष्ठः
	लौगाक्षि:	का लो	3	काश्यपः	आवत्सार:	वासिष्ठः
	लौगाक्षिः	का लो	3	आंगिरसः	औच (त) थ्यः	गौतम:
	वत्सः	आप	. 3	भार्गव:	और्व:	जामदग्न्य:
	वत्सः	आप	. 5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्य:
	वसिष्ठ:	आ.म.बो	. 1	वासिष्ठ:		
	वसिष्ठ:) म		वासिष्ठ:	आत्रेय:	जातूकण्यीः
	वात्सायनः	आप	. 3	भार्गव:	और्व:	जामदग्न्यः
	वात्सायन:	बो		भार्गव: च्यावन:	आपवानः और्वः	जामदग्न्य:
	वातस्य:	बो	. 5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व	जामदग्न्य:
	वात्स्य:	का लो	. 3	भार्गव:	च्यावनः	आप्नवानः
	वात्स्य:	का लो		आंगिरस:	आम्बरीषः	यौवनाश्व:
	वात्स्य:	लो का		मान्धात्र:	आम्बरीष:	यौवनाश्व:
	वात्स्य:	क		काश्यप:	आवत्सार:	नैध्रुव:
	वात्स्यायनः	Ŧ		काश्यपः	आवत्सार:	नैधुव:
	3 वात्स्यायनः	बं	. 5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्य:
	वात्स्यायन:	बे		काश्यपः	आवत्सार:	शाण्डिल्यः
1) वात्स्यायनः	बे	1. 3	काश्यप:	आवत्सार:	दैवल:
	। वात्स्यायनः	बं		काश्यपः	आवत्सार:	आसित:

सं.	गोत्रर्षयः		प्र.सं.		प्रवरर्षय:	
_	वात्स्यायनः	बो.	3	शाण्डिल्य:	आसित:	दैवल:
213	वाध्रयश्व:	आप.	1	वाध्रयश्व:		
214	वाध्रयश्व:	आ.	3	भार्गव:	वाध्रयश्व:	दैवोदास:
215	वाधूल:	बो.	3	भार्गव:	वैतहव्य:	सावेदास:
216	वामदेव:	आप.	3	आंगिरसः	वामदेव:	बार्हदुक्थ:
217	वालखिल्य:	आप.	3	वैश्वामित्र:	दैवरात:	औदल:
218	वाल्मीकि:	बो.	-5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवान: और्व:	जामदग्न्य:
219	वासिष्ठ:	बो.	1	वासिष्ठ:		
220	वासिष्ठ:	आप.	3	वासिष्ठ:	ऐन्द्रप्रमदः	आभरद्वसव्य:
221	बिद:	बो.	5	भार्गवः च्यावनः	आप्नवान: और्व:	वैद:
222	बिद:	लो.का.	3	भार्गव:	और्व:	जामदग्न्य:
223	विश्वामित्र:	का लो	3	वैश्वामित्र:	दैवरात:	औदल:
224	विश्वामित्र:	बो.	3	वैश्वामित्र:	माधुच्छन्दस:	आज:
225	विश्वामित्र:	का.	3	वैश्वामित्र:	आश्मरथ्य:	वाधुल:
226	विष्णुवृद्धः	म.आ.	3	आंगिरस:	पौरुकुत्स:	त्रासदस्यवः
227	विष्णुवृद्धः	का लो	3	आंगिरस:	पार्षदश्व:	राथीतर:
228	वीतहव्य:	आप.	3	भार्गव:	वेतहव्य:	सावेदास:
229	वीतहव्य:	म.	5	भार्गव: च्यावन:	आपवान: और्व:	जामदग्न्यः
230	वेणुः	आ.	3	वैश्वामित्र:	गाधिन:	वैणवः
231	वैन्यः	बो.	3	भार्गव:	वैन्य:	पार्थः
232	वैरूप:	बो.	3	आंगिरसः	वैरूप:	राथीतर:
233	वैरूप:	बो.	3	आंगिरस:	पार्षदश्व:	वैरूपः
234	वैरूप:	आप.	3	आष्टादंष्ट्र:	पार्षदश्व:	वैरूपः
235	शक्ति:	का लो	3	आंगिरस:	आ (सा) महीयव:	औरक्षय:
236	शक्ति:	आ.	. 3	शाक्त्य:	गौरुवीत:	सांकृत्यः
237	शाण्डिल:	बो.	3	काश्यप:	आवत्सार:	शाण्डिल्यः
238	शाण्डिल:	वो.	3	काश्यप:	आवत्सार:	दैवल:
239	शाण्डिल:	बो.	3	काश्यप:	आवत्सार:	आसितः
240	शाण्डिल:	आ.	3	काश्यप:	आसित:	दैवल:
241	शाण्डिल:	आ.बो.	3	शाण्डिल्य:	आसित:	दैवलः
242	शरद्वन्तः	बो.	3	आंगिरस:	गौतम:	शारद्वन्तः
243	शरद्वन्तः	बो.का.	3	काश्यप:	आवत्सार:	वासिष्ठः

सं.	गोत्रर्षय		प्र.सं.		प्रवर्षय:	
244	शरद्वन्तः	बो.	3	काश्यपः	आवत्सार:	आसित:
245	शाक्त्य:	आ.	3	शाक्त्य:	गौरुवीत:	सांकृत्य:
246	शाण्डिल्यः	आ.प.म.	3	काश्यपः	आसित:	दैवल:
247	शाण्डिल्य:	आप.	2	आसित:	दैवल:	
248	शाण्डिल:	म.	11	वासिष्ठ:	FEICHT WEIGH	及自然的表演
249	शिशिर:	बो.	3	वैश्वामित्र:	कात्त्य:	आक्षील:
250	शुङ्गशैशिर:	आप.	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः कात्त्यः	आक्षील:
	शुनक:	बो.आप.	1.	गार्त्समद:	e to p through the	
252	शुनक:	आ.	3	भार्गव:	शौनहोत्र:	गार्त्समद:
	शुनक:	बो.	1	शौनक:		
	পূত্র:	बो.	3	आंगिरसः	बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः
	शैशिर:	का लो	5	आंगिरसः बार्हस्पत्यः	भारद्वाजः शौङ्गः	शैशिर:
	शैशिर:	म.	3	काश्यपः	आवत्सार:	वासिष्ठः
257		बो.म.	3	वासिष्ठ:	शाक्त्य:	पाराशर्य:
258	श्वेतपराशर:	बो.म.	3	वासिष्ठ:	शाक्त्य:	पाराशर्यः
	सङ्कृति:	का लो बो	3	आंगिरसः	सांकृत्यः	गौरुवीत:
	साङ्कृत्यः	लो.का	5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्य:
	सावर्णि:	बो	. 5	भार्गव: च्यावन:	आप्नवानः और्वः	जामदग्न्यः
	सावर्णिः	आ	. 3	भार्गव:	वैतहव्यः	सावेदास:
	साहुल:		3	वैश्वामित्रः	साहुल:	माहुल:
	सुवर्णरेतसः	men	2	वैश्वामित्रः	कापातरसः	
	सोमवाहः	बो.आप	. 3	आगस्त्यः	दार्ढ्यच्युतः	सौमवाह:
	सोमराजक:	आ		आंगिरसः	सौमराज:	गोतमः
	हरित:	ं बो	100	आंगिरसः	आम्बरीषः	यौवनाश्वः
	हरित:	आ		मान्धात्र:	आम्बरीषः	यौवनाश्व:
	हरित:	बो	5 3	वासिष्ठः		
	हरितय:	• का ले		वासिष्ठः		Acra.
	१ हरित्य:	बे		काश्यपः	आवत्सार:	नैधुव: गाविष्ठिर:
	2 हिरण्य:	Ŧ	-	आत्रेय:	आर्चनानसः	गाविश्वः
	3 हिरण्य:	क	3	आत्रेय:	गाविष्ठिर:	पावाातायः
	4 हिरण्यरेतसः		2	वैश्वामित्रः	हैरण्यरेतसः	Acres.
	5 होता	बं	100	Charles and the	आवत्सार:	, नैधुवः

अत्यावश्यक धर्मशास्त्रकारों ने-

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः। सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने॥

अर्थात् माता की असपिण्डा (मातृत: पञ्च-माता की पांच पीढ़ी के भीतर की न हो) साथ ही पिता की असगोत्रा (पितृत: सप्त-पिता की सात पीढ़ी के भीतर न हो, पिता के समान गोत्र की न हो) ऐसी कन्या से ही द्विजातियों को विवाह करना चाहिए। इसी प्रकार समान गोत्र, प्रवर में भी विवाह-सम्बन्ध नहीं करना चाहिए, अन्यथा वह सम्बन्ध बड़ा ही गहिंत होगा। इस प्रकार के वचन अनेक मिलते हैं। बड़ा ही खेद होता है कि आज इसका विचार विवाह के समय लोग नहीं करते। शास्त्रकार तो यहां तक लिखते हैं कि—

आरूढपतितापत्यं ब्राह्मण्यां यक्ष शूद्रजः। सगोत्रोढा सुतश्चैव चाण्डालास्त्रय ईरिताः॥ अर्थात् समान गोत्रवाली विवाहिता में उत्पादित सन्तान चाण्डाल होती है।

आज सम्पूर्ण भारत में अपनी सुविधानुसार निवास करने वाले सरयूपारीण ब्राह्मणों की संख्या का पता लगाना बहुत कठिन कार्य है। सन् 1891 ई. की उत्तरप्रदेशीय शासन द्वारा एक तालिका सरयूपारीण महासभा प्रयाग को मिली थी, उसे हम प्रकाशित कर रहे हैं। परन्तु इस बीच लगभग 107 वर्ष के अन्दर यह संख्या कहां तक पहुंची, इसका अनुमान पाठकगण स्वयं लगायें। साथ ही अन्य प्रदेशों की संख्या अलग होगी।

जिला	संख्या	जिला	संख्या	जिला	संख्या
देहरादून	291	तराई	17	हमीरपुर	27
मुजफ्फरनगर	108	उन्नाव	303	झांसी	251
बुलन्दशहर	38	सीतापुर	636	ललितपुर	64
मथुरा	209	खीरी	474	मिर्जापुर	152341
फरूखाबाद	807	गोंडा	197932	गाजीपुर	29936
इटावा	104	सुलतानपुर	155534	गोरखपुर	103728
बरेली	235	बाराबंकी •	18565	आजमगढ	1932
बदायूं	73	सहारनपुर	273	लखनऊ	23144
शाहलहांपुर	218	मेरठ	255	रायबरेली	29936
कानपुर	835	अलीगढ़	615	हरदोई	27700
बांदा •	57392	आगरा	111	फैजाबाद	199937
इलाहाबाद	177975	मैनपुरी	239	बहराइच	41322
जालौन	28	एटा	10	प्रतापगढ	123039
वाराणसी	77196	बिजनौर	120	पूर्णयोग	1909277
जौनपुर	146345	मुरादाबाद	79	उन्नीस लाख नौ हजार	हो सी
बलिया	12630	पीलीभीत	355	सतहत्तर	41 /11
बस्ती	185086	फतेहपुर	6436		

हमारे समाज में जिन ग्रामों अथवा स्थानों के नाम से वंशों की प्रसिद्धि है, वे ही आस्पद कहे जाते हैं। जैसे—मामखोर ग्राम के पुरातन निवास से मामखोर के शुक्ल आदि। नीचे हम उपलब्ध वंशों— आस्पदों तथा उनके गोत्रों की तालिका दे रहे हैं।

शुक्ल वंश

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
अजनौरा	गर्ग	परसा पंक्ति	गर्ग
अमचाना पांक्तेय	गर्ग	परिगांवां पंक्ति	गर्ग
उमरहर	गर्ग	पिछौरा	कृष्णात्रि
ककनाही	गर्ग	बकवा	गर्ग
कनैल	गर्ग	वकरुआ	गर्ग
कुरमौल	गर्ग .	बनगाईं	गर्ग
कौहाली	कौण्डिन्य	बयपोखरि पंक्ति	गर्ग
गढ़	गर्ग	बभनी	गर्ग
गंगौली पंक्ति	गर्ग	बहेरी	गर्ग
चान्दागढ़	गर्ग	बदिड़ा	गर्ग
अकोहरिया	गर्ग	बागापार	गर्ग
उचहरिया	गर्ग	छीछापार	गर्ग
एकला पैक्ति	गर्ग	जिनवां	गर्ग
कटार पंक्ति	गर्ग	जंजन 💮	गर्ग
करञ्जही	गर्ग	झौवा पंक्ति	गर्ग '
कोल्हुवा	गर्ग	ढड़ोआ पंक्ति	गर्ग
खखाइजखोर पंक्ति	गर्ग	थरौली पंक्ति	पराशर
गौर	गर्ग.	नगवा	गर्ग
धोरहटा पंक्ति	गर्ग	नेवारी	गर्ग
छितहा पंक्ति	गर्ग	पारसडीह	गर्ग
छिलहर	गर्ग	पिकौरा	गर्ग
छिवरा पंक्ति	गर्ग	पिपरा पंक्ति	गर्ग
जोरहरिया	गर्ग	बनकटा	गर्ग.
ठांकर	गर्ग	बनगवां पंक्ति	गर्ग
तुर्कोलिया	गर्ग	बरहुचिया	गर्ग
घरहट	गर्ग	बडहरा	गर्ग
नमरहा	गर्ग	बसौढ़ी पंक्ति	गर्ग
नइफरिता	गर्ग	बांसपार	गर्ग
14 (11)			

गर्ग

कश्यप

कश्यप

गर्ग

गर्ग

कश्यप

आस्पद बिलौंड़ी बुड़हरी बेलौंड़ी बेलपोखरि भरौलिया भेंड़ी पंक्ति भेलौजी : मझगवां पंक्ति महसों महरिया मलेन मुड़फेकरा मुड़ेरी पंक्ति रामनगर रुद्रपुर पंक्ति सथरी पंक्ति सरांव छोटा पंक्ति सत्यकर बिहरा बुड़हट मामखोर बेपा पंक्ति भखनौरा

आस्पद अखरचन्दा अमिहा कटगैयां कपास गौतम करोडीह कोटवां खरडरगांव खेसी

गौत्र आस्पद गर्ग भादी भेलखा पंक्ति गर्ग मगहरिया गर्ग गर्ग मामखोर पंक्ति गर्ग मटियारी महुली गर्ग गर्ग महुलियार गर्ग मुडा गर्ग मेहरा गर्ग रुदायन गर्ग लखनखोरी गर्ग लखनौरी सरांव बड़ा गर्ग गर्ग सरदहा पंक्ति गर्ग सियरापार गर्ग सिरसा पंक्ति सुकु रौटी गर्ग गर्ग सरदापार गर्ग सिलहटा पंक्ति गर्ग सुकुलपुरी सुकु रौली गर्ग गर्ग सेखुई

मिश्र

गौत्र आस्पद गौतम गाना पंक्ति गोवड़ौरा वत्स गौतम गौतम गौतम चकौडा पंक्ति गौतम चउर्हा गौतम अधैला पंक्ति गौतम उमरी वशिष्ठ कविसा

कश्यप गौत्र वत्स वत्स वत्स गौतम गौतम गौतम

वत्स

गौतम

आस्पद	गौत्र	आस्पद	गौत्र
कारीगांव पंक्ति	गौतम	डुमरी पंक्ति	गौतम
कोहाली	कौण्डिन्य	तिलकपुर	गौतम्
खेउसी	वशिष्ठ	धर्मपुरा	घृ. कौ.
खोली .	वशिष्ठ	धोती गांव	गौतम
गैती	वत्स	नगवा	वत्स
गोपालपुर पंक्ति	वत्स	नवापार	वत्स
चकदहा	वत्स	नरईपुर पंक्ति	गौतम
चतरी	गौतम	पतिलाड पंक्ति	कश्यप
चम्पारन	गौतम	परसौनी	. वत्स
चमुखा पंक्ति	गौतम	प्योली	वत्स
चमुआ पंक्ति	गौतम	पिडिया पयासी	गौतम
चचाई पंक्ति	गौतम	फरिया	गौतम
जिगिना	वत्स	बघौरा पंक्ति	वत्स
पिपरा	वत्स	बढ़नी	वशिष्ठ
डलिहा	वत्स	बनपखा पिपरा	वत्स
डोमरांव पंक्ति	गौतम	बस्ती पंक्ति	गौतम गौतम
दियावती	गौतम	बरई पार पंक्ति	गीतम
धरम मऊ	वत्स	बाऊ डीह	गीतम
धौरहा	पराशर	बांसगांव पंक्ति	ন্বিशিষ্ট
नगरहा पयासी	वत्स	बिजरा	गौतम
पड़रहा	कश्यप	वेइसी	गौतम
पयासी पंक्ति	वत्स	भभया .	गौतम
प्रमानिका	वत्स	भार्गव पंक्ति	गौतम
पिपरा गौतम	गौतम	भैरवपुर	भारद्वाज
गरियैयां	गौतम	मंझरिया पंक्ति	वत्स
बखरियां	वत्स	मझौलिया पयासी पंक्ति	गौतम
बहोपुर	वशिष्ठ	मधुबनी पंक्ति	गौतम
बनकटा पयासी	वत्स	महावन	वत्स
बसन्तपुर	गौतम	ममिआरी	गर्ग
चारडीह	गौतम	मामखोर	पराशर
छपिया पयासी पंक्ति	, वत्स	मिसिरमऊ	गौतम
टिउटा	वत्स	रतनपुर पंक्ति	

गौत्र

गौतम

गौतम

वत्स

वत्स

गौतम

विशष्ठ

गौतम

गौतम

कश्यप

कश्यप

गौतम

गौतम

गौतम

आस्पद रामपुर लगुनी सिसई ऐंदुरिया पंक्ति हरदिया बालेडीहा ब्रह्मपुर वेलउरा पयासी भजया भरौलिया पंक्ति भिटहा भौरहा

गौत्र आस्पद गौतम मटियारी घृतंकौशिक मठिया पंक्ति सावर्ण्य मड़कड़ा मलपुरा पंक्ति गौतम महुई पंक्ति घृतकौशिक मार्जनी मधुबनी गौतम मिश्रौलिया पंक्ति गौतम वशिष्ठ रत्नमाला पयासी पंक्ति गौतम राल्ही सुगौटी गौतम सिंहपुर पंक्ति वत्स सोनाखार भारद्वाज घृतकौशिक हथियाखार

उपाध्याय

आस्पद खोरिया गौर चौखरि जोरहरिया दबयां नहफरिया मंगा व.शु. पीपरडीहा पंक्ति विष्णुपुर मसौली रुद्रपुर लिखमा हड़गड़ी पकड़ी

गौत्र आस्पद हरैयां भारद्वाज गजिपुरिहा भारद्वाज चिकनियां पराशर गर्ग चौमुख बेसवा टोसवा वत्स वत्स नयपुरा निपनियां शु. गर्ग गर्ग पड़ैया डांड गर्ग बरौली गर्ग अड़सार गर्ग रायमऊ गर्ग रेवली पयासी गर्ग लमकुरा भारद्वाज हत्यरवा पिपरा

दीक्षित शाण्डिल्य

कीलपुर

ओझा

आस्पद असबन पार ककुवा खैरी निपनियां वेनुआं टीकर मलावं लगुनी

गौत्र आस्पद ओझवली उपमन्यु करेली उपमन्यु निमेंज उपमन्यु बारीगांव कश्यप रामडीह कश्यप उपमन्यु हरजानपुर उपमन्यु भैसद्या

गौत्र उपमन्यु उपमन्यु उपमन्यु उपमन्यु उपमन्यु उपमन्यु कश्यप

द्विवेदी

आस्पद अमवां कूं चेला करेइया फोड़बरिया कं चिनयां गुर्दवान छपवा कठकुआं कटुरिहा खरखदियां गौरा पंक्ति जलालपुर कोड़रिहा तिवती तेलौराकरण नकाही पंक्ति परवा बड़गों बड़ा गांव बरपार . ब्रह्मसारी -

गौत्र आस्पद गर्ग बेलवां मानघटी पंक्ति भारद्वाज कृ. अ. मरसडा गार्गेया मुडहा गौतम रजहठा गौतम रुपहुलिया लेजुरिहा मौनस सरारि पंक्ति गर्ग कृष्णात्रि सझवा हड़गड़ी गौतम सिंगेला गौतम गौतम तिलसरा धाराधरी पंक्ति गर्ग नींवी गौतम पड़रिहा गौतम पुंछेला भारद्वाज बढ़यापार पंक्ति कश्यप वत्सपार भारद्वाज ब्रह्मी-ब्रह्मपुर भारद्वाज बेलौंरा गौतम् मझौवां पंक्ति कश्यप

गौत्र भारद्वाज भारद्वाज भारद्वाज भारद्वाज भारद्वाज गौतम वत्स भारद्वाज भारद्वाज भारद्वाज कश्यप भारद्वाज भारद्वाज भारद्वाज भारद्वाज भारद्वाज भारद्वाज कश्यप वत्स भारद्वाज भारद्वाज आस्पद महुलिया मीठावेल रमलपुर पंक्ति लठियाही गौत्र आस्पद भारद्वाज समदरिया भारद्वाज सभारी भारद्वाज सहुआ भारद्वाज सौरी रथ वर्ग

ब्राह्मण गोत्रावली गौत्र वत्स भारद्वाज गौतम भारद्वाज

त्रिपाठी

आस्पद अगोरी उनवलिया पंक्ति भरुहिया करवन पंक्ति कपालगढ़ पंक्ति कसिहारी कु कु रगढ़िया सोहगौरा कोल्हुवा कोहाली खमरौनी गुरम्ही गोंगिया गोण्डलिया चरथरि चिउटहा चौका पंक्ति चौधरी पट्टी चन्द्रौटा पंक्ति छितिउनी पंक्ति अतरौली उकिना कलानी कटियारी

कान्धापार

गौत्र आस्पद शाण्डिल्य कोठा शाण्डिल्य कोहिला शाण्डिल्य खजुली शाण्डिल्य खोरमा पुरौली शाण्डिल्य गौरखपुरिया शाण्डिल्य चरणारि चेतिया पंक्ति चौरिहा कश्यप शाण्डिल्य चौंसा भारद्वाज छपरा शाण्डिल्य जोगिया शाण्डिल्य झकही शाण्डिल्य टांडा पंक्ति शाण्डिल्य डाइन वारी पंक्ति तिवारीपुर शाण्डिल्य शाण्डिल्य दोसापार शाण्डिल्य देउरवा पंक्ति शाण्डिल्य देवा शाण्डिल्य धर्महरि शाण्डिल्य धानी पंक्ति शाण्डिल्य निदिया शाण्डिल्य नेवास छोटा बड़ा शाण्डिल्य नैया पार शाण्डिल्य परसा पंक्ति

गौत्र शाण्डिल्य शाण्डिल्य वत्स शाण्डिल्य भार्गव शाण्डिल्य भार्गव शाण्डिल्य वर्त्तन्त शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य

ALC:
आस्पद
प्रतावल पंक्ति
पींडी
पुहिला
पोरिहा
बदरा
बसन्तपुरा पंक्ति
बसडाला पंक्ति
झुनियां-झुंडिया पंक्ति
डांरी डीहा पंक्ति
डेहरा समार्जनी
तुरहापट्टी
दुर्गौलिया
देवरिया पंक्ति
धतुरा
धर्मपुर पंक्ति
नदौली
निर्मोहिया
नैनसार
नौसड़िया
परसौनी
पहिला
पिपरपांति पंक्ति
पुरैना
बिकया
बलुआ पंक्ति
बसानपुर पंक्ति
पाला पंक्ति
बांसगांव
बिसुहिया
बूढ़ीवारी पंक्ति
बेदौलिया
भरवलिया

गौत्र	आस्पद
शाण्डिल्य	भरुहिया पंक्ति
शाण्डिल्य	भार्गव
वत्स	भांटी
वत्स	भैंसहा
शाण्डिल्य	मकदूमपुर पंक्ति
शाण्डिल्य	मणिकण्ठ
शाण्डिल्य	मदनपुर पंक्ति
शाण्डिल्य	मुजौना पंक्ति
शाण्डिल्य	रणौली
शाण्डिल्य	रुद्रपुर पंक्ति
भार्गव	लोनापार
शाण्डिल्य	सुरया
शाण्डिल्य	सितिया
शाण्डिल्य	बारीडीहा
वर्त्तन्त	बिनवलिया पंक्ति
शाण्डिल्य	बेदुवा
शाण्डिल्य	भठवां
शाण्डिल्य	भरमहा
शाण्डिल्य	भाटपार
शाण्डिल्य	भार्गव परसौनी
शाण्डिल्य	भिटहा भाटी
शाण्डिल्य	भौआपार
वत्स	मगराइंच पंक्ति
वशिष्ठ	महुलवार
शाण्डिल्य	माटे पंक्ति
शाण्डिल्य	रखुवाखोर
शाण्डिल्य	रुइहा
शाण्डिल्य	लखनापार
सांकृत्य	लोनाखार पंक्ति
शाण्डिल्य	
कौशिक	सिसवां
शाण्डिल्य	बसन्तपुर पंक्ति

गौत्र शाण्डिल्य साङ्कृत्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य भृगु शाण्डिल्य शाण्डिल्य् शाण्डिल्य आस्पद

सोनाई

सोपरी

सोढ़ाचक

गजपुरीहा

धुरियापार

विष्णुपुर

मसौली

तुलापुर

धर्महरि

नकहट

दलीबपुर

धवरहरा पंक्ति

नदुला पंक्ति

इटोढ़ी पंक्ति

इमलडीहा

सेंवई

सोनहुला

सौरेजी

शेकनहां

चौमुखा

सोहगौरा पंक्ति

साहरना पंक्ति

नाथूपुर त्रिफला

इटिया पंक्ति

सेमरी रथवर्ग

सोनौरी पंक्ति

शंकराचार्य दुर्गौलिया

ब्राह्मण गोत्रावली

गौत्र सांकृत्य कश्यप कश्यप उद्वाह सावर्ण्य पाराशर सांकृत्य सावर्ण्य वत्स सांकृत्य कश्यप भारद्वाज वत्स सावर्ण्य कौण्डिन्य कश्यप कश्यप वत्स गौतम सावर्ण्य कश्यप भारद्वाज वशिष्ठ कश्यप वत्स

वत्स

गौत्र गर्ग शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य शाण्डिल्य गर्ग उद्वाह सावर्ण्य वशिष्ठ पराशर सावर्ण्य वत्स वत्स सावर्ण्य वत्स शाण्डिल्य शाण्डिल्य

आस्पद नथपुरा मसोढ़ हड़गड़ी तुर्कौलिया दुमटेकारी धमौली नई नरहरिया नागचौरी नाउर देउर परसिया कश्यप. पिपरा गौतम बनहां बधवा बड़हरिया बारहगांव वामपुर बिनछनैया बुढ़परिया फरेंदा बतगैयां बड़हरा शाण्डिल्य विशिष्ठ शाण्डिल्य बारहसेनी पंक्ति शाण्डिल्य बांसपार शाण्डिल्य विष्टवल शाण्डिल्य

आस्पद कुशौरा एकौना

गौत्र कात्यायन सावर्ण्य

चतुर्वेदी (चौबे)

पाण्डेय

आस्पद अगस्तिया अष्ट कपाल भटगवां पंक्ति भसमा भेलौरा मड़िरहा मचइयां अधुर्य्य आसापुरी भट्टाचारी भयुरहा मझरिया मलांव मैनिछियां रकहट	गौत्र अगस्त अगस्त अगस्त अगस्त भाग्य सावण्यं सावण्यं सावण्यं सावण्यं सावण्यं सावण्यं सावण्यं सावण्यं सावण्यं	आस्पद जामडीह पिछौरा जोरवा खुटवा तुरोया त्रिफला पंक्ति साहुकोल सिसई लहसड़ी सखरुआ कटयां कोहड़ा गुंडेगांव चारपानी जगदीशपुर तरयापार सावण्यीटकरा	गौत्र सावर्ण्य सावर्ण्य कश्यप उद्वाह कश्यप सावर्ण्य सावर्ण सावर सावर्ण सावर्ण सावर्ण सावर्ण सावर सावर्ण सावर सावर्ण सावर्ण सावर सावर सावर्ण सावर सावर सावर सावर सावर सावर सावर सावर
मैनछियां	सावर्ण्य सावर्ण्य वत्स सावर्ण्य सावर्ण्य सावर्ण्य		पराशर सावर्ण्य पराशर सांकृत्य वत्स पराशर
A STATE OF THE STA		Daniel Control	गौत्र

	गौत्र	आस्पद	गात्र
आस्पद	गात्र		भारद्वाज
खरहटिया	ं कश्यप	देउवापार	भारद्वाज
बिजोर	कश्यप	बूढ़ीपार	
		लखनापार	भारद्वाज
मगहरिया	भारद्वाज		भारद्वाज
सोनौरा	भारद्वाज	मसोड़	

सरयूपारीण ब्राह्मण कुल में ही पंक्तिपावन मिलते हैं, जिनके सम्बन्ध में भगवान् मनु ने तृतीयाध्याय में-

अपाङ्क्त्योपहता पंक्तिः पाल्यते यैर्द्विजोत्तमैः। तान्निबोधत कात्तन्येन द्विजाग्रान् पंक्तिपावनान्॥

इस श्लोक के द्वारा चर्चा की है। सरयूपार का ही अपभ्रंश सरवार शब्द से व्यवहृत होता है, जिसके प्रमाणस्वरूप मत्स्यपुराण में—

अयोध्या दक्षिणे यस्याः सरयूतटगः पुनः। सारवावारदेशोऽयं गौडास्तदनु कीर्त्तिताः॥

अर्थात् अयोध्या वही नगरी है, जिसके दक्षिण भाग में सरयू नदी है, उससे सम्बद्ध भूखण्ड सरवार कहा जाता है, उसके अतिरिक्त गौड़ देश, गौड़ ब्राह्मणों की निवास भूमि है। सरयूपारीणों में परम्परावश—

गर्गश्च गौतमश्चैव शाण्डिल्यश्च पराशरः। सावण्यः कश्यपोऽत्रिश्च भरद्वाजोऽथ गालवः॥ कौशिको भार्गवश्चैव वत्सः कात्यायनोऽङ्गिराः। शाङ्कृतो यामदग्न्यश्च षोडशैते प्रतिष्ठिताः॥

कहीं पर-

कौशिको भार्गवश्चैव वत्सो वात्स्यायनस्तथा। अङ्गिराश्च्यवनश्चैव यमदग्निश्च षोडश॥

कहीं पर-

गर्गश्च गौतमश्चैव शाण्डिल्यश्च पराशरः। सावर्णिः कश्यपो वत्सो भरद्वाजश्च कौशिकः॥ उपमन्युर्वशिष्ठश्च साङ्कृतो घृतकौशिकः। गार्ग्यः कात्यायनश्चैव तथा स्याद् गर्दभीमुखः। अगस्त्यो भृगुभर्गौ च कुण्डिन्यश्च तथैव हि॥

इस प्रकार प्रधान रूप से 16 गोत्रों की चर्चा मिलती है। परम्परावश हमारे समाज में यह तीन तथा 13 का भेद चला आ रहा है। परन्तु आज ऐसा समय नहीं है कि हम अपने चतुर्वेदी, पाठक तथा उपाध्याय बन्धुओं को शुक्ल, मिश्र, त्रिपाठी आदि की अपेक्षा नीच ब्राह्मण कहें। ये सभी अपने-अपने ब्राह्मकर्मानुसार, आचारानुसार, विद्यानुसार योग्य हैं। सबका परस्पर व्यवहार उचित है। उच्चता तथा नीचता स्वकर्मानुसार ही बन सकती है। इसमें किसी प्रकार का प्रमाण नहीं कि ये ब्राह्मण जन्मना उच्च हैं और ये नीचे हैं। अत: उस मूर्खतापूर्ण ईर्ष्या-द्वेष के जनक व्यवहार को छोड़कर समानरूप से व्यवहार ही उचित है।

वंशवृद्धिकरं वंशकवचम्

प्रस्तुत वंशवृद्धिकर वंशकवचं सन्तान-प्राप्ति के लिए अत्यधिक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण कवच है। विश्वास और श्रद्धा-भिक्तपूर्वक इसका नित्यप्रति पाठ करने से किसी प्रकार की भी सन्तान-बाधा, भूत-प्रेतादि बाधा, ग्रह बाधा, देव बाधा एवं शत्रुकृत समस्त बाधाएं विनष्ट हो जाती हैं और शीघ्र ही दीर्घजीवी सन्तान की प्राप्ति होती है।

भगवन्! देव देवेश कृपया त्वं जगत्प्रभो।

वंशाख्यकवचं ब्रूहि महां शिष्याय तेऽनघ।

यस्य प्रभावाद् देवेश वंशवृद्धिर्हि जायते॥१॥

सूर्य उवाच

शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि वंशाख्यं कवचं शुभम्। सन्तानवृद्धिर्यत् पाठाद् गर्भरक्षा सदा नृणाम्॥२॥ वन्ध्याऽपि लभते पुत्रं काकवन्थ्या सुतैर्युता। मृतवत्सा सपुत्रा स्यात् स्त्रवद्-गर्भा स्थिरप्रजा॥३॥ अपुत्रा पुष्पिणी यस्य धारणाच्य सुखप्रभुः। कन्या प्रजा पुत्रिणी स्यादेतत् स्तोत्र-प्रभावतः॥४॥ बाधा या बाधा कुलदोषजा। भूत-प्रेतादिजा ग्रहबाधा देवबाधा बाधा शत्रुकृता च या॥५॥ सर्वास्ताः कवचस्य प्रभावतः। भवन्ति सर्वे रोगा विनश्यन्ति सर्वे बालग्रहाश्च ये॥६॥ रक्षतु वाराही चाग्नेय्यामम्बिका स्वयम्। दक्षिणे चण्डिका रक्षेन् नैर्ऋत्यां शववाहिनी॥७॥ रक्षेद् वायव्यां च महेश्वरी। पश्चिमे सिंहवाहिनी ॥ 8 ॥ उत्तरे वैष्णवी रक्षेदीशान्ये रक्षेदधो रक्षतु पार्वती। शाकम्भरी शिरो रक्षेन् मुखं रक्षतु भैरवी॥१॥ शारदा चामुण्डा हृदयं रक्षताच्छिवा। ईशानी च भुजौ रक्षेत् कुक्षिं नाभिं च कालिका॥10॥ रक्षत् कणठं अपर्णा ह्युदरं रक्षेत् कटिं वस्तिं शिवप्रिया। ऊरू रक्षतु कौमारी जया जानुद्वयं तथा॥11॥

गर्भपातभये

गुल्फौ पादौ सदा रक्षेद् ब्रह्माणी परमेश्वरी।
सर्वाङ्गानि सदा रक्षेद् दुर्गा दुर्गार्ति-नाशिनी॥12॥
नमो देव्यै महादेव्यै दुर्गायै सततं नमः।
पुत्रसौख्यं देहि देहि गर्भरक्षां कुरुष्व नः॥13॥

ॐ हीं हीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ऐं ऐं महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीरूपायै नवकोटिमूत्यें दुर्गायै नमः, हीं हीं दुर्गार्तिनाशिनी सन्तानसौख्यं देहि देहि, वन्ध्यत्वं मृतवत्सत्वं च हर हर गर्भरक्षां कुरु कुरु, सकलां बाधां कुलजां बाह्यजां कृतामकृतां च, नाशय नाशय सर्वगात्राणि रक्ष गर्भ पोषय पोषय, सर्वोपद्रवं शोषय शोषय स्वाहा।

अनेन कवचेनाऽङ्गं सप्तवाराऽभिमन्त्रितम्।

ऋतुस्नाता जलं पीत्वा भवेद् गर्भवती ध्रुवम्॥14॥ पीत्वा दृढगर्भा प्रजायते।

अनेन कवचेनाथ मार्जिताया निशागमे॥ 15॥

सर्वबाधा-विनिर्मुक्ता गर्भिणी स्यान्न संशयः।

.अनेन कवचेनेह ग्रन्थितं रक्तदोरकम्॥१६॥

कटिदेशे धारयन्ती सुपुत्रसुखभागिनी।

असूत पुत्रमिन्द्राणी जर्यन्तं यत्प्रभावतः॥१७॥

गुरूपदिष्टं वंशाख्यं कवचं तदिदं सखे। गुह्याद् गुह्यतरं चेदं न प्रकाश्यं हि सर्वतः।

धारणात् पठनादस्य वंशच्छेदो न जायते॥18॥

बाला विनश्यन्ति पतन्ति गर्भास्तत्राऽबलाः कष्टयुताश्च वन्ध्याः। बालग्रहैर्भूतगणैश्च रोगैर्न यत्र धर्माचरणं गृहं स्यात्॥19॥

इति श्रीज्ञानभास्करे वंशवृद्धिकरं वंशकवचं समाप्तम्।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- * ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड—खेमराज श्री कृष्णदास
- * जाति भास्कर-खेमराज श्री कृष्णदास
- * भारत में जाति प्रथा-मोतीलाल बनारसीदास
- * ब्राह्मणोत्पत्ति दर्पण-नीता प्रकाशन
- * भारतीय ब्राह्मण की गोत्रावली—पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा (पानीपत वाले)
- * जगिड ब्राह्मण गोत्रावली-सुकृति प्रकाशन

उपरोक्त सभी पुस्तकें 'डी०पी०बी० पब्लिकेशन्स', 110, चावड़ी बाजार से प्राप्त कर सकते हैं।

विशेष नोट

जो ब्राह्मण सञ्जन अपने परिवार व मित्रगण में पुस्तक वितरण या मांगलिक उत्सव में बांटना चाहें, तो आप हमसे सम्पर्क करें व पुस्तकें लागत मूल्य पर प्राप्त करें।

तन्त्र जगत् में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाला दिव्य ग्रन्थ 'अलख' विरचित

लंकापति रावणकृत

तन्त्रात्मक रावण संहिता

वाममार्गी तन्त्र के सभी अंगों के गोपनीय रहस्यों, साधनाओं, सिद्धियों, तन्त्राचारों, दिव्य योगों पर गहरायी से सर्वांग प्रकाश डालने वाला, सभी तन्त्राचारों एवं दुर्लभ विद्याओं के विस्मयकारी असंख्य रहस्यों को प्रकट करने वाला, देवताओं, ऋषियों, तपस्वियों, महान् साधकों के लिए भी दुर्लभ महाविद्याओं की सिद्धि दिलाने वाला विश्व का प्रथम

तन्त्र वरदान

मूल्य 3000/- रुपये सैट

विशिष्ट आकर्षण

यह तन्त्र ग्रन्थ विश्वप्रसिद्ध तन्त्र साधक गुरुवर प्रेम कुमार शर्मा (स्वामी प्रेमानन्द अलख) की व्याख्याओं से युक्त है; जिन्होंने श्लोकों के वास्तविक गोपनीय तन्त्र शास्त्र को सरल ढंग से समझाया है। इस ग्रन्थ में उन्होंने तन्त्र विद्या के वे समस्त रहस्य खोल दिये हैं, जिनका ज्ञान स्वयं शिव के अतिरिक्त इस विश्व-ब्रह्माण्ड में किसी को ज्ञात नहीं। देवता, ऋषि एवं अवतारों के लिए भी दुर्लभ महाज्ञान का यह सागर गुरुवर के ज्ञान से अमृत बन गया है। प्रत्येक स्त्री-पुरुष और परिवार के लिए अमृत कलश व सभी पुस्तकालयों में संग्रहणीय योग्य।

॥श्री हरि॥

मशहूर

बापू गांधी राष्ट्रीय जन्त्री

भविष्यकर्त्ता एवं गणितकर्ताः

dilita

प्रवीन कुमार जैन

पंचांग

सन् 2010 ई॰ में एकादशी, प्रदोष संक्रान्ति, अमावस्या, दशावतार, जयन्तियां अन्य का वर्णन, सन् 2010 के प्रमुख त्यौहार एवं पर्व, सन् 2010 ई॰ के शुभ-विवाह मुहूर्त, हरिद्वार में कुम्भ महापर्व, ग्रहण सन् 2010 ई., सन् 2010 ई. के प्रमुख मेले, दीपावली (श्रीमहालक्ष्मी पूजन), जन्त्री देखने की विधि, जनवरी-दिसम्बर 2010 का पंचांग व मासिक भविष्य फल, दिन व रात के चौघड़ियां महर्त, कैसा रहेगा कमोडिटी मार्केट वर्ष 2010, वोलेटाईल रहेगा शेयर बाजार 2010 में, क्या वर्ष 2010-2011 में ग्रहण नहीं होंगे, मलमास, अधिमास अर्थात् पुरुषोत्तम मास, यन्त्र मन्त्र रत्न द्वारा नवग्रह पीड़ा निवारण, गड़ा धन जानने की क्रिया, तेजी मन्दी जानना, स्वर-विज्ञान द्वारा शुभाशुभ का विचार, रमल प्रश्नावली, ज्योतिष स्वयं सीखिये, कोजागर (कोजागर्ति) लक्ष्मी साधना, वास्तुदोष व ज्योतिष, कष्टनिवारक चमत्कारी उपाय, रुद्राक्ष द्वारा रोग निवारण, रत्न पहनिये भाग्य बदलिये, विवाह शीघ्र कैसे हो?, दाम्पत्य सुख प्राप्ति हेतु उपाय, सन्तान सुख शीघ्र प्राप्त करें (उपाय), विद्या प्राप्ति व परीक्षा में सफल होने के अचूक उपाय, लाल किताब के टोटके व उपाय, नजरदोष, नवग्रह शान्ति व धन-प्राप्ति, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र के सफल प्रयोग, महालक्ष्मी का सर्वाधिक प्रिय श्री श्रीयन्त्र, बन्धी हुई दुकान खोलने हेतु उपाय व शत्रुनाशक प्रयोग, व्यापार बाधा निवारक सरल तान्त्रिक प्रयोग, सुन्दर एवं धनवान् पति-प्राप्ति हेतु प्रयोग, पितृदोष निवारक प्रयोग (तान्त्रिक), दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग, सरल वंशीकरण तान्त्रिक क्रिया, मनपसन्द पति प्राप्ति हेतु प्रयोग, मनपसन्द पत्नी प्राप्ति हेतु प्रयोग, सन्तान प्राप्ति हेतु प्रयोग, सुन्दरी वशीकरण प्रयोग, कामिनी वशीकरण प्रयोग, वशीकरण प्रयोग, चित्र द्वारा वशीकरण प्रयोग, सर्वरोग निवारण प्रयोग, रोग नाश के लिए सिद्ध प्रयोग, रोग विनाशक अनुष्ठान, सर्वरोग निवारणार्थ प्रयोग, असाध्य रोगनाशक प्रयोग, हृदयरोग का रामबाण इलाज, ललिता मां का मन्त्र जाप, कालिदास कृत महिषासुरमर्दिनि स्तोत्र, चमत्कारी लक्ष्मी प्रयोग विधि, मुद्रा विज्ञान व चिकित्सा के प्रयोग, शीघ्र विवाह कैसे हो?, तान्त्रिक वनस्पतियां, श्रीरामशलाका प्रश्नावली, श्रीकृष्ण शलाका प्रश्नावली, प्रश्न आपके उत्तर पण्डितजी के इच्छित सन्तान जानने हेतु दुर्लभ चीनी तालिका, यन्त्रों द्वारा कामनासिद्धि, खोई वस्तु कहां मिलेगी?

Rs 55/-

डाक द्वारा पुस्तकें मंगवाने के लिए अपना नाम, पता व पिनकोड इस मोबाइल पर SMS कीजिये—09811648916

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916 E-mail : dpbpublications@yahoo.in

औघड़नाथ विरचित तन्त्र सिन्ध

लेखक प्रेम कुमार शर्मा

- अतिप्राचीन लुप्तप्राय औघड्नाथ महातन्त्र की रहस्यमय गोपनीय महासिद्धियों, देवी-देवता और गुप्त तकनीकियों एवं रहस्यमय चमत्कारिक टोने-टोटके, मेन्त्रं और शरीर में देवी-देवता के स्थानों को सूक्ष्मतम रूप में बताने वाली विश्व को प्रथम पुस्तक।
- ♦ आधुनिक समय में तन्त्रशास्त्र से सम्बन्धित जितना ज्ञान इस विश्व को है और जो भी साहित्य उपलब्ध है, यह पुस्तक उन सभी से आगे के गोपनीय रहस्यों एवं टोने-टोके की पुस्तक है।
- इस पुस्तक में तन्त्र, आध्यात्म, ज्योतिष और तत्त्व-विज्ञान के सभी रहस्यों को अनावरित किया गया है। कोई भी आध्यात्मिक पहेली या कथन ऐसा नहीं है, जिसके गोपनीय वैज्ञानिक एवं तान्त्रिक रहस्य को इसमें बताया नहीं गया हो। Rs 300/-

डाक द्वारा पुस्तकें मंगवाने के लिए अपना नाम, पता व पिनकोड इस मोबाइल पर SMS कीजिये-09811648916

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

E-mail: dpbpublications@yahoo.in

प्राचीन

सामुद्रिक शास्त्र

(सम्पूर्ण दोनों भाग)

लेखक

प्रेम कुमार शर्मा

शरीर लक्षण एवं आकृति विज्ञान के साथ सम्पूर्ण हस्तक्षेप विज्ञान, जिसमें चित्रों द्वारा एक-एक रेखाओं एवं रेखाओं से बने योगों को समझाया गया है। सामुद्रिक विज्ञान की इन दोनों शाखाओं के समस्त विवरणों से युक्त एक सम्पूर्ण ग्रन्थ।

विश्व की प्रथम पुस्तक, जिसमें हाथ एवं शरीर के निर्माण और हस्तरेखाओं की उत्पत्ति के रहस्यों को भी बता रहे हैं प्रसिद्ध साधक प्रेम कुमार शर्मा। केवल एक ग्रन्थ को पढ़ने के बाद किसी भी जिज्ञासु को अन्य कोई पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

प्रस्तुत पुस्तक में हस्तरेखा से भविष्य दर्शन और हस्तरेखा के प्राचीन विशिष्ट योगों का भी विस्तृत वर्णन है। Set Rs 1500/-

डाक द्वारा पुस्तकें मंगवाने के लिए अपना नाम, पता व पिनकोड इस मोबाइल पर SMS कीजिये—09811648916

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916 E-mail : dpbpublications@yahoo.in ओ३म्

संस्कृत व हिन्दी अनुवाद महर्षि दयानन्द सरस्वती

Rs. 1000/-

ओ३म्

संस्कृत व हिन्दी अनुवाद महर्षि दयानन्द सरस्वती

Rs. 350/-

ओ३म्

सामवेद

संस्कृत व हिन्दी अनुवाद

सम्पादक श्री सत्यवीर शास्त्री

Rs. 350/-

ओ३म्

अथर्ववेद

संस्कृत व हिन्दी अनुवाद

सम्पादक श्री सत्यवीर शास्त्री

Rs. 800/-

पूरा सैट (चारों भागों में) 2500/- रुपये मात्र

डाक द्वारा पुस्तकें मंगवाने के लिए अपना नाम, पता व पिनकोड इस मोबाइल पर SMS कीजिये-09811648916

डी.पी.बी. पब्लिकशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916 E-mail: dpbpublications@yahoo.in

डी०पी०बी० पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित बहुमूल्य पुस्तकें

• तुलसीकृत रामायण डीलक्स	400/-	• तन्त्रात्मक रावण संहिता (दोनों भाग)		
• तुलसीकृत रामचरितमानस 'रामायण'		प्रेम कुमार शर्मा	3000/-	
(साधारण संस्करण)	280/-	• सरल ज्योतिष शास्त्र		
	55/-	(अखण्ड त्रिकालज्ञ ज्यातिष)	90/-	
• श्री हरि बापूधाम जन्त्री (वार्षिक)	300/-	• सट्टा : कल्पवृक्ष (तेजी मन्दी सट्टा)	120/-	
• भृगु संहिता फलित प्रकाश	300/-	• सम्पूर्ण स्वप्न विज्ञान	. 80/-	
• धन्वन्तरि भारतीय जड़ी-बूटी		• बच्चों के मनोहर नाम	50/-	
• धन्वन्तरि आयुर्वेद निघण्टू	300/-	21 Chālīsa Pātha Samgraha	150/-	
• धन्वन्तरि जड़ी-बूटी की खेती	350/-	Sampurana Shiv Upasana	195/-	
at it it ingine the terms of	500/-	Aarti and Bhajan Sangrah	150/-	
• गोपनीय तन्त्र साधना तथा टोने-टोटके	300/-	Practicals of Mantra	250/-	
• औघड़नाथ विरचित तन्त्र सिन्धु	300/-	Sundarakānda	120/-	
• वृहद हस्तरेखा शास्त्र	120/-	• Indrajaal	250/- 250/-	
• कीरो-हस्तरेखाएं बोलती हैं	120/-	Practicals of Yantra Secreta of Yentra	250/-	
• बारह महीनों के व्रत त्यौहार व		Secrets of Yantra Shri Hanuman Upasana	195/-	
मंगल गीत (महाराजा अग्रसेन वाली)	40/-		195/-	
• बारह महीनों के व्रत त्यौहार व मंगल गीत		Bada Bhakti Sagar	150/-	
(डीलक्स)	60/-	- 01 1361 1 1177	195/-	
• श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा	12/-	• Hanuman, Shiva, Durga, Mahakali,		
		Vishnu, Santoshi Mata, Gayatri, Soorya,		
• श्री साईं बाबा व्रत कथा	12/-	Lakshmi, Krishna, Ram, Shirdee Sai,		
• खाना बनाइये 'वेजीटेरियन'	90/-	Sathya Sai, Ganesh, Bharav, Shani,		
• सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र		Saraswati, Ganga Chalisa, 21 Aarti (Small)		
(वास्तुदोष कारण व निवारण)	180/-	(Text in Nāgarī and Roman Script		
• श्रीमद्भगवद् गीता (डीलक्स)	120/-	with Hindi and English Translati		
• श्रीमद्भगवद् गीता (साधारण)	40/-		ch) 20/-	
• श्रीमद्भगवद् गीता		• चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद,	T) 2502/	
(संस्कृत हिन्दी पाकेट)	15/-		ट) 2500/-	
• दुर्गा सप्तशती (सरल हिन्दी)	50/-	• ब्राह्मण गोत्रावली	120/-	
• गृहस्थ-गीता	75/-	• सत्यार्थ प्रकाश		
• प्राचीन भृगु संहिता महाशास्त्र (भाषा टीका)		स्वामी दयानन्द सरस्वती	200/-	
• श्री भृगु संहिता महाशास्त्र (हस्तलिखित)	1900/-	• सबाह नचावत राम गासाइ		
• श्री भृगु संहिता कुण्डली रहस्य		(प्रम कुमार शमा)	100/-	
(हस्तलिखित)	2500/-	• ऑपरेशन हिन्दू (प्रेम कुमार शर्मा)	100/-	
(suichar)	2300/-	• एकादशी माहात्म्य	20/-	

• कार्तिक माहात्म्य	20/-		200/-
• ज्योतिष सर्व संग्रह		• रेफ्रीजरेटर सर्विसिंग मैनुअल	200/-
(पं. रामस्वरूप शर्मा मेरठ निवासी)	40/-	• एअरकंडीशनर सर्विसिंग मैनुअल	150/-
• विवाह पद्धति		• इलेक्ट्रिकल पैनल बोर्ड	
(पं. रामस्वरूप शर्मा मेरठ निवासी)	20/-	विद इलेक्ट्रिकल वायरिंग	240/-
• हवन पद्धति		• इलेक्ट्रिकल मोटर वाइंडिंग	
(पं. रामस्वरूप शर्मा मेरठ निवासी)	20/,-	विद वाइंडिंग डाटा	120/-
• लग्न फार्म (सैकड़ा)	120/-	• प्रैक्टिकल स्क्रीन प्रिंटिंग	150/-
• टेवा फार्म सम्पूर्ण (छपा) (सैकड़ा)	75/-	• आटोमोबाइल डीजल इंजन मैकेनिक	200/-
• टेवा फार्म प्लेन (सैकड़ा)	75/-	• स्कूटर एण्ड मोटर साइकिल रिपेयर	100/-
• टेवा फार्म		• प्लिम्बंग एण्ड सेनिटेशन कोर्स	120/-
(श्रीगणेश और चार लाइन) (सैकड़ा)	75/-	• हैण्डबुक ऑफ बाइलर	THE PARTY
• पीली चिट्ठी (सैकड़ा)	65/-	ऑपरेटर इन्जीनियर्स (स्टीमबायलर)	300/-
• अथ श्री जन्म पत्रिका 17×27/16,		• हैण्डवुक ऑफ स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज	300/-
8 पेज (सैकड़ा) नं. : 0	125/-	• कटिंग टेलरिंग कोर्स	
• अथ श्री जन्म पत्रिका 17×27/16,		(होम व कमर्शियल)	150/-
16 पेज (सैकड़ा) नंः : 1	150/-	• कम्पलीट मसाला इण्डस्ट्रीज्	
• अथ श्री जन्म पत्रिका 20×30/16,		(ਰਿਟ ਚੁਯੂ ਚੁਟਜੀ)	150/-
16 पेज (सैकड़ा) नंः : 2	250/-	• 15 दिन में हारमोनियम सीख़िये	80/-
• जन्मांग पत्रिका 20×26/86,		• गिरार वाटन कोर्स	60/-
12 पेज (सैकड़ा) नंः : 3	500/-	• वायलिन वादन कोर्स	60/-
• षटवर्गीय जन्मपत्रिका		• वबला वाटन कोर्स	60/-
28 पेज (सैकड़ा) नं : 4	600/-	• बांसुरी वादन कोर्स	60/-
• सप्तवर्गीय जन्मपत्रिका		्र कि में हे विक्रों मीखिये	75/-
40 पेज (सैकड़ा) नं. : 5	800/-	ि क्या ने की क्यालिपियां	120/-
• शनि चालीसा (सैकड़ा)	150/-	• हिट गजलों की स्वरितपियां	120/-
• हनुमान चालीसा (अति लघु)		• हिट गुजला का स्परातानम	120/-
(सैकड़ा) नं. : 0	125/	• 101 हिट फिल्मी गीतों की स्वरिलिपयां	120/-
• हनुमान चालीसा मूल (सैकड़ा) नं : 2	150/	Learn How to Play Guitar Learn How to Play Violin	120/-
• साईं चालीसा	150/	Learn How to Play Casio	120/-
• हैण्डबुक ऑफ स्नैक्स फूड एण्ड		Learn How to Play Sitar	120/-
नमकीन इण्डस्ट्रीज़	300/	- Guitar Chords	120/-
• हैण्डबुक ऑन वेल्डिंग टैक्नोलॉजी	200/	- Learn How to Play Harmonium	120/-
• हैण्डबुक ऑफ कैण्डल एण्ड		• Learn How to Play Tabla	120/-
वैक्स इन्डस्ट्रीज	125/	- Learn How to Play Flute	120/-
• इलेक्ट्रिकल होम एप्लाइन्सेज़	150/	- Spanish Guitar	

डी०पी०बी० की उपयोगी पुस्तकें

लेखक प्रेम कुमार शर्मा की

'सबिह नचावत राम गोंसाई'

सनातन धर्म के प्रति द्वेष और कुटिलता से भरे प्रपंचकारियों के अनर्गल राम विरोधी प्रचार-प्रसार से क्षुब्ध शिवजी की आज्ञा से अमूल्य रोमांचक और विश्व के बौद्धिकवाद को स्तब्ध करने वाली यह पुस्तक विलक्षण और अद्भुत महाविज्ञान की सरल वैज्ञानिक प्रस्तुति है।

श्रीमद्भागवत रहस्य

(संत डोगरे जी महाराज)

इस ग्रन्थ के पठन-पाठन, श्रवण, मनन एवं चिन्तन से मनुष्य की अविद्यारूपी सभी भ्रान्तियों की समाप्ति के साथ ही उसे शीघ्र असीम शान्ति की भी प्राप्ति होती है। डोगरेजी ने इस ग्रन्थ को विविध दृष्टान्तों द्वारा अत्यन्त सरल, रोचक एवं शिक्षाप्रद बनाकर भक्तजनों का बहुत कल्याण किया है। श्रीराधा-कृष्ण भगवान् का ऐसा चित्रण किया है, मानो वे हमारे हृदय में निवास करते हैं। Rs. 280/-

धन्वनारिकृत जड़ी बूटियों की खेती

अति लाभदायक मशरूम की खेती, कृषि तकनीकें, जैविक खेती, उत्पाद पादकों का व्यापार, वित्तीय मार्गदर्शन, किसान क्रेडिट कार्ड एवं अन्य महत्त्वपूर्ण जानकारियों का सम्पूर्ण संकलन।

प्राचीन सामुद्रिक शास्त्र (दो भागों में)

शरीर लक्षण एवं आकृति विज्ञान, हस्तक्षेप विज्ञान, जिसमें आठ सौ चित्रों द्वारा एक-एक रेखाओं एवं रेखाओं से बने योगों को समझाया गया है। सामुद्रिक विज्ञान की इन दोनों शाखाओं के समस्त विवरणों से युक्त एक सम्पूर्ण ग्रन्थ, जिसमें हाथ एवं शरीर के निर्माण हस्तरेखाओं की उत्पत्ति के रहस्यों को भी अनुपम तरीकों से बताया गया है। इस ग्रन्थ को पढ़ने के बाद अन्य पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

भृगु संहिता फलित प्रकाश

एक सम्पूर्ण भृगु संहिता, जिसमें फलगणना के सभी सूक्ष्म तकनीकियों सिद्धान्तों के साथ-साथ विशिष्ट योगों, सारणियों, मुहूर्तों, विवाह विचार, ग्रहों की शान्ति, रत्न ज्योतिष आदि से सम्मिलित एक अद्वितीय संस्करण, जो हर प्रकार से पूर्ण है।

वृहद् हस्तरेखा शास्त्र

पांच सौ से अधिक चित्रों से सुसज्जित एक-एक रेखा, उनके योगों का विस्तृत फल बताने वाला एक ऐसा ग्रन्थ, जिसमें भविष्य कथन से सम्बन्धित एक-एक तथ्य स्पष्ट किया गया है। हस्तरेखा तर्कसंगत बौद्धिक वर्णनों से युक्त अमूल्य ग्रन्थ के रूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत है।

श्रीमद् भगवद् गीता

तीन संस्करणों में उपलब्ध है—

1. श्रीमद् भगवद् गीता (डीलक्स) . 120/-

2. श्रीमद् भगवद् गीता (साधारण)

40/-2) 15/-

3. श्रीमद् भगवद् गीता (संस्कृत हिन्दी पॉकेट)

डाक द्वारा पुस्तकें घर बैठे वी.पी.पी. द्वारा हमसे मंगायें या पधारें

डी.पी.बी. पब्लिकशन्म

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6

फोन: (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

The state of the s

॥श्री हरि॥

मशहूर

बापू गांधी राष्ट्रीय जन्त्री

भविष्यकर्त्ता एवं गणितकर्ताः

प्रवीन कुमार जैन

पंचांग

सन् 2010 ई० में एकादशी, प्रदोष संक्रान्ति, अमावस्या, दशावतार, जयन्तियां अन्य का वर्णन, सन् 2010 के प्रमुख त्यौहार एवं पर्व, सन् 2010 ई० के शुभ-विवाह मुहूर्त, हरिद्वार में कुम्भ महापर्व, ग्रहण सन 2010 ई., सन् 2010 ई. के प्रमुख मेले, दीपावली (श्रीमहालक्ष्मी पूजन), जन्त्री देखने की विधि. जनवरी-दिसम्बर 2010 का पंचांग व मासिक भविष्य फल, दिन व रात के चौघड़ियां मुहुर्त, कैसा रहेगा कमोडिटी मार्केट वर्ष 2010, वोलेटाईल रहेगा शेयर बाजार 2010 में, क्या वर्ष 2010-2011 में ग्रहण नहीं होंगे, मलमास, अधिमास अर्थात् पुरुषोत्तम मास, यन्त्र मन्त्र रत्त द्वारा नवग्रह पीड़ा निवारण, गड़ा धन जानने की क्रिया, तेजी मन्दी जानना, स्वर-विज्ञान द्वारा शुभाशुभ का विचार, रमल प्रश्नावली, ज्योतिष स्वयं सीखिये, कोजागर (कोजागर्ति) लक्ष्मी साधना, वास्तुदोष व ज्योतिष, कष्टनिवारक चमत्कारी उपाय, रुद्राक्ष द्वारा रोग निवारण, रत्न पहनिये भाग्य बदलिये, विवाह शीघ्र कैसे हो?, दाम्पत्य सुख प्राप्ति हेतु उपाय, सन्तान सुख शीघ्र प्राप्त करें (उपाय), विद्या प्राप्ति व परीक्षा में सफल होने के अचूक उपाय, लाल किताब के टोटके व उपाय, नजरदोष, नवग्रह शान्ति व धन-प्राप्ति, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र के सफल प्रयोग, महालक्ष्मी का सर्वाधिक प्रिय श्री श्रीयन्त्र, बन्धी हुई दुकान खोलने हेतु उपाय व शत्रुनाशक प्रयोग, व्यापार बाधा निवारक सरल तान्त्रिक प्रयोग, सुन्दर एवं धनवान् पति-प्राप्ति हेतु प्रयोग, पितृदोष निवारक प्रयोग (तान्त्रिक), दक्षिणावर्ती शंख प्रयोग, सरल वशीकरण तान्त्रिक क्रिया, मनपसन्द पति प्राप्ति हेतु प्रयोग, मनपसन्द पती प्राप्ति हेतु प्रयोग, सन्तान प्राप्ति हेतु प्रयोग, सुन्दरी वशीकरण प्रयोग, कामिनी वशीकरण प्रयोग, वशीकरण प्रयोग, चित्र द्वारा वशीकरण प्रयोग, सर्वरोग निवारण प्रयोग, रोग नाश के लिए सिद्ध प्रयोग, रोग विनाशक अनुष्ठान, सर्वरोग निवारणार्थं प्रयोग, असाध्य रोगनाशक प्रयोग, हृद्यरोग का रामबाण इलाज, ललिता मां का मन्त्र जाप, कालिदास कृत महिषासुरमर्दिनि स्तोत्र, चमत्कारी लक्ष्मी प्रयोग विधि, मुद्रा विज्ञान व चिकित्सा के प्रयोग, शीघ्र विवाह कैसे हो?, तान्त्रिक वनस्पतियां, श्रीरामशलाका प्रश्नावली, श्रीकृष्ण शलाका प्रश्नावली, प्रश्न आपके उत्तर पण्डितजी के इच्छित सन्तान जानने हेतु दुर्लभ चीनी तालिका, यन्त्रों द्वारा कामनासिद्धि, खोई वस्तु कहां मिलेगी? Rs 55/-

डाक द्वारा पुस्तकें मंगवाने के लिए अपना नाम, पता व पिनकोड इस मोबाइल पर SMS कीजिये—09811648916

डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916

E-mail: dpbpublications@yahoo.in

पुष्पवेद

तन्त्र जगत् में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाला दिव्य ग्रन्थ 'अलख' विरचित

लंकापति रावणकृत

तन्त्रात्मक रावण संहिता

वाममार्गी तन्त्र के सभी अंगों के गोपनीय रहस्यों, साधनाओं, सिद्धियों, तन्त्राचारों, दिव्य योगों पर गहरायी से सर्वांग प्रकाश डालने वाला, सभी तन्त्राचारों एवं दुर्लभ विद्याओं के विस्मयकारी असंख्य रहस्यों को प्रकट करने वाला, देवताओं, ऋषियों, तपस्वियों, महान् साधकों के लिए भी दुर्लभ महाविद्याओं की सिद्धि दिलाने वाला विश्व का प्रथम

तन्त्र वरदान

विशिष्ट आकर्षण

यह तन्त्र ग्रन्थ विश्वप्रसिद्ध तन्त्र साधक गुरुवर प्रेम कुमार शर्मा (स्वामी प्रेमानन्द अलख) की व्याख्याओं से युक्त है; जिन्होंने श्लोकों के वास्तविक गोपनीय तन्त्र शास्त्र को सरल ढंग से समझाया है। इस ग्रन्थ में उन्होंने तन्त्र विद्या के वे समस्त रहस्य खोल दिये हैं, जिनका ज्ञान स्वयं शिव के अतिरिक्त इस विश्व-ब्रह्माण्ड में किसी को ज्ञात नहीं। देवता, ऋषि एवं अवतारों के लिए भी दुर्लभ महाज्ञान का यह सागर गुरुवर के ज्ञान से अमृत बन गया है। गुरुदेव का कथन है—''जो इसमें गोता लगायेगा, इसे पढ़ेगा व उपयोग करेगा, वह

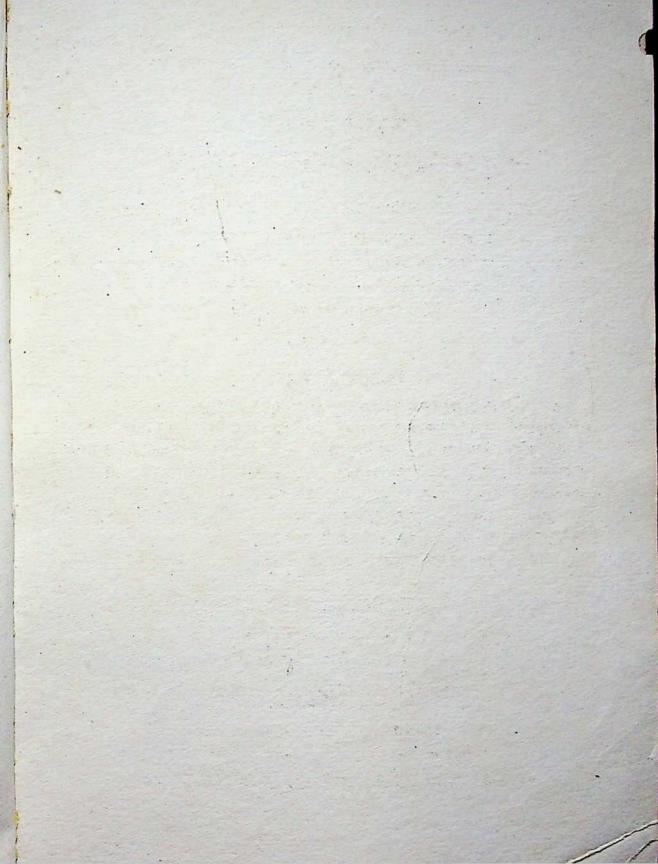
साक्षात् शिव हो जायेगा, सभी सिद्धियां उसकी दासी होंगी।"

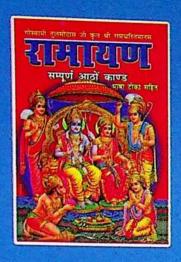
प्रत्येक स्त्री-पुरुष और परिवार के लिए अमृत कलश व सभी पुस्तकालयों में संग्रहणीय योग्य।

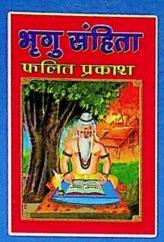
साइज—17×27×4, पृष्ठ—2000, दो सुन्दर जिल्दों में, मूल्य 3000/- रुपये सैट वीपीपी द्वारा 1000/- रुपये पेशगी मनीआर्डर या ड्राफ्ट द्वारा भेजें व ग्रन्थ मंगाये या हमारे शोरूम पर पधारें

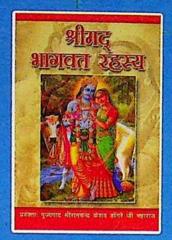
डी.पी.बी. पब्लिकेशन्स

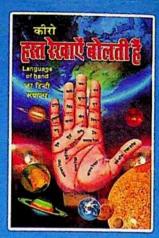
110 चौक बड़शाहबुल्ला, चावड़ी बाजार, पो. बॉ. 2037, दिल्ली-6 फोन : (ऑफिस) 23251630, (दुकान) 23273220, (निवास) 23847320, (मो.) 9811648916 E-mail : dpbpublications@yahoo.in

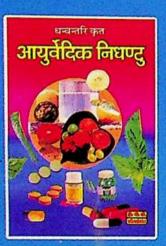


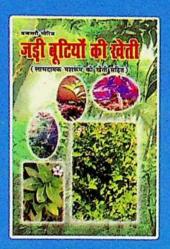








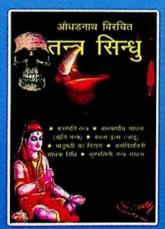


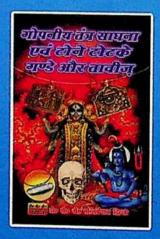


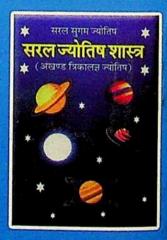












सभी प्रकार की धार्मिक, इण्डस्ट्रियल, टैक्नीकल, ज्योतिष एवम् ग्रंथ आदि की पुस्तके प्राप्त करने का एकमात्र स्थान

डी० पी० बी० पब्लिकेशंस

110 चौक वडशाहबुल्ला, पो० बॉक्स 2037, चावडी बाजार, दिल्ली-110006 फोन : 23273220, 23251630